परलोक-सर्वस्व

अनुवादक—
केदारनाथ शर्मा

'परलोक-सर्वस्व'
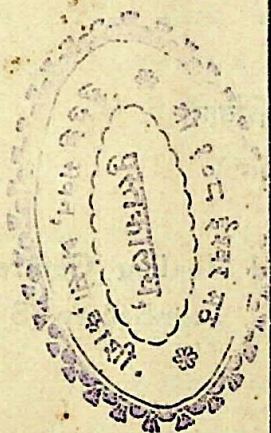
अनुवादक--

पं० केदारनाथ शर्मा

सम्पादक 'परलोक'

मूल्य ३)

नाम देकर जनता के सामने उपस्थित किया है। यह कार्य उन्होंने जनता-जनार्दन के प्रेम के कारण और परलोक-वाद के उच्च-उद्देश्यों के प्रचार के लिये किया है। जब जून १६४५ में (स्पिरिच्यूल हीलिंग सैन्टर के मंत्री ने) इस पुस्तक के अनुवाद के लिये उनसे अनुरोध किया तो उन्होंने इसे तत्काल ही स्वीकार कर लिया। उनका हिन्दी मासिक पत्र "परलोक" १४वें वर्ष में पहुँच चुका है। इस के द्वारा उन्होंने परलोक-ज्ञान के प्रसार में सराहनीय सेवाएं की हैं हम उनकी इन सेवाओं के लिये जो उन्होंने भारतीय जनता में इस पवित्र कार्य के प्रचार के निमित्त की हैं, हृदय से आभारी हैं।

पुस्तक मार्च १६४६ में ही छप चुकी होती, किन्तु काग़ज़ के अभाव, कन्ट्रोल की कठिनाइयों, तथा अन्य रुकावटों के कारण पुस्तक अभी तक प्रकाशित न हो सकी। इस के सम्बन्ध में जो सुझाव भेजे जावेंगे वह धन्यवाद पूर्वक मान्य किये जायेंगे।

निवेदक—

मंत्री-सि०ही०सैन्टर कोयम्बतूर

५-६-१६४७

(Secretary Spiritual Healing Centre, Coimbatore)

COIMBATORE

॥ श्री गणेशायनमः ॥

परलोक सर्वस्व
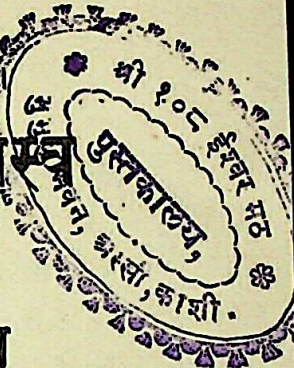
प्रथमाध्याय

परलोक वाद क्या है ? नाज़ीवाद, फासिस्टवाद, समाज-वाद, नास्तिकवाद, साम्यवाद और अनेक ऐसे ही दूसरे वादों ने ऐसी बेकदरी का वातावरण पैदा किया हुआ है, कि यदि 'परलोक-वाद' को भी उसका शिकार होना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिये। मुझे याद है कि कुछ मास हुए एक विद्वान् पादरी साहब ने परलोक वाद के विरुद्ध व्याख्यान दिया। उन्होंने इसका आमूल खंडन कर डाला और उनसे इससे अच्छा व्यवहार करने की आशा भी नहीं थी क्योंकि वह आरम्भ से ही ईसाई धर्म के तंग अवैज्ञानिक दायरे में पले थे। जहाँ स्वतन्त्र विचार और कर्म को स्थान ही नहीं है। किन्तु उन्होंने यह कहकर तो कमाल ही कर दिया कि परलोक-वाद में अन्जील को, सद्व्यवहार को और परमात्मा को कोई स्थान नहीं दिया गया।

लन्दन की तत्त्व अनुसन्धानात्मक सोसाइटी (London Dialectical Society) की स्थापना १८६९ में परलोकवाद के चमत्कारों की जांच के लिये हुई थी। इसमें सर विलियमक्रुक्स (Sir William Crookes) जैसे उच्च कोटि के वैज्ञानिक सदस्य थे जिन्होंने रेडियो मीटर का आविष्कार किया था, और

ऐसे ही अन्य सदस्य भी थे। इस सोसाइटी ने परलोकवाद के पक्ष में रिपोर्ट प्रकाशित की, किन्तु ब्रिटिश प्रेस ने इसका आवेश पूर्ण प्रतिकार किया। 'टाइमज" (Times) पत्र ने इस रिपोर्ट को कमज़ोर फैसलों का संग्रह बताया। पालमाल गजट Palmall Gazatte) ने इसे प्राकृतिक जादू की पुस्तक का एक अध्याय कह कर समालोचना की। "कन्ज़र्वेटिव स्टैन्डर्ड" ने कहा कि इसमें फरेब और कमज़ोर विश्वास के सिवाय कुछ नहीं है। 'मार्निंग-स्टैन्डर्ड' ने कहा कि यह आत्म वञ्चना के सिवाय कुछ नहीं है। एक पत्र ने तो यहाँ तक लिख डाला कि "प्रधान २ परलोक वादियों को कुछ सप्ताह के लिये वन्द कर देना चाहिये। यह लोग बड़े वेहूदे और उपद्रवी हैं।"

जो लोग अपने को ईसामसीह का अनुयायी बतलाते हैं उनका उन वैज्ञानिकों के प्रति क्या व्यवहार रहा है जिनकी खोज और ईजाद ने मनुष्यों में ज्ञान और सत्य का प्रसार किया है यह एक विचारणीय विषय है। हम जानते हैं कि जब 'कोपरनिकस' (Copernicus) ने १५४३ में अपनी खोजों को प्रकाशित किया तो पादरियों ने उसका विरोध किया और उसे बुरा भला कहा। 'केपलर' (Caplar) गलेलियो (Galileo) और ब्रुनो (Bruno) की भी यही दशा हुई। ब्रुनो (Bruno) पर किये गये अत्याचार की कहानी कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। वह अन्धेरी कोठरी जहाँ ७ वर्ष तक उसे कैद रखा गया और कष्ट दिये गये और अन्त में क़त्ल कर दिया गया अब तीर्थ स्थान बन गई है। यहाँ प्रतिवर्ष हजारों यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

सच्चाई इतनी मायावी है कि मनुष्य इसको ढूंढ़ने के प्रयत्नों में प्रायः ठोकर खा जाता है। किन्तु मज़हब ने (हमारा आशय कट्टर ईसाइयों से है) उन्होंने सत्य की खोज का विरोध भूतकाल में इतनी भयंकरता से किया है जिसका रिकार्ड प्रशंसा योग्य नहीं है।

परलोक वाद क्या है ?

इसकी तारीफ़ (लक्षण) ठीक ठीक करना हमारी लगाई हदबन्दियों के कारण बड़ा कठिन है। किन्तु हम ऐसा करने का प्रयत्न करेंगे और उसके उपयोगी दृष्टिकोणों को पेश करेंगे। परलोक वाद सच्चाई का विज्ञान है। रेडियम की खोज ने यह बतला दिया कि हमारी पृथ्वी पर ८० करोड़ वर्ष पूर्व भी इतनी ठण्ड थी कि इस पर जीव रह सकते थे। हमें इस दूर अतीत का ज्ञान कोई नहीं है। ऐतिहासिक युग से आगे की सभ्यता और जातियों का हमें कोई भी पता नहीं है। किन्तु मनुष्य चूंकि दो शरीरों का बना है। स्थूल और सूक्ष्म, परमात्मा ने अपना श्वास अन्धकारमय कहलाने वाले युग में (जिसका इतिहास कुछ पता नहीं देता) मनुष्य शरीर के छिद्रों में फूंका और परमात्मा के रूप में बनाये गये इस मनुष्य ने उच्च जीवन और ज्ञान प्राप्ति के लिये अवश्य प्रयत्न किया होगा। हमें उन धर्मों का पता नहीं जो इतिहास काल से पूर्व पैदा हुये और समाप्त होगये। किन्तु इस वस्तु स्थिति से आंखें बन्द नहीं की जा सकतीं कि मूर्ख से मूर्ख और जंगली से जंगली मनुष्य में दैवी ज्योति

की चमक है जो उसे अपनी आत्मा की उत्तरोत्तर उन्नति के लिये आन्तरिक प्रेरणा करती रहती है।

युक्ति का विकास प्रायः इस आन्तरिक प्रेरणा और धर्म विश्वास को दबा देता है क्योंकि धर्म की भित्ति विश्वास पर है, और जब भौतिक विज्ञान की उन्नति हुई तो धर्म और विज्ञान में संघर्ष एक साधारण बात हो गई।

परलोक वादियों ने जो सबसे बड़ी सेवा की वह यह थी कि उन्होंने परमात्मा की इच्छा और परमात्मा के अस्तित्व का प्रकाश ऐसी युक्ति से मनुष्यों के सामने किया कि विज्ञान और धर्म का मेल खा गया है। अब धर्म और विज्ञान के बीच में कोई खाई नहीं रही। विज्ञान के कारण दुनिया का झुकाव प्रकृतिवाद की ओर से रुक गया है। परमाणुओं और अणुओं की खोज ने यह प्रमाणित कर दिया है कि प्रकृति शक्ति रूपा है और हमें इस सच्चाई से कि संसार ईथर (Ether) से व्याप्त है और वह प्रकम्पों पर अवलम्बित है पारलौकिक सत्य के अधिक निकट पहुँचा दिया है।

परलोक-वाद का विषय या और अच्छे शब्दों में "परलोक शास्त्र" इतना विस्तृत और अपार है कि मनुष्य के परिमित दिमाग़ के लिये उसका पूर्ण रूप से उसे समझना बड़ा कठिन है जैसा कि सर विलियम कूपर ने अपनी पुस्तक "जहां दो संसार मिलते हैं" में कहा है। परलोक शास्त्र अनादि है—मैं था—मैं हूं और मैं रहूँगा यह परमात्मा से सम्बन्ध रखता है—यह परमात्मा ही है। वह सब धर्मों से पहिले है और सब में

व्यापक है। इस संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं हुवा है और न होगा जिसके घटिया धार्मिक भावों को परलोक शास्त्र ने अनादि सच्चाई के शुद्ध स्वरों में परिवर्तित न कर दिया हो। परलोक शास्त्र सच्चाई को सब रूपों में अंगीकार करता है। सच्चाई को स्वीकार करने से प्रेम प्रकट होता है और प्रेम परमात्मा है और परमात्मा प्रेम है। परलोक-शास्त्र, अथवा परलोक-वाद परमात्मा की सत्यता है जिससे अधिक पवित्र और निश्चित आधार हो ही नहीं सकता जिस पर दृश्य जगत की स्थिति है। परलोक-वाद ३ वस्तुओं का मिश्रण है। यह विज्ञान, धर्म और शास्त्र का बड़ा सुखद सम्मिलन है। इसके विचारों की उदारता और विस्तार को देखो। परलोक-वाद परिमित और अपरिमित के बीच की कड़ी है। यह भ्रातृ प्रेम की शिक्षा देता है। यह इहलौकिक और पारलौकिक जगत के बीच में पुल बांधता है। यह परमात्मा के पितृ भाव और प्रकृति के मानभाव की शिक्षा देता है। प्रकृति से मूर्तिमान परमात्मा की ओर ले जाता है और जो सृष्टि का कर्ता तथा नियम है—यही परलोक-वाद की शिक्षा है। यह अपरिमित लोकों का सितारों में जड़े हुये लोकों का जो अनन्तकाल से अनन्त आकाश में निरन्तर घूम रहे हैं, वर्णन करता है। यह उस परमात्मा का वर्णन करता है जो इस सृष्टि से बहुत अधिक श्रेष्ठ है। परमात्मा और उसकी सृष्टि को जानने के लिये प्रार्थना अत्यन्त प्रभावशाली साधन है। वह ईर्ष्यालु परमात्मा नहीं है जो हमारी प्रार्थनाओं से शांत हो जाता हो। प्रार्थना तो हमारी आत्मा के विकास में परम सहायक है।

परलोक-वाद कोई मत नहीं है, किन्हीं सिद्धान्तों का अन्धा अनुकरण करना नहीं है। विशेष सिद्धान्त, कोई विशेषमत, कोई धार्मिक आज्ञा यह मन और शरीर की पूर्ण पवित्रता, विनय, सत्यता, परमात्मा की उसके बनाये जीवों द्वारा सेवा करने की उत्कट इच्छा, निःस्वार्थता-यही इसके प्रबल अस्त्र हैं। यह जीव और प्रकृति के बीच की खाई पर पुल बांधने का यत्न करता है। यह ऊँचाइयों पर चढ़ जाता है और अनन्त विश्व की थाह लेता है। यह मनुष्य के अन्दर की आत्मा को विश्व की व्यापक आत्मा से जोड़ देता है। माध्यम आत्मा को जोड़ने की कड़ियां हैं। किन्तु वास्तविक परलोक-वाद साधारण प्रयोग कुटियों से अलग वस्तु है।

धर्म की भित्ति विश्वास है किन्तु परलोक-वाद कारोबारी दुनिया से जोरदार अपील करता है। क्योंकि पारलौकिक घटनाएँ सख्त से सख्त परीक्षा के बावजूद निस्सन्देह रीति से मनुष्य के मरणोत्तर जीवन का प्रमाण देती हैं। वर्षों के लम्बे उपदेश के बावजूद भी धर्म ने मनुष्य को पाप और खराबी के मार्ग से हटाकर शुद्धता के मार्ग पर नहीं लगाया। मनुष्य को जो सन्देश परलोक से मिले हैं वह प्रकट करते हैं कि एक ही नियम सब विश्व पर लागू है और वह यह कि "जैसा बोवोगे वैसा काटोगे"। यह परलोक में अनेक लोकों के होने से सिद्ध होता है। जहां पर मनुष्य को इस लोक के कर्मों के अनुसार दण्ड दिया जाता है या पारितोषिक मिलता है।

विज्ञान का काम है कि:—

(क) ज्ञान को यथाक्रम व्यवस्थित करना ।

(ख) सच्चाई का पता लगाना ।

(ग) ज्ञान या सच्चाई का उसी की खातिर अध्ययन करना ।

(घ) ज्ञान के विभाग नियत करना ।

परलोक-वाद विज्ञान कहलाने का बहुत अधिक अधिकारी है। क्यों कि वह उपरोक्त शर्तों को पूरा करता है। यह केवल जीवन मरण के रहस्य का उद्घाटन ही नहीं करता, प्रत्युत यह जीवन शास्त्र भी उपस्थित करता है जिससे जिज्ञासु मनुष्य को पूर्ण सन्तोष हो जाता है। इस संसार में असमानता और कष्ट हमारे पूर्व कर्मों का ऋण हैं जो मनुष्य को निर्वाण प्राप्ति के लिये जन्म जन्मान्तरों में अदा करने पड़ते हैं। यह सब सच्चाइयों का विज्ञान है। इसने विज्ञान और धर्म को विरोधी न रखकर उनका एकदम वास्तविक मेल करा दिया है। यह सब धर्मों का समर्थन करता है किन्तु यह विश्व की और परमात्मा का ज्ञान प्रत्यक्ष और युक्तियुक्त रीति से कराता है।

डा० पी. बल्स की आत्मा का निम्न सन्देश हमें परलोक-वाद की सम्पूर्ण शिक्षा को बड़ी उत्तमता से एक कूजे में बन्द करके देता है:—

"संसार एक विस्तृत बोलता हुवा प्राङ्गण है। परमात्मा सब विश्व में पृथ्वी से तारों तक व्यापक है। प्रत्येक परमाणु जीवन से प्रज्वलित है। वह आत्मायें जो ऊपर के लोकों में

काम कर रही हैं वह इस संसार के थके माँदे पथिकों तक प्रेम, सत्यता, और बुद्धिमत्ता के सन्देश पहुँचाती हैं। प्रेम विश्व-व्यापक नियम है"।

द्वितीय-अध्याय

परलोक-प्राचीन इतिहास पर एक दृष्टि।

यह कहना यथार्थ नहीं है कि 'परलोक-वाद' का जन्म १८४८ में अमेरिका में हुआ। इसका यह अर्थ नहीं कि फॉक्स बहिनों से पहिले परलोक-वाद संसार को विदित ही नहीं था। प्राचीन दार्शनिकों और पैगम्बरों की जीवनियों और शिक्षाओं में हमें परलोक-वाद के अस्तित्व का पर्याप्त प्रमाण मिलता है। वास्तव में परलोक-वाद बहुत उन्नति कर गया होता यदि अनेक धर्मों और गिरजों ने इसका सङ्गठित विरोध न किया होता।

मत, सिद्धान्त, और रूढ़ियों पर धर्म की वास्तविक शिक्षाओं की अपेक्षा अधिक बल दिया गया है। पादरियों ने मूक जनता की परवाह न करते हुये उनकी भावनाओं को पददलित कर दिया क्योंकि शिक्षा की कमी के कारण वह उनके उपदेशों का विरोध नहीं कर सकती थी। परलोक-वाद की प्रथम चिंगारियों को दबाने के लिये कितनी हानि पहुँचाई गई यह उस ढङ्ग से ही पता चल जाता है कि जिस ढङ्ग से माध्यमों से पादरी लोगों ने व्यवहार किया, वह ढूंढ ढूंढ कर चौराहों में जादूगर कहकर

जलाये गये जोन आफ़ आर्क (Joan of Are) सच पूछो तो एक माध्यम थी। एक दुबली किसान की लड़की ने स्वप्न में देखा कि वह फ्रांस को शत्रु के हाथों से बचा सकती है। उसने अपनी सेवायें पेश कीं और वह स्वीकार की गईं। वह फ्रान्सीसी फ़ौजों की नेतृ बनाई गई और उसे अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। किन्तु अन्त में उस पर मुक़दमा चलाया गया और अंग्रेजी अदालत ने आज्ञा दी कि उसे जादूगरनी के अपराध में जलाकर समाप्त कर दिया जाय।

प्राचीनों की किताबें और शिक्षाएँ हमें इस सत्य का पर्याप्त प्रमाण देती हैं कि अदृश्य जगत का ज्ञान उन्हें था।

उस सुन्दर पुस्तक "परलोक-वादकी क्रमोन्नति" के लेखक हार्वे मेट काफ़ कहते हैं कि मैं इसे प्रमाणित ही समझता हूँ कि किसी न किसी प्रकार का परलोक वाद उस समय से चला आरहा है जब से मनुष्य जाति को आत्म ज्ञान हुवा। इतिहास का कोई भी छात्र इससे इन्कार नहीं करेगा कि इसका प्रभाव चालडिया, फ़ीनिशिया, मिश्र, हैब्रू, ग्रीक, और रोमन इतिहास पर पड़ा है जिनमें इस शिक्षा का संकेत है कि मनुष्य एक ही वार जीवित होता है और वह भी सदा के लिये। जीवन का उद्देश्य अपने आन्तरिक दैवी भावों का विकास करना है फ़ैटिश (Fetish) धर्म में भी जो निकृष्टतम मानव धर्म है, दृश्य और अदृश्य का सम्बन्ध कमोवेश माना जाता था। ब्राह्मण धर्म में विश्वास किया जाता है कि आत्माएं मनुष्यों के कामों में प्रायः हस्तक्षेप करती

हैं। लामा धर्म मानता है कि बड़े लामा में अदृश्य परमात्मा व्यक्तिगत रूप से बराबर रहता है। मुसलमानों के धर्म में माना है कि जन्म से मरण पर्यन्त दो आत्मायें प्रत्येक मनुष्य के साथ रहती हैं और मूर्तिपूजकों में भी मनुष्यों को पारलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने के लिये बल दिया गया है। पारसी धर्म के प्रवर्तक जोरास्टर ने इस सिद्धान्त का प्रचार किया कि भलाई और बुराई की दो आत्माएं और अनेक उदासीन आत्माएं मनुष्य के मार्ग को उन्नत बनाने या बाधा डालने के लिये रहती हैं। योरोप के अनेक विद्वान्, होमर, हैसोड, पिंडार, अलैगजैंडर, सीजर, वर्जिल, टैसिटस, सिसरो, सैनिकाप्लीनी, प्लूटार्क आदि वर्तमान परलोक-वाद के सन्देश वाहक हुवे हैं। उनके ग्रन्थों में अनके समय की पारलौकिक घटनाओं के सम्बन्ध के संकेत हैं। हम अब भूतकाल पर एक साधारण दृष्टि डालते हैं। भारतवर्ष प्राचीन काल में संसार भर के धार्मिक विचारों का केन्द्र था। वह आत्मा के सम्मिलिन की विद्या से अभिज्ञ था। वेदों में अनेक आत्माओं का वर्णन है जो इस संसार में मनुष्यों के कार्यों की निगरानी करती हैं और परमात्मा ही एक वास्तविक सचाई है। किसी भी अन्य देश में गुप्त विद्याओं का अध्ययन ऐसी निस्स्वार्थता पूर्वक नहीं किया गया। भारत के ऋषि संसार के लिये अभिमान की वस्तु हैं। भगवद्-गीता इलहामी पुस्तक है जिसमें गुप्त घटनाओं के अनेक उल्लेख हैं।

भारत में महात्माओं के जीवनों से पता चलता है कि उन्हें

अलौकिक शक्तियां प्राप्त थीं।

श्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य मूर्तिमान ज्ञान थे। १६ वर्ष की अवस्था में उन्होंने सब दर्शन शास्त्र और धर्म शास्त्र पढ़ लिये थे, और गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रों पर अपनी टिप्पणी लिख चुके थे। वह एक बड़े योगी, ज्ञानी और भक्त थे। एक बार उन्हें एक बड़े विद्वान् की धर्मपत्नी ने अपने पति की पराजय के बाद "काम शास्त्र" की विद्या में शास्त्रार्थ करने को ललकारा। श्री शङ्कराचार्य महाराज ने तय्यारी के लिये एक मास की अवधि मांगी। कहते हैं कि वह अपने शिष्यों सहित एक जंगल में चले गये, उन्होंने अपने सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से पृथक् किया और अपने स्थूल शरीर को एक बड़े वृक्ष के खोखले भाग में छिपाकर अपने विश्वस्त शिष्यों के पास छोड़ दिया, वह तब एक राजा के शरीर में प्रवेश कर गये, जिसके शरीर को दाह करने की तय्यारी थी। यह बहुत चकित करने वाला कृत्य था। राजा के पुनर्जीवित हो जाने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री शङ्कराचार्य ने इस नये शरीर द्वारा स्वयं सब अनुभव प्राप्त किये जो वह प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने महल की रानियों से प्रेम किया। और माया का प्रभाव ऐसा प्रबल है कि वह अपने शिष्यों से की गई प्रतिज्ञा को भूल गये। वह उनको तलाश में महल में आये और शङ्कराचार्य महाराज जङ्गल को लौट गये, ठीक ऐसे समय में जबकि उनका असली शरीर राख होने से बचाया जा सका, क्योंकि वह अग्नि ज्वाला से घिर

गया था। उन्होंने भक्ति भाव से पूर्ण होकर प्रभु से प्रार्थना की। वर्षा एक दम आई। अग्नि ज्वाला शान्त हुई, और वह फिर अपने पुराने शरीर मन्दिर में प्रवेश कर गये।

लार्ड गौरांग की बाबत कहा जाता है कि ईसामसीह की तरह उनमें भी रोगियों को निरोग करने की शक्ति थी। वसुदेव एक गरीब ब्राह्मण था जो बड़ा सुशील और पवित्रात्मा था। उसे कोढ़ की बीमारी थी। वह "कर्म मन्दिर" में गुरुदेव के दर्शनों को गया जहाँ उनके आने की आशा की जा रही थी। किन्तु वह देर से पहुँचा और निराशा में पुकार उठा "ओह भगवान् कृष्ण! क्या आपने मुझे त्याग दिया है?" कहते हैं गौरांग महाप्रभु पास से गुजर रहे थे उसकी करुणापूर्ण वाणी सुन कर उस कोढ़ी को छाती से लगा लिया और उसका कोढ़ दूर हो गया।

श्री रामदासजी एक बड़े महात्मा थे जो महाराज शिवाजी के समय में हुवे हैं। वह शिवाजी महाराज के गुरु थे, और शिवाजी महाराज उनका बड़ा सम्मान करते थे, वह अपने गुरु की चरण-पादुका सिंहासन पर रक्खा करते थे, यह इस बात का निशान था कि वास्तव में उनके गुरु ही राज्य करते हैं, वह उनके एक कारकुन हैं। अपने पुत्र के चिर-वियोग के कारण श्री रामदासजी की माता की आंखों की ज्योति जा चुकी थी जब श्री रामदासजी कई वर्ष की अनुपस्थिति के बाद मिले तो उन्होंने माता की आँखों पर हाथ रक्खा और आँखों में ज्योति आ गई।

कबीर साहब की बाबत कहा जाता है कि जब १५१९ साल

के करीब परलोक सिधारे तो हिन्दू और मुसलमानों में उनकी देह के लिये झगड़ा हुवा। हिन्दू उन्हें फूंकना चाहते थे क्यों कि वह उन्हें हिन्दू मानते थे। मुसलमान उन्हें दबाना चाहते थे क्यों कि वह उन्हें मुसलमान मानते थे। जब वह परस्पर उनकी लाश के लिये झगड़ रहे थे, तो कबीर साहिब का सूक्ष्म शरीर प्रकट हुवा और उन्होंने कहा कि "मैं न तो हिन्दू था न मुसलमान, मैं दोनों था और कुछ भी नहीं था और सब कुछ था। मैंने दोनों में परमात्मा को पाया। कोई हिन्दू है न मुसलमान। जिसका माया का पर्दा हट गया है, उसके लिये हिन्दू मुसलमान एक ही हैं मेरा कफ़न उठावो और चमत्कार देखो"। जैसे ही कफ़न उठाया गया लोगों ने फूलों का एक ढेर देखा। आधा हिन्दू ले गये और उन्होंने उन्हें जला डाला और उसकी भस्म पर एक समाधि बना दी। और आधे फूल मुसलमान ले गये जिन्होंने उन्हें दबा दिया और उनके ऊपर एक मस्जिद बना दी। कबीर साहिब का उपदेश था कि जैसे-वृक्ष बीज में है। और बीज वृक्ष में है। इसी प्रकार संसार ब्रह्म में है।

भगवान् बुद्ध के नाम से भी कई चमत्कार प्रसिद्ध हैं जब उनका अन्त समय आया, तो उन्होंने अपने शिष्य आनन्द से कहा "आनन्द! जावो दो साल के जुड़े हुवे वृक्षों के बीच में मेरे लिये बिस्तर तय्यार करो, सिर उत्तर को रखना, मैं बिल्कुल थक गया हूँ, आनन्द! मैं विश्राम करूंगा।" वहां जाकर वह लेटे और परलोक सिधार गये। कहते हैं जो वृक्ष उनके

ऊपर थे उनमें फूल आगये और बड़ी मधुर सुगन्ध युक्त फूल वृक्षों पर से और आकाश से उनके शरीर पर उनकी उच्चात्मा के सन्मान के लिये गिरे।

जब हम मिश्र की ओर आते हैं तो हमें बताया जाता है कि उसके कुछ मन्दिर खास करके एलेगजैंडरिया (Alexandaria) के मन्दिर में रोगियों को अच्छे करने की शक्ति थी। कहा जाता है कि थीबस के एक बड़े शासक मेमनन (Memnon) के बुत से बहुत वर्ष से मीठा राग निकलता रहता है। चीन में लाऊजे (Lao-tsze) और कनफ्यूसियस की शिक्षाओं से यह प्रमाणित होता है कि यह दोनों बड़े दार्शनिक ऊंचे दर्जे के परलोक-वादी थे। लाऊजे परमात्मा के पैगम्बर (सन्देश-वाहक) कहलाते थे।

वह ऊपर के लोकों में जाया करते थे, वहां फ़रिश्तों के साथ रहते थे—और वापिस आकर अपने देश वासियों को दैवी सत्य का उपदेश देते थे—कनफ्यूसियस ने अपने देश वासियों को जीवन व्यवहार सिखाया और मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति बतलाया है। चीन के दो बड़े महात्माओं का पारलौकिक उपदेश नीचे दिया जाता है:—

मनुष्यों की मन्द दृष्टि से अदृश्य, अच्छी और बुरी आत्माएं अवश्य पृथ्वी पर आती हैं और मनुष्यों की उन्नति को रोकती हैं या उसमें सहायक होती हैं। दृश्य और अदृश्य जगत् इह-लोक और परलोक को मिलाकर एक कुटुम्ब बनता है। आत्माएँ शरीर

धारण करती हैं। मृतकों की आत्माएँ एक राज्य बनाती हैं जिस पर 'शांगटी' (Sobang-ti) की बुद्धि से शासन होता है। जो आत्माऐं हमेशा मनुष्य के पास रहती हैं वह उसके कर्मों का निरीक्षण करती रहती हैं। यदि हम बुराई को स्थान देते हैं तो बुरी आत्माऐं अन्दर प्रवेश कर जाती हैं और हमारी आत्माओं के तमोगुण से एक जातीय होने के कारण मज़बूत हो जाती हैं। यदि हम प्रलोभन से घृणा करके इन शैतानों को अपने पास से भगा देते हैं तो दैवी आत्माएं प्रायः आती हैं और हमारे हृदय में ज्योति उत्पन्न करती हैं जो उत्तरोत्तर प्रदीप्त होकर पूर्ण दिनकर सा प्रकाश पैदा करती है। हमारे वर्तमान पारलौकिक अनुभवों के प्रकाश में कितना सत्य है।

ईरान वह देश है जहाँ ज़ोरास्टर (Zoroaster) ने ३-४ हज़ार वर्ष हुवे धर्म का प्रचार किया। ईसामसीह की तरह वह भी अद्भुत चमत्कार दिखाते थे ऐसा कहा जाता है। किम्वदन्ती है कि उन्हें अग्नि में फेंका गया। किन्तु भड़कती हुई ज्वाला ने उनको नहीं जलाया। वह शान्ति पूर्वक बिना डर और हानि के सोये रहे यह अवश्य सच है क्योंकि यह आज कल के माध्यम द्वारा अग्नि में से बिना हानि के चलने की घटना की पुष्टि करता है। प्राचीनों में जोरास्टर ने पहिले पहल यह प्रचार किया कि हुरमुज़्द सब विश्व का सर्वोत्तम मालिक है और मैं प्रार्थना द्वारा और आत्माओं से वार्तालाप द्वारा उससे सन्देश प्राप्त करता हूँ। उसकी शिक्षाऐं पारलौकिक शास्त्र का प्रभाव मन पर छोड़ती हैं।

यनान देश जो अपने दार्शनिक विद्वानों के लिये प्रसिद्ध है। वहुत ऊँचे दर्जे के परलोक-वाद का केन्द्र था। यूनान के महात्मा ठीक २ भविष्य वाणियां करते थे। इसके विद्वान् कवि और दार्शनिकों का महत्व परलोक से प्राप्त आदेशों के कारण था। होमर का मशहूर गीत परलोक से प्राप्त प्रमाणिक सन्देश कहा जाता है।

सुक्रात ने पैगम्बरों की भाषा में यह शब्द कहे हैं। "आत्माऐं सब बातों को जानती हैं—जो कुछ कहा जाता है जो कुछ किया जाता है और जो कुछ विचारा जाता है। वह सब जगह मौजूद हैं, और लोगों को सब बातों से सावधान करती हैं।

अफ्लातून भी कहता है "परमात्मा का और मनुष्यों के बीच में आत्माऐं हैं जो साधारण रूप से हमें दिखाई नहीं देती हैं, तो भी वह हमारे सब विचारों को जानती हैं।"

ऊँचे आध्यात्मिक आदर्श और पारलौकिक तथ्य यूनान के बड़े २ विचारकों और कवियों के गीतों और भाषणों में मिलते हैं। "परलोक-वाद के विकास" के लेखक ने आध्यात्मिक उन्नति की यथार्थता की प्रशंसा निम्नलिखित ओजस्वी भाषा में की है:—

यदि नास्तिक व्यक्ति यूनानियों के आत्माओं के सम्मेलन के दावों को नहीं मानता तो वह उसकी दिमागी उत्थान से उसे वंचित करता है जो कि यूनान की संगतराशी का आधार है।

कामदेव और अध्यात्म के पीछे वास्तविक दर्शन आत्मा से प्रेम का सम्बन्ध। आत्मा का परमात्मा से विवाह हम संगमरमर

में देखते हैं. किन्तु यूनानी इसे आदर्शरूप से और वास्तविकरूप से देखते थे।

'एपीमीमाईडस' की बाबत कहा जाता है कि वह शरीर त्याग कर आत्माओं से वार्तालाप करता था। वह बहुत देर तक समाधि में रह सकता था।

हमें रोमन साहित्य में भी आत्माओं के साथ सम्मिलन का पता चलता है। यूनानियों ने वास्तव में इसका प्रचार रोमनों में किया। 'पोडालीरियस' एक बड़ा आध्यात्मिक चिकित्सक था। रोमन साधू. यूनानी महात्माओं की तरह आने वाली घटनाओं की भविष्य वाणी करते थे किन्तु आध्यात्मिक विज्ञान का दुरुपयोग किया गया। रोमनों ने अपने पूर्वजों की आत्माओं का युद्ध-क्षेत्र में विजय प्राप्ति के लिये आवाहन किया।

मुहम्मदसाहिब की जीवनी प्रसिद्ध है। हम जानते हैं कि उन्होंने जिस धर्म का प्रचार अरब में किया उसका आदेश उन्हें फ़रिश्ते 'जिबराईल' से प्राप्त हुवा था। एक दिन वह गहरी मूर्छा में चले गये। जब वह होश में आये तो कहते हैं कि उन्होंने एक फ़रिश्ते को देखा जो एक रेशमी कपड़ा थामे हुवे है और उस पर अक्षर लिखे हुये हैं—फरिश्ते ने कहा "पढ़ो" मुहम्मद साहिब ने कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। फ़रिश्ते ने फिर कहा "उस परमात्मा के नाम पर जो सब वस्तुओं में व्यापक है और जिसने मनुष्य को खून की बूंद से पैदा किया है 'पढ़ो' उस सर्वोत्तम भगवान के नाम से पढ़ो जिसने मनुष्य को कलम का

प्रयोग सिखाया, जो उसकी आत्मा पर ज्ञान की किरणें डालता है और उसे ज्ञातव्य विषय की शिक्षा देता है।" मुहम्मद साहब की शिक्षाओं में कोई नई बात नहीं है किन्तु ख़ास बात यह है कि उन्हें अन्य अवतारों की तरह ऊपर के फ़रिश्तों से प्रकाश मिला। हम धर्म का बहुत कम आदर करते हैं क्योंकि यह केवल विश्वास पर आश्रित है। किन्तु इस हमारी जड़-वाद की दुनिया में हमको विश्वास से कुछ अधिक भी चाहिये। जैसा कि सैंटपाल ने कहा था "विश्वास अकेला अच्छा है जब उसके साथ ज्ञान भी हो।" आधुनिक परलोक-वाद वैज्ञानिक ज्ञान पर टिका हुवा है वह परदे से परे परोक्ष संसार के काफ़ी प्रमाण देता है। आधुनिक परलोकवाद के इतिहास का वर्णन हम अगले अध्याय में करेंगे।

अध्याय–तीसरा

आधुनिक परलोक वाद की उन्नति:—

जब कोई प्रिय बन्धु परलोक सिधारता है तो हमें भयंकर स्तब्धता सी मालूम पड़ती है। हृदय में ऐसा शून्य मालूम पड़ता है कि किसी प्रकार भी वह दूर नहीं होता। कोई राग, कोई गीत, मित्रों का सहानुभूति पूर्ण निश्वास लेना, कोई युक्ति भी हमारी शिथिल इन्द्रियों को किसी प्रकार का आराम नहीं पहुँचाती, धर्म से हमें कुछ धैर्य नहीं मिलता। अधिक से अधिक वह एक टिमटिमाता हुवा लैम्प दिखलाता है कि उस संसार से परे

भी एक दुनिया है और हमें यह विश्वास करने को कहता है कि दूर भविष्य में कभी हमारा सम्मिलन होगा। किन्तु यह एक अनिश्चित आशा है, एक लड़खड़ाता विश्वास है क्यों कि जो कुछ वह कहता है उसका प्रमाण नहीं दे सकता। कितने ही व्यक्तियों ने इसीलिये धर्म को त्याग दिया है और नास्तिक बन गये हैं।

१८४८ में एक अमेरिकन किसान मि० फाक्स की प्रसिद्ध लड़कियों ने जो एक भूतैले घर में रहती थीं, खटकों द्वारा एक फेरी करने वाले की परलोक-गत आत्मा से बातचीत कीं। इस प्रकार प्रायः १०० वर्ष हुये अमेरिका में आधुनिक परलोक-वाद का जन्म हुवा था। तब से परलोक-वाद के विज्ञान ने ऐसी शीघ्र उन्नति की है कि सर आर्थर कानन डायल के शब्दों में "इस परलोक-विचार का साहित्य इतना अधिक है कि दूसरा कोई धर्म इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। और यह बेधड़क कहा जा सकता है कि यदि कोई परिश्रमी पाठक और कुछ न पढ़कर इसे ही ५० वर्ष तक पढ़ता जाय तो भी इसका अन्त न होगा। इसका परिमाण और गुण एक सा नहीं है। परन्तु फिर भी मैं ५० ऐसी पुस्तकें परलोक-वाद के वैज्ञानिक और धार्मिक पहलुओं पर गिना सकता हूं जो किसी अन्य दर्शन की इतनी ही पुस्तकों से ज्ञान महत्त्व, और रोचकता में बहुत बढ़कर होंगी। तथापि सर्व साधारण इन उत्तम पुस्तकों से अधिकांश अपरिचित रक्खे जाते हैं, जिनमें से बहुत सी

एक दिन जगत प्रसिद्ध होंगी। जब कभी कोई नया आन्दोलन प्रारम्भ होता है तो उसमें उसके भक्त भी भरती होते हैं ? यह दशा अमेरिकन परलोक-वाद की विशेष रूप से हुई जो जङ्गल की आग की तरह फैल गया अमेरिकन प्रजा का ३/४ भाग इसके जादू और मोहकता में फंस गया। उनमें अधिकांश चमत्कारों के भूखे थे। यह आन्दोलन का सुखद पहलू नहीं था। केटी फाक्स और उसकी बहिन के साथ पहिले, माध्यम बनाकर चक्र बनाये गये। बड़े २ विद्वान् परलोक-वाद की ओर आकर्षित हुवे। और उन्होंने आध्यात्मिक मासिक पत्र निकाले जिनमें "स्पिरिट मैसेंजर" और "स्पिरिच्यूल टैलीग्राफ़" बहुत प्रसिद्ध थे। सन् १८५२ में बोस्टन की पेशावर माध्यम "मिसिज़ हेडन" योरूप आई। उसने "राबर्ट ओवन" को अपने मत में किया। "यारक शायर स्पिरिच्यूल टैलीग्राफ़" पहिला अंग्रेजी रिसाला था। इसके बाद कई और निकले जिनमें से 'टूवर्ल्डस' और 'लाइट" ने इंग्लिस्तान में परलोक-वाद के प्रचार में विशेष भाग लिया है।

पुरुषों से अधिक स्त्रियां सब श्रेणियों से माध्यम बनीं। 'डेनियल डाग्लस होम' का नाम आने वाली पीढ़ी इंग्लिस्तान के सब से बड़े और सर्वोत्तम माध्यमों में लेगी। मशहूर अंग्रेजी वैज्ञानिकों ने उसकी अनेक परीक्षाएँ कीं जैसा कि "सर विलियम क्रूक्स" ने और "लार्ड लिंडसे" ने।

लन्दन की अनुसंधान कर्तृ सभा १८६९ में बनी थी और

उसने अपना मत परलोक-वाद के पक्ष में दिया। इसको फल-स्वरूप १८८२ में एक आध्यात्मिक अनुसंधानकारिणी सोसाइटी बन गई।

परलोक-वाद जिसे कभी बेहूदगी का ढेर कहकर बदनाम किया जाता था, अब प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाने लगा। अब इसे एक विज्ञान कहा जाने लगा। सोसाइटी के प्रथम प्रेज़ीडैन्ट "प्रोफ़ैसर हैनरी सिजविक" बनाये गये। वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक रीति से इसके दावों की परताल कर इस विद्या का मान बढ़ाया। नास्तिकों का मत परिवर्तन हो गया और वह परलोक वाद के पक्षपाती बन गये। हमारे पास "विल्यिम इंग्लिसटिन" द्वारा एक बड़ी रोचक कथा बयान की गई है जो कि पीछे एक पेशावर माध्यम बन गये और उन्हें बड़ी सफलता मिली। वह कहते हैं कि उनके पिता "डा० सैक्सटन" नास्तिक वाद से परलोक वाद ही में विश्वास करने लगे थे। उन्होंने व्याख्यानदाता के उपदेशानुसार घरेलू चक्र (Home circle) आरम्भ किया। सात आठ दिन तक एक कमरे में बैठते रहे। प्रार्थना करते रहे और अञ्जलि के भजन गाते रहे। परन्तु कुछ फल नहीं निकला। किसी आत्मा का भी किसी प्रकार का प्रादुर्भाव नहीं हुवा। छोटे लड़के "बिल्ली" ने बाहर एक बोर्ड प्रयोग के कमरे पर यह लिखकर लगा दिया कि 'इस कमरे में पागल बन्द हैं' वह जल्दी ही छोड़ दिये जावेंगे, वह बड़े खतरनाक हैं। उसके पिता बड़े नाराज़ हुये और लड़के को आज्ञा दी कि या तो चक्र में

बैठा करो या घर से निकल जावो। उसने चक्र में बैठना स्वीकार किया। प्रयोगशाला में प्रविष्ट होते ही वह बिल्कुल बदल गया, तमाम लड़कपन का खेल और मजाक रफूचक्कर हो गया। उसके अपने ही शब्दों में मजे में जान मालूम होने लगी। वह एकदम जमीन से ऊंची उठ गई यहां तक कि उस तक पहुँचने के लिये हमें खड़ा होना पड़ा वह प्रश्नों के उत्तर बुद्धिमता पूर्वक देने लगी जो लोग चक्र में उपस्थित थे उनके परीक्षा करने के सन्देश का समझदारी पूर्वक उत्तर देने लगी। उस शाम को नित्य ही प्रार्थना के अनन्तर मुझे इस संसार का ज्ञान जाता रहा। मैं बड़ी मग्न अवस्था में चला गया और थोड़ी देर बाद बेहोश हो गया आध घन्टे के बाद होश में आया हमें जो सन्देश आये थे उनसे मुझे प्रमाण मिल गया कि मेरी माता हमारे पास थी तब मुझे यह अनुभव होने लगा कि मैं कितनी भूल कर रहा था और मेरा पूर्व जीवन कितना अधार्मिक था। मुझे यह निःसंन्दिग्ध रूप से जानकर प्रसन्नता हुई कि जो परलोक चले गये हैं वह लौट सकते हैं और आत्मा का अमरत्व प्रमाणित करते हैं। इस प्रकार के बहुत से सुखप्रद घन्टे मैंने बिताये हैं।

बहुत प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में से जिन्होंने इंग्लैंड में परलोक-वाद के प्रचार में सहायता दी "सर विलियमक्रूक्स" और "सर आलीवर लाज" हैं जिनकी पुस्तक 'रैमंड' ने वैज्ञानिक जगत् पर बड़ा प्रभाव डाला है। साहित्य लेखकों में इस

आन्दोलन की सफलता में "सर आर्थरकानन डायल" से बढ़कर किसी ने भाग नहीं लिया है।

सम्पादकीय क्षेत्रों में "मिस्टर डब्लू० टी० स्टेड" का नाम एक निडर परलोक-वादी के रूप में हमेशा चमकता रहेगा। एक लेखक ने लिखा है कि उनके इहलौकिक जीवन से मरणोत्तर जीवन अधिक क्रियाशील रहा। इससे हमें उस पुस्तक का स्मरण हो जाता है जो उनकी लड़की ने उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित की थी। जो उसके पिता के अनेक लोकों के जीवन सन्देश हैं। "होरेसलीफ़" जिनकी किताबें किसी भी किताबों की दूकान पर खरीदी जा सकती हैं इस आन्दोलन की एक और शक्ति हैं किन्तु पादरी "विलियम स्टेनटन मोसिज़" के जो ग्रंथ उनके कृत्रिम नाम "एम० ए० आक्सन" के नाम से लिखे गये हैं। विशेषतः "आध्यात्मिक आधुनिक परलोक वाद के साहित्य में चोटी के ग्रन्थ हैं। वह इंग्लैंड के गिर्जे के बड़े विद्वान् और धार्मिक पादरी थे। उनका धार्मिक ज्ञान लोक सेवा में केन्द्रित था। जिसे वह ग़रीबों में काम करके विशेषतः बीमारी के दिनों में प्रदर्शित करते थे। उस समय वह बड़ा साहस और दृढ़ता दिखाते थे वह चेचक के बीमारों की सेवा करते थे और उसका परिणाम उनके लिये क्या होगा इसकी परवाह नहीं करते थे। "लिलीडेल" एक अमेरिका के देहात में एक छोटा नगर है जो 'बफ़लो' से दक्षिण पश्चिम में प्रायः ४०० मील के अन्तर पर है।

नगर अत्यन्त सुन्दर और प्राकृतिक घेरे में बसाया गया है। प्राय: २०० कुटिया और मकान हैं जिनका प्रबन्ध अमरिकन परलोक-वाद समिति द्वारा किया जाता है। यहां प्रतिवर्ष २० हज़ार परलोक-वादी आते हैं। यह आत्मनिर्भर समाज है। लायब्रेरी में गुप्त विद्याओं पर अनेक ग्रन्थ हैं और आध्यात्मिक विषय के समाचार पत्रों का एक कार्यालय भी है। इस अद्भुत स्थान की यह केन्द्रिय विशेषता है। कुटियों में ज्योतिषी और माध्यम रहते हैं। इस पारलौकिक नगर में आध्यात्मिक चक्र और सन्देश जीवन की साधारण घटना है। मदरसे में लड़के और लड़कियों को आध्यात्मिक पाठ पढ़ाये जाते हैं। लन्दन से एक पत्र "Prediction" (भविष्य वाणी) निकलता है वह इस इतिहासिक नगर का बड़ा सुन्दर वर्णन करता है जहाँ पतलोक-वादी प्रति वर्ष इकट्ठे होते हैं। परलोक-वाद का जन्म जैसा कि हमें मालूम है, अमेरिका में हुआ है, जब मशहूर (Fosisters) फाक्स बहिनों में कुछ वर्ष हुये अपने घर में खटके सुने थे। वह आधुनिक परलोक-वाद की संसार में पथ प्रदर्शक थी। उनका घर जब वह बिल्कुल खस्ता हो गया तो १६१६ में जोड़ जाड़ कर यहाँ पहुँचाया गया और परलोक-वादियों की इसी बस्ती में जमा दिया गया। परलोक वाद का यह पिंगूरा जिसे 'फ़ाक्स-कुटिया' कहा जाता है १०० वर्ष की एक पवित्र यादगार अपने नवीन रूप में है और जनता को उस ऐतिहासिक समय की याद

दिलाता है जब फाक्स बहिनों ने एक नये विज्ञान को जन्म

दिया था ।

इस आन्दोलन का सिंहावलोकन करते हुये एक लेखक लिखता है, ग्रेट ब्रिटेन में इसके ५०० गिरजाघर हैं। ब्राज़ील का नम्बर दूसरा है जहां पर कि १७० संस्थायें हैं। वेल्जियम में ६० हैं । क्यूबा में ५७, पोर्टोरीको में ३० । आर्जेन्टाइन रीपबलिक में २६ । कोलम्बिया और कई दूर देश भी सम्मिलित किये जा सकते हैं जो इससे प्रभावित हुवे हैं। नीदर लैंड में ३० बिखरी हुई सोसाइटियां हैं । अमरिका में एक नेशनल यूनियन है। जब कि मैक्सिको में १२ सोसाइटियां हैं। फ्रांस में ११ आत्म-तत्व विवेचनी सभाएँ हैं। और आत्म तत्व के अनुसंधान में फ्रांस बड़ी लगन रखता है । यद्यपि धार्मिक अंश यहां लुप्त सा ही है । पुर्तगाल में २५ सोसाइटियां हैं जैकोस्लोवेकिया में केवल ३, सुजा में २, न्यूज़ीलैंड में ७ बड़े गिरिजाघर हैं। आस्ट्रेलिया में केवल २ या ३ और अमेरिका में वर्णन योग्य केवल ३, जर्मन में ६, चिल्ली में १, यह लिखते सुख होता है कि इन सब का एक अन्तर जातीय फीडरेशन भी है। सब मिलाकर १२८ पत्र हैं।

भारत वर्ष में परलोक-वाद ने ऐसी प्रगति नहीं की है जैसी कि पश्चिम में, यहां इसके लिये भूमि इतनी उपजाऊ नहीं है क्योंकि यहां धर्म का राज्य जनता पर विशेष है । और जड़वाद ने अपना जाल इस भूमि पर अभी पूरे तौर से नहीं डाला है जैसा कि पश्चिम में । धर्म यहां मरा नहीं है, लोगों

का ईश्वर में विश्वास है और उनका यह भी विश्वास है कि मरने के बाद भी जीवन है और मृत्यु एक भावी उन्नत जीवन को प्राप्त करने का मुख्य द्वार है।

यद्यपि यह सत्य है कि नास्तिकता से आक्रान्त देश में पर-लोक-वाद का आन्दोलन रोग की निवृत्ति के लिये नितान्त आव-श्यक है। यह भी कहा जा सकता है कि इसका उच्च स्थान सभी देशों के निवासियों के हृदय में होना चाहिये यदि उसकी उच्च भावनाओं को अच्छी प्रकार समझा जाय।

मि० वी० डी० ऋषि को भारतवर्ष में आधुनिक परलोक-वाद का सन्देश वाहक कहा जा सकता है। उनकी पुस्तक "भारतवर्ष में परलोक-वाद उसकी कल्पना और क्रिया" में इस देश में उनके अनुभवों का और पश्चिम में उनके भ्रमण का वृत्तान्त दिया गया है। "सर आर्थर कानन डायल" ने इन शब्दों में उनका स्वागत किया है। "आप भारत में परलोक-वाद के सन्देश-वाहक हैं और हम सब आपको भारतवर्ष में इसका प्रतिनिधि मानते हैं। उन्होंने भारतीय परलोक-वाद-समिति की स्थापना की है।"

महायुद्ध के हो हल्ले के बावजूद—अपार द्वेषाग्नि और समाप्त न होने वाले दुखों और कष्टों की वेदना के होते हुये भी हम अनुभव करते हैं कि हम आदर्श की ओर चल रहे हैं। उच्च कोटि के परलोक-वाद का उद्देश्य है, मनुष्य को परमात्मा का दर्शन कराना, और मनुष्य को मरणोत्तर जीवन का समझने योग्य ज्ञान कराना, ताकि विज्ञान और धर्म को मिलाकर नीति

शास्त्र का एक सार्वदेशिक संग्रह बनाया जा सके जिससे सब मनुष्य जाति का यहां और परलोक में कल्याण हो सके।

अध्याय चतुर्थ

जीते हुवे मुर्दे और उनके द्वारा मदद

जब कभी कोई आन्दोलन मनुष्य जाति की भलाई के लिये शुरू किया जाता है तो उसका विरोध हँसी और घृणा से किया जाता है। परलोक-वाद का विरोध उन लोगों ने किया जो धर्म के ठेकेदार अपने को बतलाते थे। किन्तु उनके उपहास और घृणा के बावजूद परलोक-वाद फैलता ही गया और आज संसार के सभी देशों में इसके अनुयायियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है।

परलोक-वाद ने दृढ़ भाषा में मरणोत्तर जीवन की उन्नति का प्रचार किया है जिनका कि धर्म अस्पष्ट भाषा में प्रचार करता आया है। एक परलोक गत आत्मा का निम्नलिखित सन्देश प्राप्त हुवा है, जो बड़े महत्व का है।

"बच्चो ! परलोक से सम्पर्क की इस बड़ी सत्यता ने तुम्हारे धर्म को अन्ध विश्वास नहीं दिया, प्रत्युत यह ज्ञान दिया है कि मनुष्य एक आत्मिक व्यक्ति है और मृत्यु के समय वह सांसारिक कपड़ों को उतार कर एक दूसरे संसार में चला जाता है। परन्तु उस संसार का स्वरूप उसका अपने चरित्र पर निर्भर है। उसके

विचार, शब्द और कर्म द्वारा ही उसकी पहिचान होगी। और उस सूक्ष्म शरीर से वह उस लोक में वहां की बड़ी कर्तृत्व शक्ति का ज्ञान प्राप्त करता हुवा रहेगा।

पार्थिव प्रकम्पों से हम ईथर और रेडियो के द्वारा सन्देश प्राप्त करने में समर्थ हुवे हैं। यह आजकल के विज्ञान का बड़ा भारी अचम्भा है। इसी प्रकार इस लोक और परलोक के बीच भी सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है और परलोक-वाद ने इसे कहने सुनने से परे प्रमाणित कर दिया है। मृत व्यक्तियों से सम्बन्ध जोड़ने के भिन्न २ तरीकों का वर्णन हम अगले अध्याय में करेंगे।

बहुत से वैज्ञानिक इसके अनन्य भक्त हैं यही एक सत्य प्रमाणित करता है कि परलोक-वाद धोखेबाज़ी नहीं है जैसा कि अनभिज्ञ लोग समझते हैं। ठीक जैसे भले और बुरे आदमी संसार में हैं वैसे ही अच्छे और बुरे माध्यम भी हैं। यह बात निस्सन्देह प्रमाणित हो चुकी है कि परलोक-वाद का एक सन्देश है और वह दैवी सन्देश है और उसका प्रभाव मनुष्य पर उसका जीवन परिवर्तन करने में पड़ता है, ख़ास कर जबकि वह यह जान लेता है कि मरने के बाद भी जीवन है तो वह प्रभाव और भी अधिक पड़ता है। मि० "पेस्टनजी डी० महालक्ष्मी वाला" ने (जो बम्बई के एक बड़े पार्सी परलोक वादी हैं) एक पुस्तक "परलोक-वाद में साहस पूर्ण घटनायें" (Adventures in spiritualism) इसे पढ़कर बड़ा

आनन्द मिलता है। यह परलोक-वाद के बड़े साहित्य में वृद्धि करती है जो कि पहिले ही बहुत बढ़ गया है और इसमें जिन घटनाओं का वर्णन है वह इतनी रोचक और जीवन दायनी हैं कि उनमें से कुछ को यहां उद्धृत करना उचित मालूम पड़ता है।

मि० महालक्ष्मी वाला एक विचित्र देह धारण करने के प्रयोग की कथा लिखते हैं जो उन्होंने १६२१ में संयुक्त प्रान्त अमेरिका की यात्रा में देखा था। उन्हें सानफ्रान्सस्को में एक पार्सी मित्र मिला जो उन्हीं के शब्दों में ग़रीबी के कारण बिल्कुल एकान्त जीवन बिता रहा था। और वह दोनों एक माध्यम के पास गये। मि० महालक्ष्मी वाला कहता है कि "माध्यम के बैठ जाने पर उसने दो तीन बार सूंघनी ली और तत्काल बेहोश होगई। और उसी क्षण में एक लम्बा गठीला मध्यम अवस्था का अमेरिकन माध्यम की दांई ओर प्रकट हुवा और मेरे मित्र से कहने लगा:—

"जयरामजी की! आपकी आंखें कैसी हैं?" यह मालूम हुवा कि जब वह इस लोक में था वह आंखों का डाक्टर था और मेरे मित्र की आंखों का इलाज करता था।

मेरे मित्र ने उत्तर दिया "आपका धन्यवाद है। अब वह आगे से अच्छी है।"

उसने फिर कहा "अच्छा तो इलाज जारी रखो जो मैंने बताया है मैं अब भी तुम्हारी देख भाल कर रहा हूँ।"

तब मेरी ओर घूम कर पूछा "यह सामने कौन साहिब

बैठे हैं ?" "बम्बई के एक मित्र"

"आपका मिज़ाज कैसा है ? मैं आपसे मिलकर प्रसन्न हुवा"। यह कह कर वह एक दम अदृश्य हो गया मानो हवा में घुल गया। तत्काल ही एक ६-१० वर्ष की पार्सी लड़की एक नीचे स्टूल पर बैठी हुई दिखाई दी। वह ऐसी पोशाक पहिने हुवे थी जैसी ५०-६० वर्ष हुवे पार्सी लड़कियां पहनती थीं जिसमें ज़री की टोपी भी सम्मिलित थी। वह मेरे मित्र की बहिन थी, फ़ौरन बोलने लगी "भाई! आप कैसे हैं ? पिताजी आपकी तरफ़ से बहुत चिन्तित हैं"। (मालूम हुवा मेरे मित्र की सौतेली मां होने के कारण उसके पिता ने उसको अपनी वसीयत में पैतृक सम्पत्ति से बञ्चित कर दिया था)

"पिताजी से कहो मैं अच्छी तरह से हूं वह मेरी ओर से चिन्तित न हों"। "किन्तु वह तो आपके बारे में और आपके कारोबार के बारे में बड़े चिन्तित हैं" "तब मेरी तरफ़ मुड़कर पूछा, यह सामने कौन साहिब बैठे हैं ?"

"बम्बई के एक मित्र" यह सुनकर उसने पारसी रीति से प्रणाम किया और एक ओर सिर झुकाकर हवा में मिल गई।

अब यह एक हस्ताक्षर करने की कहानी है।

३ सितम्बर सन् १६२५ को पुस्तक लेखक एक प्रयोग में उपस्थित था जब कि एक क़ाग़ज़ हस्ताक्षर किया हुवा और क़ाग़ज़ के ऊपरी भाग में पेन्सिल से तारीख लिखकर एल्यूमीनियम की एक तुर्री के पास जो कमरे के मध्य में रक्खी थी

इस प्रकार रख दिया गया कि कोई भी उसको छू नहीं सकता था। एक आवाज़ कहती हुई सुनाई दी "सज्जनों और देवियो, सलाम ! मैं अभी यहां से गुज़र रहा था और आपको यहां इकट्ठा हुवा देखकर मैं भी चला आया मैं "डा० पीबल्स" हूँ।

डा० पी० बल्स १५ फरवरी १६२२ को बड़ी अवस्था के होकर मरे थे। वह परलोक-वाद के एक प्रसिद्ध मार्ग प्रदर्शक थे और इस विषय पर उन्होंने बहुत सी किताबें लिखी थीं। मि० महालक्ष्मी वाला कहते हैं कि वह उन्हें जानते थे और उनके मरने से एक वर्ष पहिले यह संयुक्त प्रान्त अमेरिका में "लास एञ्जेलस" में उनको मकान पर मिले थे। वह लिखते हैं "कि जब आवाज़ ने कहा मैं डा० पीबल्स हूँ तो मैंने उन्हें १६२१ की मुलाकात की याद दिलाई इस पर उन्होंने कहा "हाँ, हाँ," मुझे खूब याद है और आज आप से फिर मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं एक निशान ऐसा छोडूंगा। कि "मैं डा० पीबल्स बोल रहा हूँ।" प्रयोग की समाप्ति पर जब काग़ज का पैड उठाया गया तो हस्ताक्षर युक्त काग़ज़ पर लिखा था:—"जे० एम० पीबल्स एम० डी०"। हस्ताक्षर उन हस्ताक्षरों से बिल्कुल मिलते थे जो उनकी किताब "What is spiretualism" परलोक वाद क्या है ? में उनकी तस्वीर के नीचे किये हुवे हैं। Cheiro—चीरो प्रसिद्ध ज्योतिषी और भविष्य वक्ता का नाम किसने नहीं सुना ? वह अपनी किताब "सच्ची भूतों की कहानियां (True Ghost stories) में अपना एक अनुभव बयान करते हैं जिसमें उनका

यह विश्वास हो गया कि मृत व्यक्तियों से सम्बंध जोड़ना न केवल सम्भव ही है प्रत्युत ऐसे सम्बन्धों का क्रियात्मक मूल्य है जिस पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। मार्च सन् १८६६ में जब वह पश्चिमी अमेरिका में यात्रा कर रहे थे तो उन्हें एक तार मिला कि उनके पिता मरणासन्न हैं और उन्हें फौरन इंग्लैंड लौटने की ताकीद करते हैं। उन्होंने अपने पिता को १५ वर्ष से नहीं देखा था और उन्होंने जल्दी से जल्दी लौटने का निश्चय किया। यह ६००० मील से अधिक की लम्बी थका देने वाली यात्रा थी। वहां जहां भी ठहरे वहीं से अपने पिता को तार देते रहे और आखिर अपने पिता के पास घर पहुँचे।

पिता बिस्तर में सहारे से बैठे हुवे अपने पुत्र की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह मिले। 'बेटा! मैं अपनी सब मानसिक शक्ति जीवित रहने के लिये काम में लाया हूँ ताकि मैं तुम्हें अपने कुटुम्ब के सम्बन्ध में कुछ बातें बता सकूं। जो मुझे कई वर्ष पूर्व बता देनी चाहियें थीं। उसने कठिनता से श्वांस लेते हुवे कहा-लन्दन में सालिसिटरों के एक फर्म के पास कुछ कागजात तुम्हारे लाभ के मौजूद हैं तुम्हें वह दस्तावेज जल्दी से जल्दी प्राप्त कर लेनी चाहियें। नाम और पता मुझे इस समय भूल गया है। मेरा सिर ज़रा ऊँचा उठावो। खिड़की को खोल दो। मुझे और अधिक हवा लेने दो, शायद मेरी याददाश्त लौट आवे मेरे प्रिय पुत्र! मुझे क्षमा करना। बहुत से अन्य व्यक्तियों की तरह मैंने मुआमला ढीला छोड़ दिया। नहीं मुझे बिल्कुल याद नहीं आता। मैं स्मरण

नहीं कर सकता।" अपने पुत्र को रहस्य बताये बगैर ही पिता चल बसा, जिसे बताने को वह बड़ा चिन्तित था।

थोड़े दिनों में मुआमला बिल्कुल भूल गया। किन्तु एक दिन रविवार को सायंकाल पिता की मृत्यु के ३ वर्ष बाद इंग्लिस्तान में एक रेलवे स्टेशन पर प्रतीक्षा करते हुवे "चीरो" (Cheiro) ने एक प्रयोग का समाचार पढ़ा और वह उसी शहर में उसी सायंकाल होने वाला था। जिस ट्रेन से वह जाने वाले थे ३ घण्टे लेट थी। उन्होंने परलोक-वादियों की उस मीटिंग में जाने का निश्चय किया, बजाय इसके कि तीन घण्टे वेटिंग रूम में नष्ट करें। उन्हें घर मिल गया और अन्दर जाने की आज्ञा भी मिल गई। प्रयोग इस भजन से शुरू हुआ "हमें कृपा कर प्रकाश की ओर ले चलो (Lead kindly Light) अन्तिम पद समाप्त भी नहीं हुवा था कि एक पीला प्रकाश प्रकट हुवा और राग के साथ ताल देने लगा। 'चीरो' के चित्त में यह भाव उत्पन्न हुवा कि यह ढोंग था। माध्यम ने कहा "मेरे सामने बैठा हुवा व्यक्ति मेरी बहुत शक्ति खींच रहा है। मालूम होता है कि कोई आत्मा उसके सामने प्रकट होना चाहती है। हमें फिर गाना चाहिये और जितने प्रकम्प दे सकें दें। जब दोबारा भजन गाया गया तो चेहरा दिखाई दिया, वह 'चीरों का' मृत पिता था। वह अपने पुत्र को इस संसार में अपना सन्देश देने आया था। "चीरो" का नास्तिक भाव जाता रहा, वह बोले 'हे पिताजी! मैं आपको पहिचानता हूँ किन्तु अभी भी

यह विश्वास नहीं करता कि आप ही हैं ऐसी बात कैसे सम्भव हो सकती है ?"

पिताजी बोले (शब्द पहिले बहुत मन्द थे) "मेरे पुत्र मुझे प्रसन्नता है कि तुम उस समय से जब मैंने तुम्हें अपने पलंग के पास देखा था अच्छे मालूम दे रहे हो। अपनी माता से कहो कि मैंने आज रात तुमसे बात चीत की है। और उसे यह भी बताओ कि तुम्हारी बहिन यहाँ बहुत प्रसन्न मालूम हो रही है। मैं उसे कभी २ देखता हूँ क्योंकि मेरी और उसकी रुचि एक सी नहीं है। किन्तु मुझे समय नष्ट नहीं करना चाहिये। मैं अब उसी बात पर आता हूं जहाँ मैंने छोड़ा था जबकि मैं मर रहा था। मैंने तुम्हारे क़ाग़ज़ों का पता याद करना चाहा, परन्तु मेरा कंठ रुक गया और मैं बोल नहीं सका। तब से मैंने इस अवसर के आने की कितनी उत्कट इच्छा की है ऐसा मालूम होता है कि मुद्दतें बीत गईं मैंने इस प्रकार अपने को मुआमला खटाई में डाले रखने के लिये दोषी ठहराया है। परन्तु परमात्मा को धन्यवाद है कि अब मैं तुम्हें बताने में समर्थ हूँ।

ध्यान से सुनो ! मैं शायद दोबारा न बता सकूँ जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ। मुझे गली का नम्बर याद नहीं है क्योंकि ५० वर्ष हुवे जब मैं वहां गया था। गली के बांई तरफ़ पीतल की तख़्ती है उस पर "डेविस एण्ड सन्स साली सिटर्स" लिखा हुवा है। उनके पास वह काग़ज़ हैं। उनसे वह ले लो।

मेरे बेटे ! मुझे क्षमा करो। मैं ऐसे मुआमलों में बहुत लापरवाह

रहा हूँ। मैं अब और अधिक नहीं कह सकता मैंने बहुत सा समय लेलिया है और अब भी बहुत से व्यक्ति अपने मित्रों को सन्देश देने को उत्सुक हैं। कृपा कर जो लोग यहां हैं उन्हें मेरा धन्यवाद दो, उन्होंने अपनी सहानुभूति से मेरी सहायता की है। अगले दिन चीरो ने दफ़्तर तलाश किया और वह बहुत चकित हुवे जब उन्हें वह क़ाग़ज़ मिल गये जिनका उनके पिता ने ज़िक्र किया था।

निम्नलिखित कहानी से प्रमाणित होता है कि मृत व्यक्ति इस संसार में ही हमारी रक्षा नहीं करते बल्कि मरणोत्तर जीवन के ज्ञान का भी हमारे जीवन के तरीकों को सुधारने पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। सार्डीनिया के एक बेड़े में सिपाहियों की एक फ़ौज की कमान का भार एक फ़ौजी अफ़सर को दिया गया। वह जगह लुटेरों से भरी थी और इस फ़ौज का मुख्य काम उनकी लूट मार को रोकना था।

एक दिन कप्तान को एक तार मिला कि उसे सरहद के जङ्गल को पार करना चाहिये और अपने साथ बहुत सा धन लाना चाहिये जो दूसरे पार सिपाहियों को देने के लिये चाहिये। सिपाहियों को इन्फ्लूएञ्जा (Influenza) की बीमारी थी और कप्तान ने देखा कि यदि वह अकेला रुपये की थैलियां लेकर गया तो रास्ते में लुटेरे ज़रूर उसे मार देंगे। इसलिये उसने तार का उत्तर दिया कि मैं नहीं आ सकता। वह बड़ा हैरान हुवा, जब उसे उत्तर मिला कि तुम्हें आज्ञा

माननी होगी। फ़ौरन चल पड़ो यदि तुम डरते नहीं हो। कप्तान को घोड़े पर जीन कसकर और रुपया लेकर चलने के सिवाय उपाय न था। इस प्रकार मर जाना बुरा मालूम हुवा क्योंकि वह निश्चय मृत्यु को निमन्त्रण दे रहा था। आप ही आप उसे अपनी माता की याद आगई। वह एक अनघड़ आदमी था जिसने कभी धर्म या ऐसी अन्य बातों की कभी परवाह नहीं की थी किन्तु वह हर रात को कुछ प्रार्थनाएँ दोज़ख (नर्क) में पड़ी आत्माओं के लिये पढ़ा करता था। उसने हँसी के ढङ्ग पर कहा "पवित्र आत्माओं! यदि मेरी प्रार्थनाओं से तुम्हें कुछ लाभ हुवा हो और तुम और अधिक प्रार्थना चाहती हो तो तुम जल्दी करो और मेरी रक्षा करो क्योंकि मुझे उम्मेद है कि मैं भी आज एक पवित्र आत्मा बन जाऊँगा।

वह घोड़े पर चढ़ा और एक दम लपका, मुश्किल से वह थोड़े क़दम गया था कि उसे तीन बन्दूक धारी सवार मिले। उन्होंने उसे सलाम किया और कहा कि उनको जङ्गल में उसके साथ जाने को विशेष रूप से भेजा गया है। उनके सर्दार ने शीघ्र उसके साथ बातचीत शुरू कर दी जबकि वह पास २ घोड़ों पर सवार जङ्गल में से जा रहे थे। उसने कहा "मैं जिनोआ (Genoa) का रहने वाला हूँ और मेरी मंगनी हो चुकी है, विवाह होने वाला है। उसने उस घर का वर्णन किया जहां पर उसकी मंगतेर अपने माता-पिता के साथ रहती है। आँगन का दृश्य जहाँ पर उसकी प्रिया मुर्गी के बच्चों को खिला रही होगी और वह वहाँ जाकर

उसकी टोकरी छीन कर और उसमें के दानों को बखेर कर वह बैठक में पहुँच जायगा और वहाँ उसकी दादी और माता को मिलेगा। और फिर सब मिल कर साथ भोजन करेंगे। यह सब वह अपने मन में विचार कर रहा था। जैसे वह जा रहे थे उन्हें लुटेरों का एक दस्ता अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित मिला उन्होंने दांत किटकिटाये किन्तु हमला नहीं किया क्योंकि वह जानते थे कि एक सवार उनके दसके बराबर था, जब जङ्गल पार हो गया और शहर दिखाई देने लगा तो सवारों के सर्दार ने सलाम किया और कहा 'कप्तान साहिब! अब हम आपसे बिदा होते हैं। अब हमले का कोई डर नहीं है। वह सामने शहर है और सिपाही आपको लेने के लिये आ रहे हैं। मुझे आज्ञा पालन करनी चाहिये "तब कप्तान साहिब पर यह बात खुली कि जो आदमी उनके साथ आये थे, वह शरीर धारी व्यक्ति नहीं थे, बल्कि उनकी आत्माएँ थीं। जो लड़ाई में मारे गये थे, और जो उसकी प्रार्थना के उत्तर में उनकी रक्षा के लिये आये थे। कप्तान साहिब उस बयान से जो मरे हुवों की आत्मा ने दिया था इस बात की तसदीक कर सके! क्या यह बात ठीक नहीं है कि सत्य घटनाएँ बनावटी कहानियों से अधिक अद्भुत होती हैं। कप्तान साहिब तरक्की करके कर्नल हो गये और परमात्मा से डरने वाले मनुष्य बन गये। उन्होंने अपने जीवन की उस प्रासंगिक घटना के बाद संयम का जीवन बिताया, छिपकर भलाई करते थे, और अपनी थोड़ी आवश्यकताओं के बाद अपनी सम्पत्ति गरीबों और जरूरत वालों को दे डालते थे।

बिल्कुल ऐसी ही विचित्र एक और कहानी है, जो युद्ध से सम्बन्ध रखती है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यदि हम सत्य भाव से दैवी आत्माओं का आवाहन करते हैं तो वह कितनी आश्चर्य जनक हद तक हमारी सहायता करती हैं।

पिछले सन् १९१४-१९१८ के युद्ध में मोन्स (Mons) की लड़ाई में ब्रिटिश फ़ौजों की भारी हार हुई। केवल ५०० सिपाही पीछे बचे थे और मालूम होता था कि वह भी जर्मन फ़ौजों द्वारा कट जावेंगे जो संख्या में १०००० थी ब्रिटिश सिपाही जो खाई में थे उनमें से एक को यकायक सैंट जार्ज की तस्वीर याद आ गई जो लन्दन के एक शाकाहारी होटल के एक प्लेट पर उसने देखी थी, जहाँ वह कुछ समय पूर्व गया था। सैन्टजार्ज की तस्वीर के नीचे लातीनी भाषा में एक वाक्य नीले अक्षरों में छपा था "परमात्मा करे कि सैन्टजार्ज इंग्लैंड की सहायता करने को उपस्थित हों" वह इन शब्दों में हार्दिक भाव से बड़ी तन्मयता से फ़रिश्तों से प्रार्थना करता रहा कि वह ब्रिटिश फ़ौज के इस असहाय भाग की सहायता करें। एक बिजली की सी लहर उसके शरीर में से गुजरी। उसकी प्रार्थना सुनी गई उसने एक अचंभा देखा। उसने आवाज़ों को पुकारते हुये सुना, "सैन्टजार्ज ! सैन्टजार्ज !" और जैसे आवाजें गर्ज रही थीं, दो तरफ़ा फ़रिश्तों की कतार ने चांदी की तरह चमकती हुई धनुषबाणों से सुसज्जित सामने की खाकी फ़ौज को बिल्कुल साफ कर दिया। जैसे सूर्य के आगे धुन्ध दूर हो जाती है, इसी प्रकार भारी फ़ौजें पिघल गईं। (१००००) दस

हज़ार जर्मन फ़ौज मैदान में मरी पड़ी थी और रहस्य यह था कि किसी के ज़ख्म का निशान नहीं था।

उपरोक्त कहानियां संकेत करती हैं कि मनुष्य मरने के बाद भी जीवित रहता है। वास्तव में इस विषय के प्रमाण इतने बढ़ते जा रहे हैं कि कट्टर से कट्टर नास्तिक भी अब विश्वास करने में नहीं हिचकिचाता। आध्यात्मिक अनुसन्धान समिति की कारखाइयां और परलोक-वाद पर सैंकड़ों पुस्तकें जो अनुभव प्रकट कर रही हैं समालोचक को मनुष्य के मरणोत्तर व्यक्तित्व को प्रमाणित करती हैं।

व्यक्तित्व से तुम्हारा क्या अभिप्राय है। व्यक्तित्व का कोष का अर्थ है कि जो एक को दूसरी वस्तु से या एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग पहिचान करा दे। कोलरिज ने व्यक्तित्व को निम्न लिखित वाक्य द्वारा बयान किया है कि व्यक्तित्व पृथक अस्तित्व है, किन्तु उसकी प्रकृति उसका आधार है।

जब मनुष्य मर जाता है वह अपना पार्थिव शरीर पीछे छोड़ जाता है। किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि वह अपना व्यक्तित्व खो देता है। उसका आचरण, बुद्धि और भावनाएँ बनी रहती हैं दृश्य पार्थिव शरीर के अतिरिक्त मनुष्य के अदृश्य कई शरीर हैं। (Allan Kardec) एलन कार्डेक अपनी किताब Experimental Spiritioned में दो निम्नलिखित घटनाओं का वर्णन करते हैं कि मनुष्य के एक से अधिक शरीर हैं।

एक स्त्री प्रायः रात्रि के समय अपने कमरे में एक दूसरी स्त्री को प्रवेश करते देखती थी। जिसको वह पहिचानती थी कि दिन में पड़ोस में फल बेचा करती थी। उसका स्थूल शरीर अपने कमरे में पड़ा रहता था जब कि उसकी आत्मा सूक्ष्म शरीर में लिपटी हुई कमरे में प्रवेश करती थी। यद्यपि कमरा अन्दर से बन्द रहता था, हमें बताया जाता है कि हर बार जब छाया दिखाई देती थी तो वह अपनी तसल्ली कर लेती थी कि सब दरवाजे पूरी तरह से बन्द हैं, और कोई कमरे में नहीं घुस सका होगा। यह एक ऐसी सावधानी थी, कि वह वास्तव में जाग रही थी। और स्वप्न नहीं देख रही थी। यह महिला जो फल बेचने वाली को देखती थी दिव्य-द्रष्टा माध्यम थी, यद्यपि उसे यह पता नहीं था कि उसमें यह शक्ति है। एक और घटना ग्रन्थकार ने एक बीमार महिला की लिखी है जो अपने कमरे में हर रात को एक बूढ़े को देखती थी वह उसके पास आता था और बिस्तरे के पाँवों की ओर खड़ा रहता था, जब वह उससे कुछ पूछने का प्रयत्न करती तो वह बूढ़ा आदमी उसको सो जाने का संकेत करता और वह सो जाया करती थी। कुछ दिनों में जब वह अच्छी हो गई तब वह आदमी जिसकी आत्मा बिमारी के दिनों में आया करती थी, एक दिन उसके पास आया। उसने वही कपड़े पहिने हुवे थे। सूंघनी की वही डिबिया उसके पास थी और उसका कोई तरीक़ा भिन्न नहीं था। उस स्त्री ने उसे हर रात बीमारी में आने के लिये धन्यवाद दिया किन्तु वह बहुत हैरान

हुवा और उससे कहा कि मैं तो कभी भी नहीं आया। मैं तो आज बहुत दिनों के पीछे तुमसे मिलने आया हूँ। वह स्त्री दिव्य-दृष्टा माध्यम थी और उस आदमी की आत्मा को वह उसकी बीमारी में देखा करती थी। अनुभवात्मक-आत्मवाद (Experimental spiritism) जीवित पुरुषों की आत्मा की छाया की घटनाओं को समझाता हुवा कहता है कि जब मनुष्य सोया रहता है, तब उसकी आत्मा सूक्ष्म शरीर में लिपटी हुई अस्थायी रूप से अपने सोते हुवे शरीर से अलग होकर दूर २ घूम आती है। प्रकाश का एक मार्ग आत्मा और शरीर को जोड़े हुवे रहता है। आत्मा आंख झपकने में अपने शरीर में पहुँच जाती है यदि सोये हुवे शरीर को छेड़ा जाय या वह जाग जाय।

उपरोक्त दो घटनाओं को जो एलन कार्डेक ने बताई हैं, हम इन दो परिणामों पर पहुँचते हैं।

१—कि आदमी के एक से अधिक अदृश्य शरीर होते हैं।

२—कि उस आत्मिक शरीर में जब वह स्थूल शरीर से अलग हो जाता है, आत्मा का काम करना सम्भव है जिसका यह आशय है कि ज्ञान जीवित मनुष्य के किसी दूसरे भाग का परिणाम है। मनुष्य में ज्ञान की उत्पत्ति दैवी चमत्कार है। आत्मिक शरीर उसमें कारण नहीं है। हम अनेक अदृश्य शरीरों के विषय को किसी दूसरे अध्याय में वर्णन करेंगे।

अध्याय ५

अन्यलोकों का वर्णन:—

मत्यु कोई वस्तु नहीं है। वास्तव में हमें यह शब्द कोष से खुरच डालना चाहिये, जब सुक्रात जहर का प्याला पीने को था, तो उससे पूछा गया कि हम तुम्हें किस प्रकार दफ़नावें। उस दार्शनिक ने उत्तर दिया "जैसी तुम्हारी इच्छा हो, यदि तुम मुझे पकड़ सको, और मैं तुमसे बच न निकलूं, क्योंकि जब मैं जहर पीलूंगा तो फिर तुम्हारे पास नहीं रहूंगा और किसी प्रसन्न और पवित्र दशा को प्राप्त हो जाऊँगा।" हाँ जैसे ही आत्मा भौतिक आवरण को छोड़ती है तो वह अपने नये घर की ओर चढ़ती है। पृथ्वी का यह मण्डल आत्मा का पिंगूरा है। यहीं पर आत्मा अपने प्रथम अनुभव और शिक्षा प्राप्त करती है यह पृथ्वी उसकी आरम्भिक पाठशाला है। मि० स्टेड (Stead) के मत में आत्मा जब इस लोक को छोड़ कर दूसरे लोक में प्रवेश करती है तो एक छोटे बच्चे की तरह अपने को असहाय अनुभव करती है। किन्तु यह बच्चे की सी दशा अधिक समय तक नहीं रहती। ज्ञान जल्दी २ प्राप्त होता है। यदि पृथ्वी दाईखाना है तो दूसरा लोक पाठशाला का कमरा है। भय निकाल दिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्नता का मूल्य अनुभव करता है और उसे पूरी तरह भोगता है। अन्तर्ज्ञान की शिक्षा दी जाती है और जब तीसरे लोक में पहुँच जाता है जिसको विश्व विद्यालय से उपमा दी

जाती है तो काम हल्का हो जाता है। आनन्द भोगने की शक्ति और भी बढ़ जाती है और भय बिल्कुल दूर कर दिया जाता है। चौथे लोक में शिक्षा पूर्ण कर दी जाती है और शेष तीन उत्पादक फुर्ती के लोक हैं, यहाँ पर आत्माएँ जत्थों में काम करती हैं। जीवन का व्यक्तिगत भाव दूर हो जाता है, सातवाँ लोक परमात्मा के घर का प्रधान द्वार है। आत्मा अब पूर्णता को प्राप्त हो जाती है।

सातवें लोक से परे अनन्त लोक हो सकते हैं। किन्तु किसी ने परमात्मा को नहीं देखा है न कोई उसके निवास स्थान के दर्वाजे तक पहुँचा है उसका महत्व आगे के सब लोगों में व्याप्त है। उसकी आज्ञा का सर्वत्र पालन होता है। विचार विश्वव्यापी भाषा है। ईथर (Ether) सूक्ष्म-द्रव्य विश्व का ढांचा है। जब कोई मरता है तो पार्थिव शरीर अलग हो जाता है और उसे एक ऐसा शरीर मिलता है जो पार्थिव शरीर से हर प्रकार मिलता जुलता है किन्तु वह सूक्ष्म द्रव्य का बना होता है। इसलिये यह अधिक वास्तविक और अस्थायी होता है। कपड़े भी इसी द्रव्य के बने होते हैं। मकान भी ईथर के ही होते हैं, वह हमारे मकानों से अधिक स्थायी होते हैं, क्योंकि हमारे मकान तो समय पाकर गिर जाते हैं परन्तु परलोक के मकान हमेशा रहते हैं।

ठीक जैसे संसार में भिन्न २ प्रकार के लोग हैं, कोई अच्छे कोई बुरे, कोई मूर्ख, इसी प्रकार भिन्न २ प्रकार की आत्माएँ भिन्न २ लोकों में रहती हैं। इसलिये यह स्वाभाविक है कि उनके सन्देशों में एकता न हो। परलोक में जीवन वस्तुतः वहां

से प्रारम्भ होता है जहां से कि हम उसे यहां छोड़ते हैं। इसलिये जो कोई भी हमें सन्देश देता है उसके सन्देश उन विचारों से रंगे रहते हैं जो विचार उसके इस संसार में थे केवल वह थोड़ी उच्च लोकों के नियमों की झलक लिये रहते हैं। एक बार हमें एक मौलवी का सन्देश मिला जिसे कुरान ही सम्पूर्ण भगवद्-ज्ञान का भण्डार था, इसलिये उसने कुरान की शिक्षाओं को ही भगवद्-प्राप्ति का एक मात्र मार्ग बताया।

"परलोक" इस लोक से अधिक बड़ा लोक है, और वहां उन्नति के लिये अधिक सम्भावनाएँ हैं, किन्तु किसी अर्थ में भी इस लोक से अधिक भिन्न नहीं है। केवल आत्मा का कोई शरीर नहीं होता। एक बात निश्चित है। बहुत कुछ उन्हें वहां भुलाना भी होता है, वह जानते हैं कि रुपैया, ख्याति और नाम "परलोक" में कुछ मूल्य नहीं रखते। वहां आत्मा का मूल्य है न कि पार्थिव सफलता का।

ऋषि राम राम की शिक्षा निम्नलिखित बड़े महत्व की है !, "किसी मनुष्य के धर्म का उसके प्रारब्ध से कुछ प्रयोजन नहीं है। जब तुम शरीर छोड़ते हो तो जो कुछ तुम हो उसका मूल्य है न कि तुम्हारे विश्वास क्या थे ? जो कुछ तुम हो वह आत्मिक शरीर में मोटे अक्षरों में लिखा रहता है। और पुरुष हो या स्त्री वह जहां सम्बन्ध रखता है वह आकर्षित होकर पहुँच जाता है.......... परमात्मा के नियम आत्मिक लोकों में ऐसे ही लागू हैं जैसे कि वह इस लोक में लागू हैं। इन नियमों पर कैसा

अच्छा अमल होता है। नीचे के बयान से मालूम हो जायगा।

जैकलन्दन (Jaek Londan) मशहूर उपन्यास लेखक जीवन की उच्च भावनाओं में विश्वास नहीं रखता था। उसने जीवन की लाल शराब के प्याले भर भर पीये थे। और अपने विषयीजीवन की भूल उसे उस समय मालूम हुई, जब उसकी आत्मा नये लोक को प्राप्त हुई। उसका यह सन्देश पढ़ो—

"मेरी आत्मा को जड़वादी भोजन करते २ बदहज़मी हो गई थी, मौत ने अचानक आ पकड़ा, उसने मेरा जीवन ऐसी घड़ी में समाप्त कर दिया जब मेरा मुख उधर नहीं था। मैं अब उस पर पश्चाताप करता हूँ। मेरा विश्वास है कि उसने मेरे परलोक गमन को अधिक दुखदायी बनाया।

मैं जगा। मानों मैं स्वप्न देख रहा था। मुझे ऐसा ही विश्वास था। मैं स्वप्न देखता रहा। मुझे कुछ पता नहीं चला। फिर शक्तियां लौटीं। मैं विचार कर सकता था। मैं लड़खड़ाया और अन्धेरे में मार्ग तलाश करने लगा। संसार का अन्धापन लौट आया मेरे चारों ओर धुन्ध थी। मैं उसमें से अपना मार्ग ढूंढ़ने लगा। मेरा कोई ध्येय न था। मैंने अपनी वही हद पार की थी। जिसको मैं मानता था। अब मैं उसके दूसरी ओर था। मैं ठीक शब्द ढूंढ़ने की कोशिश करता हूँ। मैं संसार के शब्दों में अनुभव को लाने का वृथा प्रयास करता हूँ। परन्तु इसके लिये कोई वाणी नहीं मिल रही।

मैं मर गया। और मृत्यु को दूसरी ओर से देख रहा हूँ—

मृत्यु का मित्रतापूर्ण पहलू! जीवन कभी नष्ट नहीं होता। मैं मनुष्य को अपने प्रारब्ध का सामना करते देखता हूँ जैसा कि मैं संसार में देखता था। मैं उसे गिरता हुआ देखता हूँ। और फिर उठकर चलते हुवे देखता हूँ। मैं अपने मार्ग पर प्रयत्न करता हुआ चलता देखता हूँ और जब उसका स्थान तय्यार हो जाता है तो वह उसमें पहुँच जाता है। कोई दुर्घटनाएँ नहीं होतीं। सब कुछ नियमानुसार चल रहा है।

कल जिसे मैं सत्य समझता था—जिसे मैं अपने शुद्ध विचारों का सार समझता हुवा छाती से लगाये हुवे था, वह मेरे लिये उड़ने वाला विष बन जाता है, और मुझे अपने पूर्व अनुभव की अग्नि में से नये विचार का सार निकालना होगा, और उसी के द्वारा मैं उन्नति करूंगा।

आत्मा का पुनर्जन्म पूर्वजन्म की भूलों की बेड़ियों से जकड़ी हुई स्मृति की पीड़ाओं से उत्पन्न कष्ट है, जो पसीने से युक्त परिश्रम से भरा है, जबकि हृदय आगे गति करने का यत्न करता है—मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे परमात्मा के साथ रहने का हक़ है और मैं अब अपनी पूजा नहीं कर रहा हूँ।

मि० नार्थ क्लिफ़—प्रेस के नेपोलियन का यह सन्देश देखो यह अपनी कथा स्वयं वर्णन करता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति को अनात्मवादी शोषण द्वारा रुक जाने पर बड़ा दुख प्रकट करता है।

"मेरी पब्लिक कार्यों में बड़ी शक्ति थी, और मुझे अब

अनुभव हो रहा है कि उस शक्ति को कैसे अच्छे उपयोग में मैं ला सकता था। किन्तु मैंने उस समय के प्रकाश के अनुसार कार्य किया जो कि उस समय जीवन की अधिक स्थायी और वास्तविक बातों के बारे में बड़ा धुंदला था इसलिये मैंने बहुत सी भूलें कीं। हमें अपनी भूलों का फल अपने पूर्वजन्म के कार्यों के परिणाम रूप में मिलता है जो अधिकांश दशाओं में काफ़ी कष्टदायक होता है। परमात्मा जानता है। मेरा आशय यह है कि यह कष्ट हमने स्वयं बुलाया है। और इससे बचाव का उपाय यही है कि हम पूर्व जन्म में अनजान में की हुई भूलों का सुधार दयानतदारी से परिश्रम कर करें. केवल इसी प्रकार हम अपनी स्लेट का लिखा धो सकते हैं और जीवन को नये सिरे से उच्च स्थिति में आरम्भ कर सकते हैं।"

यह सन्देश वस्तु स्थिति का ज्ञान कराने के लिये आँखें खोलने वाले हैं। सब धर्म शास्त्र और दर्शन शास्त्र मिलकर हमें सीधे और सच्चे रास्ते पर नहीं ले जा सकते, जैसा कि यह सन्देश जो व्यक्तिगत अनुभवों से पूर्ण है। सच्चा मार्ग प्रदर्शन कर सकते हैं क्योंकि वह पछताती हुई आत्माओं के हार्दिक भाव हैं।

वे पिछड़ी हुई आत्माएँ जो इस संसार में पाप और आलस्य की शिकार बनी हुई थीं, उन्हें नीचे के लोको में सुधार के लिये कुछ समय तक रखा जाता है। धन भी एक पाप है। मनुष्य की मुक्ति के लिये सत्य ही एक मार्ग है। "भलाई करो और भले

बनो" आत्माओं का यही उपदेश है जब हमसे बात करते हैं। किन्तु परमात्मा इतना दयालु है कि वह जब पापी को भी दण्ड देता है, तो उसको सुधारने के उद्देश्य से, और उसे उच्च मार्ग दिखाने के लिये ऐसा करता है। उच्च लोकों की आत्माएँ नीचे के लोकों में उतर कर नीचे के लोकों के निवासियों के सुधार की चेष्टा करती हैं। यहाँ हमें वह राजनैतिक व्यक्ति, वह जुआरिये व लुटेरे मिलते हैं जो पृथ्वी पर रहते हुवे बड़े आदमी कहलाते थे, क्योंकि वह बड़ी शक्ति रखते थे, किन्तु जो परमात्माकी दृष्टि में स्वर्ग में रहने के अधिकारी नहीं हैं जब तक कि वह अपनी आत्मा में से लोभ और ईर्ष्या के पापों को धो नहीं डालते। यहाँ शैतान और आलसी बहुत रहते हैं और उन्हें मानसिक कष्ट होते हैं। संसार में जो बुरे कर्म किये हैं उनके लिये पश्चाताप का भाव उन्हें घेरे रहता है। दुष्कर्म की स्मृति से बढ़कर कोई बात अधिक दुखदायी नहीं है। किन्तु केवल पश्चाताप द्वारा ही पापी उस जीवित नर्क से बाहर निकल सकता है जिसमें कि वह फेंका जाता है और अन्त में स्वर्ग को प्राप्त होता है। परमात्मा अपनी परमदयालुता से सारे संसार के सुखी और प्रसन्न रखने की व्यवस्था करते हैं। कोई स्थायी नित्य दण्ड नहीं हैं। स्वर्ग का जीवन ही नित्य हैं। परलोक का जीवन विशेष उद्देश्य को लेकर है। इस लोक से हमें अपनी आजीविका के लिये परिश्रम करना पड़ता है। हम काम करते हैं और अनेक झंझट करते हैं। इस पार्थिव शरीर से बन्धे हुवे हमें इसे

खिलाना होता है। कपड़ों का प्रबन्ध करना होता है। जब यह बिगड़ जाता है तो डाक्टर का प्रबन्ध करना होता है। हमें दुलत्तियां लगती हैं और हम चुपचाप दुखी होते हैं और सहते हैं। हमारे काम की कदाचित् ही क़दर की जाती है। हमारे आदर्शों को बहुत कम समझा जाता है। और पद पद पर हमें कठिनाइयां मिलती हैं। हमारे मार्ग में कांटे बिछे रहते हैं। किन्तु स्वर्ग में कोई कष्ट नहीं है, कोई यन्त्रणा नहीं है, जीवन वहां पर नित्य मानसिक आनन्द है। वहां कोई छुट्टी नहीं मनाता वहां काम ही छुट्टी है। आत्मिक शरीर को न भोजन पदार्थ चाहियें न पेय। वहां न निद्रा की जरूरत है न आराम की। रात्रि के यथार्थ अर्थों में वहां कभी रात्रि नहीं होती। वहां का जीवन नित्य सुखदायक सेवा का चक्र है। प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वरीयनियम मालूम है, और वह प्रसन्नता पूर्वक खुशी २ उसका पालन करता है। वहां पर कोई अदालतें नहीं हैं, कोई पूंजी पति नहीं हैं न आपकी आत्मा और शरीर का शोषण करने वाले हैं। यह एक प्रसन्न संसार है क्यों कि वहां प्रत्येक व्यक्ति अपने आदर्शों पर किसी की कृपा या डर के बगैर चल सकता है। वहां डाक्टरों का यह काम है कि जो व्यक्ति इस संसार में असाध्य रोगों से बहुत समय तक कष्ट पाते रहे हैं उन्हें अच्छा करना, क्यों कि उनके लिये इस लोक के जीवन के प्रभावों को भुलाना कठिन होता है। वहां पर कोई अंजन या भाप से चलने वाले जहाज़ नहीं हैं। लम्बी

यात्राएँ आंख झपकने पर तय करली जाती हैं। सन्देश भी विचारों द्वारा ही भेजे जाते हैं और प्राप्त किये जाते हैं, और इनमें ज़रा भी देर नहीं लगती चाहे कितना भी फ़ासला हो। परलोक में कोई चाँद या सितारे दिखाई नहीं देते वहां प्रकाश ही प्रकाश है। वहां केवल एक सड़क है और वह परमात्मा के पास पहुँचाती है। वहां शिक्षक और प्रचारक निरन्तर शिक्षा देते हैं, और प्रार्थना करते हैं, और प्रत्येक आत्मा स्वाभाविक रीति से उन्नति करती रहती है। प्रत्येक को अपना प्रारब्ध मालूम है। आत्माओं की शक्तियां हमारी शक्तियों से हज़ार गुणा अधिक हैं। उन्हें तर्क करने में परिश्रम नहीं पड़ता। उनका तर्क स्वाभाविक है। वहां पाखंडी नहीं हैं। आत्माओं का चरित्र उनके आत्मिक शरीरों पर मोटे अक्षरों में लिखा है। उनमें परस्पर धोखा नहीं चल सकता। वह बड़े प्रसन्न हैं। सारे संसार के स्वामित्व के बदले में भी कोई परलोक गत आत्मा जिसने स्वर्ग का आञ्चल भी छू लिया है, वह इस थकाने वाले और भयंकर ससार को आना पसन्द न करेंगी।

वहां पर जो लोग उच्च जीवन की अभिलाषा करते हैं उन्हें उपन्यास पढ़ना अच्छा नहीं लगता। हमारा आजकल का काल्पनिक साहित्य हमें क्या देता है? अति निकृष्ट दर्जे की प्रेम कथाएँ जिनमें हास्य और मुहावरे का अभाव है। उसका सब निकम्मा मसाला साधारण पाठक के मूर्खता पूर्ण सन्तोष के लिये घड़ा गया है।

जब एक लेखक मित्र ने जे० एच० साईमन्स का उपन्यास "विवाह की प्रतिज्ञा का अन्त" मेरे हाथों में दिया मैंने उसे बहुत बुरा माना। किन्तु मुझसे उसके पढ़ने का अनुरोध किया गया। और उसे पढ़कर मुझे खेद नहीं हुवा। कभी २ उपन्यास किसी उच्च शिक्षा के प्रतिपादन के लिये किसी खास उद्देश्य से लिखे जाते हैं। उपरोक्त उपन्यास इसी प्रकार का है। ग्रन्थ कर्ता ने उसके ऊपरी पृष्ठ पर एक नोट में कहा है कि 'पाठकों को इस कथानक को अविश्वसनीय नहीं समझना चाहिये। यह ऐसा नहीं है। अनजान में उन्हें असम्भव को वास्तविक घटना मान लेने के भाव को जो हम सबको हो जाया करता है, परे हटा देना चाहिये, जब कोई बात ध्यान में न बैठने वाली मालूम होने पर पहिले पहल हमारे ध्यान में आती है, यह बात परलोक-वाद के विद्यार्थी को प्रकट ही है।

कहानी के तीन प्रधान पात्र हैं एक वैज्ञानिक, एक पादरी, और एक ग्रामवासी जिसे बहुत सी मालगुजारी देनी होती है। वैज्ञानिक दलील करता है कि 'यह संसार जड़ प्रकृति से बना है जिसका गाढापन (Density) और प्रकम्पन अलग २ हैं। इसकी शक्तियों के काम को समझने के लिये प्रकृति के समतुलन को विचलित करना होगा।" वह अपने दोनों मित्रों को प्रयोगशाला में ले जाता है और उन्हें अभिमान पूर्वक अपने जीवन भर के परिश्रम का फल दिखलाता है। मशीन से लगे हुवे चबूतरे पर लकड़ी का एक लठ्ठा रक्खा है। एक बटन दबाया जाता है और

मशीन भयङ्कर तेज़ी से चलने लगती है, लकड़ी का गट्ठा गायब हो जाता है। वह उन्हें समझाता है कि कोई भी चीज़ इसी प्रकार ग़ायब की जा सकती है किन्तु यदि ज़रूरत हो तो वह फिर दिखाई दे सकती है, इसके लिये प्रकम्पों को तत्काल कम कर देना होगा। यदि प्रकम्पों से जड़ प्रकृति में ऐसे परिवर्तन हो सकते हैं, तो मनुष्य के शरीर में भी ऐसे परिवर्तन किये जा सकते हैं। प्रत्यक्ष में मनुष्य के दो शरीर हैं—स्थूल शरीर और इस बाहर के ढाँचे के अन्दर कोई सूक्ष्म शरीर। यह सूक्ष्म शरीर केवल ऊँचे दर्जे के प्रकम्पनों की दशा में ही क़ायम रह सकता है। उसके मित्र चकित हो जाते हैं, जब वह यह प्रस्ताव करता है कि मैं इस चबूतरे पर जो मशीन से लगा हुवा है खड़ा होता हूँ, जो मैंने ईजाद की है। और दूसरे लोक की स्थिति जानने के लिये जाता हूँ। वह अपने विज्ञान के तरीके से यह पक्का विश्वास रखता है कि मृत्यु कोई वस्तु नहीं है।

मित्रों से कहा जाता है कि वह मशीन को चलावें ताकि वह कुछ समय के लिये ग़ायब हो जावें और परलोक में अपनी खोज कर आवें। वह अपनी पहली यात्रा करता है।

हमें बताया जाता है कि वह किस प्रकार हवाई मोटर में ले जाया जाता है। दूसरा संसार इस संसार की एक बड़े पैमाने पर दूसरी नक़ल है। शयनागार वह जगह बयान की जाती है जहाँ आत्माओं का स्वागत किया जाता है। जब वह दूसरे लोक को जाती हैं तब एक शिक्षा स्थान भी है। जो आत्म हत्या

कर बैठते हैं, उन्हें सुधारने के लिये भिन्न भिन्न लोकों के सुपुर्द किया जाता है। जो इस लोक में अपना चरित्र और बुद्धि उन्नत कर लेते हैं वह अपना कार्य समान जातीय वातावरण में अधिक सुगमता से चला सकते हैं। हवाई यातायात की किसी दुर्घटना के बगैर कड़कड़ाहट, प्रचुरता में स्वास्थ्य, युवावस्था का नित्यत्व रंगों का परस्पर मेल, सुन्दरता का बाहुल्य, जल्दी २ परिवर्तन, विचारों का उभार, चलने फिरने की स्वतन्त्रता, आत्मिक प्रेम, विवाह संस्कार का अभाव, क्षुद्रता और विषय वासना का अभाव, गन्दगी का अभाव, आशातीत तीव्रता, कार्य में प्रसन्नता, समान स्वभाव वालों का समानों की ओर आकर्षण, आत्मिक राग, रासायनिक ज्ञान की अगाधता, यह सब कुछ परलोक की विशेषताएँ हैं।

परलोक की स्थिति का वर्णन करने में लेखक ने अति रंजिकता से काम नहीं लिया है। उसने अगणित परलोक से प्राप्त सन्देशों को होशियारी से कथा के रूप में संगठित कर दिया है। वह वास्तविक बातें हैं उन्हें अस्वस्थ दिमाग़ की बेसिर पैर की कल्पनाएँ कहकर अस्वीकार नहीं करना चाहिये। इस कथा से शिक्षा मिलती है कि वैज्ञानिक अज्ञात संसार में जाकर ज्ञान वृद्धि के लिये और मनुष्य समाज के कल्याण के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर देता है। ग्राम का आदमी अपनी प्यारी स्त्री को स्वर्ग में मिलने की इच्छा से दबा न सका

और दुर्घटना वश प्राण छोड़ देता है या आत्म हत्या कर लेता है। खाली पादरी साहिब बच जाते हैं। उनका अज्ञात में विश्वास कमज़ोर और लड़खड़ाता हुवा है। अब नये अनुभवों ने उनके मानसिक भावों को विकसित किया है और उनके सोये हुवे विश्वास को जाग्रत और शक्ति सम्पन्न किया है जैसा कि 'सर आर्थर कानन डायल' कहते हैं "जड़वाद ही संसार के सब दुखों का कारण है, और यदि हम इसे नहीं रोकेंगे तो इससे भी अधिक आपत्तियां आवेंगी। हमें मनुष्यों को यह अनुभव कराना चाहिये कि हमारे चारों ओर एक वास्तविक अदृश्य संसार है और उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिये हमें २००० वर्ष पीछे जाने की ज़रूरत नहीं है। एक बार हमारा सम्पर्क उससे हुवा कि हमें उसके परिमाण का ठीक अन्दाज़ा हो जाता है और हम समझ जाते हैं कि मुकाबले में हमारे वर्तमान कष्ट और दुख कितने लघु हैं और हमें शानदार भविष्य का निश्चयात्मक ज्ञान हो जाता है, केवल विश्वास मात्र नहीं, यदि हम अपने उच्चतम आदर्शों का पालन करते हैं। हमारा उद्देश्य जनता के मन को एक विषय से दूसरे विषय की ओर अनजाने में बहजाने से उकसाना है। "परलोक-वाद" को उसे अधर्मी, भ्रष्ट, अवैज्ञानिक, कपट पूर्ण या मूर्खता बताना यह केवल सचाई का मान घटाना ही नहीं है, प्रत्युत उस दैवत्व को अस्वीकार करना है जो मनुष्य में है। धर्म जीवन में है न कि जनता के सामने पूजा का प्रदर्शन करने में।

"परलोक-वाद" जो कि जड़वाद का विपरीत करण है; परमात्मा और परमात्मा की सेवा का प्रचार करता है। उसका सिद्धान्त है "जीवन को त्यागो" जीवन से प्रयोजन हमारा जीवन के खिलौनों से है।

जब हम उन समालोचकों का विचार करते हैं जो इस विज्ञान के वास्तविक रूप को न जानते हुवे अन्धेरे में उस पर प्रहार करते हैं तो हमें सुक्रात के जीवन की अन्तिम कहानी याद आ जाती है। अपने समय के सबसे उच्च कोटि के सदाचार शिक्षक पर एथनस के युवकों के आचार के बिगाड़ने का आरोप लगाया और उसे प्राण दण्ड दिया गया। किन्तु सत्य अपने बहादुर प्रचारकों की भस्मी पर उन्नति करता है।

अब तक हमने मोटे तौर से अन्य लोगों का वर्णन किया है, अब हम इसमें जरा गहरा उतरना चाहते हैं। ऐसा करने के लिये हम अपने को ऋषि राम राम की शिक्षाओं तक ही परिमित रक्खेंगे, जो कि कोयम्बतूर के आत्मिक चिकित्सा केन्द्र (Spiritual Healing Centre) के परलोक-वासी अधिष्ठाता हैं और जिनके हम इसलिये आभारी हैं कि उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। हम ऋषि राम राम की शिक्षाओं को इतना महत्व क्यों देते हैं। इसका कारण यह है कि उनकी शिक्षायें बहुत स्पष्ट और यथार्थ हैं। और वह एक अत्यन्त उन्नत आत्मा द्वारा प्राप्त होती हैं जिसका प्रधान कार्य ही परमात्मा द्वारा आयोजित विकास क्रम के अनुसार ऊँचे दर्जे के परलोक-वाद का

प्रसार करना है।

हम अपने पाठकों से श्रीराम राम का जीवन चरित्र पढ़ने का अनुरोध करेंगे जिसे कोयम्बतूर के आत्मिक चिकित्सा केन्द्र ने प्रकाशित किया है। उसी से उन्हें इस महान् आत्मा के इह-लौकिक जीवन का पूरा वर्णन और उनकी शिक्षाओं का पूर्ण ज्ञान हो सकेगा।

कहते हैं कि केन्द्र में बैठने वाले व्यक्तियों की बड़ी भारी इच्छा थी कि उन्हें इन महान् आत्मिक गुरु के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हो जो २००० वर्ष पूर्व शरीर धारी थे। एक माध्यम में जो कि चित्रकार नहीं था राम राम का आवेश हुवा और वह उनका चित्र बना सका। उसका ब्रुश कैनवास (Canvas) पर अपने आप चलता था। उसने नन्द का हूबहू (यथार्थ) चित्र बना दिया जिस नाम से कि वह अशोक महान् के शासन काल में प्रसिद्ध थे।

कहा जाता है कि २२३७ वर्ष हुवे उत्तरी भारत के सागरी ग्राम में नन्द का जन्म हुआ था। भारत वर्ष में प्राचीन काल में राजा लोग धार्मिक भाव के होते थे और उनके दरबार में विद्वान् पंडित रहते थे जो अदालती मुआमलों में उनके मार्ग प्रदर्शन का काम करते थे। अशोक सबसे बड़ा राजा था जो भारतवर्ष के तख्त पर बैठा। नन्द ने एक बार अशोक को मृत्यु मुख से बचाया था इसलिये वह राजवैद्य बना दिये गये। अपने इहलौकिक जीवन में वह वैद्य थे और वह अब भी परलोक से रोगियों को

चंगा करने का कार्य करते हैं । और परलोक की अन्य आत्माएँ उनका नाम बड़े सन्मान और भय से लेती हैं, इससे मालूम होता है कि सब परलोक वासी उनका बड़ा सम्मान करते हैं ।

जब आत्माएँ इहलोक के निवासियों से वार्तालाप करती हैं तो वह उन लोगों के अनुभव बताती हैं जिसमें वह रहती हैं । उनके लोक से परे के लोकों का उन्हें कुछ ज्ञान नहीं होता । ऋषि राम राम की शिक्षाएँ और ज्ञान सम्पूर्ण संसार से सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि बहुत उच्च आत्मा होने के कारण उन्हें परलोक में सबसे उच्च स्थान मिलता है ।

मनुष्य की बनावट तथा अन्य लोकः—

यह भूलोक (पृथ्वी) स्वप्न का संसार है । यह प्रायः बदलता और लोप होता रहता है । यह संसार माया, झूठ, धोखे और दुख से भरा है । यह संसार तीन परिमाणों का अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से युक्त है । यह परलोक की छाया है । हमारे चारों ओर जो विश्व व्यापक है उसकी सुन्दरता और प्रताप को जानने के लिये हमें यह अनुभव करना चाहिये कि परमात्मा ने अपनी अपार महिमा से मनुष्य को ऐसा बनाया है कि दिखाई देने वाले स्थूल शरीर के अतिरिक्त उसमें अदृश्य शरीर भी हैं, जिनके द्वारा वह दृश्य जगत् में रहता हुवा भी दूसरे लोकों में काम कर सकता है । यह अदृश्य शरीर अदृश्य लोकों से सादृश्य रखते हैं—अर्थात् वायव्य लोक, दिव्य लोक, मानसिक लोक और आध्यात्मिक लोक ।

कोयम्बतूर के एक प्रयोग में नीचे लिखा हुवा एक प्रश्न पूछा गया था। "हमारे एक से अधिक अदृश्य शरीर हैं। इसको प्रमाणित करने के लिये क्या प्रमाण पेश किये जा सकते हैं, कि प्रत्येक जीवित मनुष्य के एक से अधिक शरीर हैं ?"

निम्नलिखित उत्तर मिला था:—

"अदृश्य शरीर स्थूल नेत्रों से चाहे दिखाई न दें, उनका अस्तित्व उनके प्रभाव से स्थूल शरीर के प्रभावित होने से मिलता है। ईथर (Ether) का अस्तित्व उसके लहराने वाले प्रकम्पों से प्रकट होता है। अदृश्य वायु स्थूल वस्तुओं को अपने चलने के वेग से गिराकर अपना अस्तित्व प्रकट करती है। मानसिक और दैविक शरीर जीवित शरीरों को चलाने फिराने और चेतना देने से अपना अस्तित्व प्रकट करते हैं। आध्यात्मिक स्तर अपना अस्तित्व जीवों को ज्ञान का आधार बनाकर अपना अस्तित्व प्रमाणित करता है। आत्मा स्वतः सिद्ध ज्ञान स्वरूप है, मनुष्य को इन स्थितियों का साक्षात् प्रत्यक्ष परा-समाधि में होता है।"

उपरोक्त सारपूर्ण वक्तव्य से स्पष्ट हो जायगा, जब हम भिन्न २ शरीरों का विश्लेषण करने का प्रयत्न करेंगे, और उन भिन्न २ लोकों का वर्णन करेंगे जिनसे उनका सम्बन्ध है।

बहुत समय हुवा जब सेन्ट पाल (St. Paul) ने कहा था कि एक प्राकृतिक शरीर (स्थूल शरीर) है, और हम अपने सांसारिक व्यवहारों में पांच कर्मेन्द्रियों से काम लेते हैं। किन्तु

इस स्थूल शरीर के अतिरिक्त मनुष्य का एक सूक्ष्म शरीर है जो वायव्यद्वितीय शरीर के नाम से प्रसिद्ध है। संस्कृत में इस शरीर का नाम प्राणमय कोष है प्राण का अर्थ जीवन शक्ति या जीवनदाता शक्ति है। यह शरीर प्रत्येक अंग के स्थान में दूसरे अङ्ग के रूप में ठीक वैसा ही है जैसा कि स्थूल शरीर। यह वायु या (Ether से) बना है और बहुत आवश्यक है। यह दैवी शरीर और स्थूल शरीर को मिलाने वाली कड़ी है। जब यह कड़ी टूट जाती है तो यह समझा जाता है कि मनुष्य मर गया, यह वायव्य शरीर वायव्य जगत् से सम्बन्धित है। स्थूल शरीर को हम बाह्य वस्त्रों से उपमा दे सकते हैं। जिसे मनुष्य उतार फेंकता है, जबकि स्थूल शरीर का विगठन होता है।

आशा की जाती है कि हमारा विज्ञान वायव्य शरीर के गुणों के सम्बन्ध में बहुत सी खोज कर सकेगा। सच बात तो यह है कि हमारे वैज्ञानिक द्वार पर पहुँच चुके हैं और वह जान रहे हैं कि उनको विश्व की जड़वादिक-धारणायें परमाणु, ईथर आदि की खोज के आगे ढ़ीली पड़ती जा रही हैं यह अत्यन्त सूक्ष्म और अदृश्य भाग प्रकृति में अद्भुत कार्य कर रहे हैं।

श्री राम राम अपने एक सन्देश में कहते हैं:—"वायव्य शरीर अदृश्य शरीरों का मोटा रूप है। आगामी विज्ञान इस वायव्य शरीर के गुणों और बनावट के सम्बन्ध में अध्ययन करेगा यह मनुष्य के ऊँचे शरीरों और स्थूल शरीर के बीच

जोड़ने वाली कड़ी है। इसके गुण कई हैं। यह फूल की तरह नरम बनाया जा सकता है, या चट्टान की तरह सख्त बन सकता है। विचार को एकत्र करने से इसे जैसा रंग और रूप चाहें दे सकते हैं। जब स्थूल शरीर के किसी भाग से इसे पृथक कर दिया जाता है तो वह भाग ठण्डा और निकम्मा हो जाता है। (जब डाक्टर आपरेशन करते हैं तो वह सुंघाने वाली औषधि द्वारा थोड़ी देर के लिये वायव्य शरीर के कुछ भागों को कुछ समय के लिये परे हटा देते हैं। यह वायव्य शरीर पतले छिद्र मय मादे के साथ प्राकृतिक घटनाओं के प्रदर्शन के लिये लचकदार पदार्थ बन जाता है। जब यह वायव्य शरीर शरीर की नसों और पट्ठों के साथ ठीक नहीं बैठता तो जीवन शक्ति का प्रवाह रुक जाता है और नाड़ी के रोग, बेहोशी, अङ्गों का मुड़ना तुड़ना आदि रोग हो जाते हैं।

आत्मा के शरीर केवल स्थूल और वायव्य ही नहीं हैं, प्रत्युत विश्व के स्तरों के अनुसार दिव्य, मानसिक और आध्यात्मिक भी हैं जो एक दूसरे के साथ सटे हुवे हैं। जब हम सो जाते हैं तो अपने सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल देह को छोड़ सकती है और दिव्य लोकों में जा सकती है, शरीर के इस अस्थायी विच्छेद से कुछ नहीं होता केवल जब आत्मा शरीर को स्थायी रूप से छोड़ देती है (जो कि किसी बिमारी या दुर्घटना के बाद होता है) तो स्थूल शरीर मरा हुआ कहा जाता है। जब आत्मा शरीर में फिर प्रवेश करती है और मनुष्य प्रातःकाल जगता है तो उसे

रात्रि में हुवे दिव्य लोकों के अनुभवों का कुछ ज्ञान नहीं होता किन्तु यदि सूक्ष्म शरीर जिसे पाल (Paul) ने आध्यात्मिक शरीर कहा है, उन्नत होता है तो अदृश्य जगत भी दिखाई देता है और वहाँ का शब्द सुनाई देसकता है। दिव्य-दृष्टि, दिव्य-शब्द श्रवण आदि दिव्य शरीर की उन्नतावस्था के भिन्न २ रूप हैं।

अब हम वासना शरीर और वासना जगत का वर्णन करते हैं। दूसरा अदृश्य शरीर काम शरीर या वासना शरीर कहलाता है। "यह शरीर साधारण वासनाओं के प्रभाव से भी बहुत अस्थिर रहता है। डर, क्रोध, दुःख, घृणा का इस शरीर पर प्रभाव पड़ता है जो अनेक जन्म जन्मान्तर द्वारा बना है। इसे सर्व इच्छा रहित और सव अवस्थाओं में दृढ़ बनाना चाहिये (Spiritual Healing) पन्ना २१-२२ उपरोक्त उद्धरण एक आत्मा के सन्देश से है। और इससे प्रकट है कि वासना शरीर-इच्छा शरीर है और उसको शुद्ध बनाना बड़ा आवश्यक है। यदि आत्मा को वासना जगत की नीचे के भाग की यातनाओं से बचाना है। पवित्र आत्मा में दैवीज्ञान का उदय होता है "ज्यों ज्यों वासना शरीर पवित्र होता जाता है उस पर उच्च प्रभावों की सम्भावनाएँ बढ़ती जाती हैं। वासना शरीर जितना ऊँचा होगा उतना ही वह संसार में उच्च प्रभावों द्वारा जीवन शक्तियों का संचार करेगा।

आत्मा की उन्नति वासना शरीर की उन्नति है, शुद्ध शाकाहारी भोजन, सच्चरित्रता, ऊँचे आन्तरिक विचार स्वार्थ त्याग युक्त

भावना से दूसरों की सेवा में जीवन बिताना, प्रार्थना, ध्यान यह वासना शरीर को अपने कर्म बन्धनों से मुक्त कर ऊँचे लोकों में लेजाने में सहायक हैं। जैसा कि हमने ऊपर कहा है, आत्मा को दिव्य जगत् की झांकी मिल सकती है जबकि वह स्थूल शरीर में भी बन्द है। दिव्य दृष्टि द्वारा आत्मा सब रुकावटों को पार करके दिव्य जगत् को देख सकती है। सच तो यह है कि मनुष्य अभ्यास द्वारा सब शरीरों द्वारा काम कर सकता है। यह उसकी उस उन्नत अवस्था पर निर्भर है जहां तक कि वह त्याग के जीवन द्वारा पहुँच सका है। हमने यहां त्याग शब्द का अर्थ उस विस्तृत अभिप्राय से किया है जिसमें थियासोफिस्ट लेते हैं—अर्थात् "संसार में रहते हुवे भी संसार का होकर न रहना"।

यह दिव्य जगत् क्या है? कई महात्माओं की सम्मति में दिव्य जगत् के स्तर हैं? जब आत्मायें हमसे वार्तालाप करती हैं तो वह लोकों के भिन्न २ नम्बर देती हैं जिससे विचार में गड़बड़ होती है, वासना जगत् से आगे ऊँचे लोक हैं जिनको मानसिक और आध्यात्मिक लोक कहा जाता है और जिनकी बाबत हम आगे वर्णन करेंगे। बहुत भारी गड़बड़ी मची जब एक आत्मा ने कहा कि वह १६ वें लोक में रहती है और उसने सब विश्व का वृत्तान्त नीचे लिखे मुताबिक दिया।

"नं० १ लोक बड़े पापियों के लिये है। नं० २ कम पापियों के लिये है। नं० ३ उनसे भी कम पापियों के लिये है। नं० ४

उन्नति करने वाले भले पुरुषों के लिये है। ५ वां तुम्हारे लिये नया है। छठा लोक पांचवें से थोड़ा ऊँचा है। ७ वां उससे भी ऊँचा। ८ वां बहुत अद्भुत है। ९ वां अद्भुत है नई २ वस्तुओं से भरा है। दसवां नया लोक है, आत्माओं को और अधिक आश्चर्य चकित करने के लिये। ११ वां लोक बहुत उन्नत आत्माओं के लिये है। १२ वां सर्वथा आश्चर्य जनक है। १३ वां मनुष्य विचार से परे हैं। १४ वां १३ वें से भी परे है। १५ वां १४ वें से भी परे है। १६ वां परमात्मा के लोक के पास है।

हो सकता है कि उपरोक्त १६ लोक दिव्य जगत् के अन्तर्गत लोक हों जिसका एक भाग नर्क और एक भाग स्वर्ग है। या दिव्य जगत् के ७ लोकों का वर्णन करने के बाद, आत्मा ने दूसरे लोकों का भी वर्णन किया हो (मानसिक जगत् और आध्यात्मिक जगत उनके भागों सहित)

श्री राम राम की निम्नलिखित शिक्षा भिन्न २ लोकों के प्रश्न पर प्रकाश डालती है (Spiritnal Healing के पृष्ठ ३७-३८ देखो)

"लोक एक चक्कर में डालने वाला शब्द है। इस मुआमले को आसानी से समझने के लिये इसे सारे जगत् से मुकाबला करो। सूर्य मध्य में है। अनेक तारागण केन्द्र से भिन्न २ दूरी पर हैं। यदि तारागण के स्थान में चक्र का घेरा ही तारागणों की सामग्री से भर जाय तो कई इकट्ठे चक्र हो जावेंगे जो देव

केन्द्र से अपनी २ दूरी के लिये आश्रित हैं। दैवी केन्द्र से और परे का पदार्थ भी स्थूल है और प्रकम्प धीरे हैं इसलिये भिन्न २ लोकों के जीवों के लिये एक दूसरे का देखना कठिन है इसलिये आप समझ सकते हैं कि लोकों से आशय विश्व में एक "निश्चित केन्द्र से अलग २ स्थिति से है।"

"हम लोकों का वर्णन पृथक २ वर्गीकरण के लिये करते हैं न कि किसी भौगोलिक स्थिति के लिये—क्योंकि वही जगह भिन्न २ लोकों में हो सकती है। विश्व का जैसा संगठन है उसके अनुसार साधारण मनुष्यों को लोकों की बात समझाना बड़ा कठिन है, किन्तु एक बार आप यह धारणा करलें कि भिन्न २ मोटाई के कई लोक एक दूसरे में सटे हुये हैं तो यह बात तुम्हारी समझ में आ जायगी। ध्यान में इस मुआमले को बैठाना सम्भव नहीं है।"

दिव्य-जगत् (Astral World) दो विभागों में विभक्त है, ऊपरला और निचला। नीचे के लोकों में अलग २ दर्जे के पापी रहते हैं, ऊपर के लोकों को स्वर्गलोक से मुक़ाबला कर सकते हैं। क्योंकि वह ऐसा संसार है जहां अच्छी आत्मा ऊपर के लोक प्राप्ति के लिये प्रकृति के विकास में उन्नति कर सकती है।

जैसा कि धार्मिक पुस्तकों में लिखा है ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे दोज़ख़ (नर्क) में स्थायी रूप से अग्नियों का जलना। न ही दूध और शहद की नदियां हैं। न हि स्वर्ग में स्वर्ण और जवाहरात के बाज़ार हैं यह ऊपर के और नीचे के लोकों के

सुख और दुख को वर्णन करने के सांकेतिक शब्द मात्र हैं।

दिव्य-जगत् बिना पदार्थ का ४ परिमाणों का जगत् है। हमारे इस भौतिक जगत् में ३ परिमाण लम्बाई, चौड़ाई और गहराई हैं। किन्तु दृष्टि से परे जो लोक हैं उनमें आत्माएँ चौथे परिमाण में घूमती हैं। सत्य बात तो यह है कि यह चौथा परिमाण ही उनका पहिला परिमाण है क्योंकि उन्हें तीन परिमाणों की जरूरत ही नहीं रहती जिनमें हम काम करते हैं अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई और गहराई।

चौथा परिमाण अन्तर्प्रवेश की शक्ति द्वारा ही जाना जा सकता है. जिसका सम्बन्ध अदृश्य, अभौतिक लोकों का पदार्थों से है। लोक सब एक दूसरे के अन्दर सटे हुवे हैं और आत्माएँ सब रुकावटों के अन्दर से जा सकती हैं। उनकी प्रगति में कोई रुकावट नहीं होती। हम पृथ्वी पर आगे जा सकते हैं, ऊपर जा सकते हैं और आर-पार जा सकते हैं। किन्तु आत्माएँ पहाड़ों के आर पार जा सकती हैं और वायु मण्डल में कितनी ही ऊँचाई तक उड़ सकती हैं। क्योंकि वह अपनी घनता को या प्रकम्पों को बदल सकती हैं। ऊँचे लोक की आत्मा नीचे के लोक में आ सकती हैं क्योंकि उनकी शक्तियां अधिक हैं किन्तु नीचे के लोक में रहने वाली आत्मा ऊँचे लोक को नहीं चढ़ सकती है। जितना ऊँचा लोक होगा, उतना ही उसका परिमाण होगा।

पांचवां परिमाण आत्म-विस्तार (Transprogression)

कहलाता है—अर्थात् आत्मा इच्छानुसार घूम सकती है। एक सितारे से दूसरे सितारे तक, एक मण्डल से दूसरे मण्डल तक, जैसा कि मानसिक जगत् में होता है। जिसका वर्णन हम आगे करेंगे। ठीक २ समझने के लिये यों समझिये कि आत्म-विस्तार से हमारा आशय उस शक्ति से है जिससे हम अपने को एक दूर रखी हुई वस्तु तक जब चाहें तब पहुँचा सकें परन्तु वास्तव में हमें वहां जाना न पड़े।

परलोक में समय और जगह का भी प्रश्न नहीं है। जैसे २ ऊँचे लोकों में गति होती जाती है वैसे ही गुप्त और सुषुप्त शक्तियां प्रकट होती जाती हैं।

लैडबीटर (Eadbeater) साहब ने अपनी पुस्तक "मृत्यु का दूसरा पहलू" में सर हमफ़री डेवी (Sir Hompbrey Davy) का निम्न अनुभव का वर्णन किया है। उन्होंने नाईट्रैस आक्साईड (एक प्रकार का विष) सूंघ लिया और मूर्छित हो गये। जब वह होश में आये तो उन्होंने अपना अनुभव इस प्रकार बयान किया:—

'विचारों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। संसार प्रभावों विचारों, सुखों, दुखों का मिश्रण है" यह बिल्कुल सत्य है।

दिव्य जगत् में विचार और विचारों के रूप ही हमें कष्ट, सुख, यातना या आनन्द देते हैं। यहाँ वासनायुक्त जीवन बिताने से परलोक में वह दुख का कारण बनजाता है। यह दिव्य दृष्टि के प्राप्त होने पर देखा जा सकता है जो चौथे परिमाण की दृष्टि

है जो सब भौतिक रुकावटों को पार कर जाती है।

श्री रामराम कहते हैं:—तुम्हें दिव्य दृष्टि यौगिक क्रियाओं से प्राप्त होती है, जिनसे नीचे के ५ चक्र जो मनुष्य शरीर में हैं, उन्नत होते हैं। यह ५ चक्र दिव्य दृष्टि को खोल देते हैं जिससे दिव्य लोकों का साक्षात् ज्ञान होता है और सब दिव्य जीव दिखाई पड़ते हैं।"

जब मनुष्य दिव्य जगत् में जाता है 'यह बिल्कुल विचित्र नया जीवन नहीं होता' जो उसे बिताना होता है। वास्तव में यह इह लौकिक जीवन का ही सिलसिला होता है। जैसा कि लैड बीटर कहते हैं। "मनुष्य इस लोक में रहता हुआ अपना बिस्तरा तैयार करता है और यहाँ से जाने के बाद उस पर लेटता है" उसका व्यक्तित्व नहीं बदलता। उसमें वही बुद्धि, शक्तियाँ और गुण अवगुण रहते हैं जो भूलोक में रहते हुवे उसने पैदा किये हैं। जीवन विचारों के संसार का अधिकाधिक जीवन बन जाता है। यदि वह ईर्ष्या, घृणा और लालसा युक्त पुरुष था। और उसने जीवन केवल शारीरिक वासनाओं की पूर्ति में ही बिताया। अथवा वह शराबी, विषयी, कंजूस और मनुष्य घातक रहा है तो इस संसार की आकांक्षाएँ और इच्छाऐं और उनको शान्त करने की असमर्थता उसके लिये दुखदायी बनजाती हैं। वह सांसारिक सम्बन्धों को बुरी तरह चिपटा रहता है और जब तक पश्चाताप और अफसोस उसको पकड़े रहते हैं उसका दिव्य जगत् का जीवन यूनान देश की कहानियों के टैंटालस या सिसीफस

सरीखा होता है। जिन को उसमें इहलौकिक जीवन में हानि पहुँचाई उनकी मूर्तियाँ उसे घेरे रहती हैं किन्तु जैसे इस संसार में हमारे सहायक हैं, परलोक में रक्षक फरिश्ते हैं जो दिव्य जगत् के इन पापियों के निवास स्थानों में उतर आते हैं और यहाँ के निवासियों तक आशा और प्रसन्नता की किरण पहुँचाते हैं। पश्चाताप और अफसोस प्रकट करने से ही वह बचाये जा सकते हैं और उन्हें फिर इस लोक में अपने कर्मों के ऋण से मुक्ति प्राप्त करने को भेजा जाता है।

उच्च दिव्य लोकों में जीवन अत्यन्त स्फूर्ति, शान्ति और प्रसन्नता का जीवन होता है। शारीरिक बन्धनों से अवाधित मनुष्य के सामने परलोक में अपनी उपयोगिता जारी रखने के लिये खुला क्षेत्र होता है। इस लोक में सरहद नहीं हैं। एक समान व्यक्ति एक दूसरे की ओर खिंचते हैं। भाषा की कठिनाई दिव्य जगत् में भी चलती है क्यों कि यह भूलोक और मानसिक जगत् के बीच में है। आत्माएँ जातियों और धर्मों के हिसाब से इकट्ठी नहीं रहती, बल्कि सम्मिलित लाभ (intrest) के अनुसार।

टोलियाँ जाति या धर्म के अनुसार नहीं बनतीं, बल्कि एक सी भावनाओं के अनुसार। सब व्यक्ति जो इकट्ठे वहाँ जाना पसन्द करते हैं मुसलमान, हिन्दू, बुद्ध, भिन्न २ धर्म रखते हुवे भी इकट्ठे पूजा करने जाते हैं। बहुत से हिन्दू और मुसलमान ईसामसीह की सलीब पर ईसाई आत्माओं के साथ प्रार्थना

करते हैं। यह आत्माएँ अपने आन्तरिक विश्वास के अनुसार कार्य करती हैं जो सांसारिक जीवन में जाति बन्धनों से जकड़ा हुआ था। यहां मानसिक विश्वास प्रत्येक आत्मा के लिये खुले हैं, और आन्तरिक विश्वास से अलग कोई बाहरी दिखावा नहीं है। इसलिये सबका एक सा विचार एक सा विश्वास और पुराने सम्बन्ध के कारण बहुत सी आत्माएँ इकट्ठी होजाती हैं। देखिये, जैसे किसी स्कूल या यूनिवर्सिटी में क्या होता है ? एक ही उद्देश्य से बहुत से व्यक्ति जाति और धर्म अलग २ होने के बावजूद इकट्ठे होते हैं। सब का एक ही ध्येय होने से वह मिल जाते हैं। यही हाल उच्च लोकों में है। (Spiritial Healing पृष्ठ ४२) जैसा कि (Leadbeater) लैड बीटर साहिब कहते हैं "दिव्य जीवन कुछ व्यक्तियों के लिये सुखदायी है, अन्यों के लिये दुखदायी है—जैसी जिसने तय्यारी की है उसी के अनुसार। किन्तु इसके पीछे सबके लिये प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार पूर्ण सुख है। (Life after death पृष्ठ १६) दूसरी मृत्यु तब होती है जब आत्मा दिव्य लोक से ऊँचे लोक को जाती है। अब आत्मा मानसिक लोक में जो परमात्मा का मानसिक लोक है—अर्थात् विचारों का लोक, उसमें पहुंच जाती है। भौतिक जगत् में हम भौतिक पदार्थों को वास्तविक समझते हैं, किन्तु वह परछाईं मात्र हैं। आन्तरिक विचार, दूसरों की सेवा, किसी बदले की इच्छा के बगैर काम करने का हमारा पवित्र भाव ही उच्च आनन्द का उत्पादक होता

है, जब हम दिव्य जगत् को, अपनी इच्छाओं और भावनाओं के मल को फूंक कर छोड़ देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक प्याला छोटा या बड़ा रहता है और वह हमारे निःस्वार्थ भावों की गहराई के मुताबिक जो इहलोक और दिव्य लोक में रहे हैं, अपरिमित आनन्द के सागर से भरता रहता है।

लैडबीटर (Leadbeater) साहिब कहते हैं "वह विचार जो उसके चारों ओर मंडलाते हैं, वह शक्तियां हैं जिनके द्वारा वह स्वर्ग की सम्पत्ति को अपनी ओर खींचता है। और वह इसे ऐसा अटूट भण्डार पाता है कि जिससे वह अपने विचारों और अभिलाषाओं के अनुसार (जो उसने भौतिक और दिव्य जीवन में पैदा की हैं) लेता रहता है। उसका सब प्रेम और भक्ति अब परिणाम पैदा करता है क्योंकि और कुछ अवशेष नहीं बचा है। सब स्वार्थ मूलक और ग्राहक वासनायें 'वासना-जगत्' में छूट गई हैं" (The life after deat- Page24) कला, राग, प्रकृति का प्रेम यह आत्मा के प्रवेश की खिड़कियां हैं, और शब्द और रंग का संसार उसके लिये बड़ा मोहक मकान है, जिसने इन उत्तम गुणों को संसार में प्राप्त किया है। मानसिक-लोक उत्पादक लोक है। श्री राम राम कहते हैं कि "मानसिक लोक उत्पादक स्फूर्ति का लोक है, और जगत् की सब सृष्टि और प्रत्येक जीवित वस्तु उसी लोक से आती है। इसलिये इसे "ब्रह्मलोक" कहते हैं। लाक्षणिक रूप में इसे ४ मुख वाले ब्रह्मा से बयान किया जाता है। यह चारों मुख ४

परिमाणों को बताते हैं और एक और मुख्य अलंकारिक रूप से कहा जाता है कि गुम हो गया है। मानसिक जगत् का पंचम परिमाण अन्दर की ओर फैला हुवा है, वह मानसिक लोक को और अर्न्तजगत् को अद्वितीय बना देता है। इस अन्दर के वढ़ाव में ही कर्मों के अचल नियमों का जन्म हुवा है जिन्हें धर्म शास्त्र कहा जाता है (Life of Ram Ram Page 46) राम राम की जीवन चरित्र-पृष्ठ ४६, अब हमें पता लग गया कि विचार और चित्त वृत्तियां ही ऐसी चीज़ हैं जो विचारणीय हैं। वह मनुष्य के दिव्य और मानसिक शरीरों में प्रकम्प पैदा करती हैं मनुष्य का तेज "उसके एक दूसरे से सटे हुवे उच्च शरीरों का बादल सदृश पदार्थ का बाह्य भाग है, जो इसके सबसे छोटे स्थूल शरीर से बाहर निकला रहता है"। लैड बीटर साहिब ने इस मानसिक शरीर का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है वह कहते हैं कि "मानसिक शरीर बड़ा सुन्दर है। इसके परमाणुओं की कोमलता और तीव्र गति इसे सजीव रंग बिरंगे रूप देती है, और यह सुन्दरता अत्यन्त चमकीली और आकर्षक बन जाती है जैसे कि बुद्धि अत्यन्त अधिक उन्नत होती है और विशेष पवित्र और ऊँचे विषयों में लगती है। प्रत्येक विचार तत्सम्बंधी प्रकम्प इस शरीर में उत्पन्न करता है और साथ ही अद्भुत रंगों का प्रकाश होता है, ठीक जैसे जल प्रपात में जबकि सूर्य की किरणें उससे टकराती हैं, जिससे वह ६ रंगों का हो जाता है और उसमें चटकदार कोमलता आजाती है। दिव्य-द्रष्टा को

प्रत्येक मनुष्य के विचार अदृश्य नहीं हैं वह वाह्य तेज के रूप और रंग से मालूम हो जाते हैं। क्रोध से लाल रंग पैदा होता है। प्रेम और प्रीति गुलाबी रंग पैदा करते हैं स्वार्थी या पशु, प्रेम किरमजी रंग पैदा करता है। निःस्वार्थ प्रेम जो किसी बदले या पारितोषिक की इच्छा के बगैर दान करता है, कोमल गुलाबी रंग पैदा करता है। बुद्धि पीला विचार का रूप पैदा करती है और इसी प्रकार और।

आध्यात्मिक लोक ब्रह्माण्ड में आत्मा की यात्रा का अन्तिम लक्ष्य है, यह अधिक ठीक होगा कि हम आत्मा का शब्द छोड़कर उन्हें केवल जीव (Souls) कहें जो ब्रह्माण्ड के इस सबसे ऊँचे निवास स्थान में पहुँच जाते हैं। कुछ लोग इसे देवलोक कहते हैं। ऋषि राम राम ने इस सबसे ऊँचे लोक की ऐसी उत्तम और ठीक २ तस्वीर दी है कि यही अच्छा होगा कि हम उसे ज्यों का त्यों लिख दें। वह कहते हैं कि "मनुष्य की भाषा इस लोक का पूरा या ठीक २ ध्यान नहीं करा सकती। इसका कोई परिमाण नहीं है या यह कहना ठीक होगा कि इसके अनन्त परिमाण हैं। यह लोक यहां भी है, वहां भी है, प्रत्येक स्थान में है और कहीं भी नहीं है। यही आरम्भ है और यही अन्त है यह अत्यन्त छोटा है और सबसे बड़ा है। इसका प्रकट और अप्रकट दोनों रूप हैं। परन्तु स्वयं अत्यन्त अप्रकट है।

इस पवित्र और पावन लोक में ब्रह्माण्डों के विकास का संचालन करने वाली दैवी विभूतियां हैं। प्रकट लोक परम पिता

दयालु महा विष्णु, अल्लाह का निवास स्थान है। वही दैवी आत्मा भिन्न २ नामों से पुकारी जाती है। महान महा पुरुष इस लोक में संकल्प करता है और कार्य करता है। वही दैवी मनस है। आध्यात्मिक लोक-क्षीरसागर है जिस पर महा विष्णु अपनी अनन्त विभूतियों को लिये हुए विश्राम कर रहे हैं। यह लोक साधारण मनुष्यों की पहुँच से बाहर है किन्तु आवेशावस्था में बड़े भक्तों और महात्माओं के लिये खुल जाता है, जिन्हों ने अपने हृदय पवित्र किये हैं, और उन्हें प्रेम से भरा है। यह प्रकट लोक शृष्टि में सबसे ऊँचा है इसी को 'बैकुण्ठ' भी कहते हैं। यह पूर्ण सुख और आनन्द का प्रदेश है। इस प्रदेश से आध्यात्मिक लहरें कभी २ तुम्हारे भूलोक में आती हैं, और उन लहरों के शिखर पर दैवी अवतार होते हैं जिन्हों ने संसार को अध्यात्मता से प्लावित कर दिया है। श्री कृष्ण, ईसामसीह, बुद्ध भगवान और अन्य पैगम्बर बहुत सी ऐसी आध्यात्मिक शक्तियाँ हुई हैं जिन्हों ने स्थूल इन्द्रियों की माया में डूबे हुए संसार की सहायता करने के लिये मनुष्य देह धारण की है।

आध्यात्म लोक का अप्रकट और ऊँचा स्तर निर्वाणिक लोक है जहाँ पर सब अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वहाँ पर अस्तित्व का भी अस्तित्व नहीं है। आप लोगों की परिभाषा में इसे शिव लोक कहते हैं। यह लोक बहुत ही कम प्राणियों द्वारा प्राप्य है, ऊँचे लोकों के प्राणियों के लिये भी यह प्राप्य नहीं है। यह सृष्टि का सबसे शीतल रूप है सब प्रगति शील प्राणियों का

आरम्भ और अन्त है। बहुत थोड़े व्यक्ति इस लोक तक पहुँचना चाहते हैं जो सर्वथा अस्तित्वाभाव का लोक है (Life of Ram Ram pages 47, 48) सबसे ऊपर और ब्रह्माण्डों में व्यापक सर्वशक्तिमान, व्यापक, सर्वद्रष्टा, महान पुरुष हैं जिनको भिन्न २ धर्मों में भिन्न २ नामों से खुदा, हुर्मुजद, अल्लाह, महापुरुष, ईश्वर, दैवी शक्ति के नाम से जाना जाता है। वह सब लोकों में व्यापक है। नीच प्रकृति पाप और बुराई में भी उसकी सर्व व्यापकता स्वतंत्र और सर्वो-परि है।

इस अध्याय को समाप्त करने से पूर्व हम को उस नियम पर बल देना बहुत जरूरी है जो विश्व भर में व्यापक है। अर्थात् कारण और कार्य का नियम इस भौतिक संसार में काम कर रहा है और परमात्मा की वही व्यवस्था ऊँचे लोकों में भी काम करती है। दिव्य लोक में कर्म का नियम है, और मानसिक लोक में क्रिया और प्रति क्रिया का नियम है। निम्न लिखित उद्धरण श्री राम राम के जीवन से यहाँ देने योग्य हैं " इन ऊँचे लोकों में विनाश की क्रिया बहुत कम होती है। इस लिये प्रत्येक लघुविचार, प्रत्येक लघुभावना का उद्गार, प्रत्येक संकल्प हमारे व्यक्तित्व पर स्थायी चिन्ह छोड़ता है। मनुष्य का दिमाग चाहे भूल जाय किन्तु विचार मिटते नहीं। इसलिये यह धारणा करो कि इन ऊँचे लोकों में प्रत्येक छोटी घटना भी स्थायी रहती है। दिव्य लोक की घटनाएँ समय पाकर विलीन हो जाती हैं, किन्तु विचार नहीं जो कि स्थायी कृति है और ग्रहण करने वाले मे

पर उनका प्रभाव पड़ता है। तुम्हें याद रखना चाहिये कि मानसिक और दिव्य दोनों ही लोकों में ऐसे निवासी हैं जिनका भौतिक शरीर या भौतिक स्थिति कभी भी नहीं रही। मनुष्य ही केवल परमात्मा के रूप में संसार के कई लोकों के मेल से बना है। इसलिये मनुष्यों के लिये अधिक अवसर है कि दैवी व्यवस्था का पालन करते हुए शीघ्र उन्नति करें। मनुष्य नियमों के इस ज्ञान को उन्नति के मार्ग में शीघ्र प्रगति करने के लिये अपने काम में लाता है।

"तुम आध्यात्मिक लोक के साथ सम्पर्क में मनुष्य संगठन के उस आन्तरिक केन्द्र द्वारा आते हो, जिस प्राण का केन्द्र कहा जाता है तुम उसे अन्तरात्मा भी कहते हो। परमात्मा के ऊँचे से ऊँचे रूप तक पहुँचने के लिये इस केन्द्र को पवित्रता और प्रार्थना द्वारा सजीव करना चाहिये। जैसे प्रत्येक जीव भौतिक लोक से दिव्य लोक, दिव्य लोक से मानसिक लोक, और मानसिक से आध्यात्मिक लोक को क्रमशः अपनी क्रियात्मक स्फूर्ति द्वारा जाता है, वह परमात्मा को पहुँचने वाले मार्ग पर चल रहा है। इस व्यवहार में बड़े प्रयत्न की अपेक्षा है।

वास्तव में मनुष्य की उन्नति निरन्तर होती रहती है। जीवन और संसार की समस्या की कुञ्जी निरन्तरता में है।

अध्याय ६

पारलौकिक घटनाएं और परलोक से सम्बन्ध

प्रत्येक व्यक्ति परलोक से सम्बन्ध नहीं जोड़ सकता। यह प्रश्न प्रायः किया जाता है कि क्यों हम में से प्रत्येक को परलोक के अस्तित्व का सीधा प्रमाण नहीं मिलता। इसके लिये माध्यम की क्यों आवश्यक्ता है? जैसा कि सैंटपाल ने कहा है "प्रभु की दैन अलग २ है"। कवि, चित्रकार, वक्ता, गायक जन्म लेते हैं, वह बनाये नहीं जाते। प्रत्येक व्यक्ति शैक्स पीयर की तरह लिख नहीं सकता या बीथोवन (Beethoven) की तरह सङ्गीत नहीं बना सकता। माध्यमिक शक्तियाँ मनुष्य में गुप्त रहती हुई भी बहुत थोड़े व्यक्तियों में उन्नत होती हैं और यह शक्तियाँ भी भिन्न २ प्रकार की हैं। मूर्छागत माध्यम, दिव्य द्रष्टा, स्वयं लेखक, चिकित्सक तथा इसी प्रकार और। हम माध्यम शक्ति उसकी इच्छा, और इसके खतरों पर किसी दूसरे अध्याय में प्रकाश डालेंगे। यहाँ हम केवल पारलौकिक घटनाओं और परलोक गत व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध जोड़ने की रीतियों का वर्णन करेंगे।

सम्बन्ध जोड़ने के अनेक प्रकार हैं:—इनका विभाग (१) शारीरिक घटनाएँ और (२) मानसिक घटनाओं के रूप में किया जाता है। शारीरिक घटनाएँ—जैसा कि सशरीर दिखाई देना, आग पर चलना, बन्धनों से मुक्त होजाना, खटके करना, गाना,

ज्योति का प्रकाश, फोटो में प्रकट होना आदि हैं। आम प्रचलित मानसिक घटनाएँ यह हैं:—दिव्य दृष्टि वस्तु द्वारा व्यक्ति परिचय स्वयं लेखन, मूर्छा द्वारा सन्देश और चिकित्सा। यह समझना आवश्यक है कि आत्मा के प्रकट होने की क्रिया कैसे होती है? एलन कार्डक ने अपनी पुस्तक "अनुभवात्मक आत्मा का ज्ञान" में जिसका अंग्रेजी अनुवाद "एन्नाब्लैक वेल" ने किया हैं, आत्मा की उन्नति का उसकी मनुष्याकृति से लेकर उच्च लोक में उसकी सूक्ष्म स्थिति का बड़ा सुन्दर चित्र खींचा है। वह लिखते हैं "आत्मा सदैव एक लिफाफे या आत्मा के खोल से ढंपी रहती है, वह खोल उतना ही सूक्ष्म होता जाता है जितना कि आत्मा पवित्र होती जाती है, और अपने को उत्तरोत्तर पारलौकिक बिरादरी में उन्नति करती जाती है। आत्मा का और आत्मा के आवरण का मेल ऐसा ही जरूरी है जैसा कि आत्मा का और उसके आकार की भावना का हम एक के बगैर दूसरे का ध्यान ही नहीं कर सकते। आत्मा का खोल आत्मा का आवश्यक अंग है जैसा कि शरीर आदमी का मुख्य भाग है। किन्तु आत्मा का खोल ही आत्मा नहीं है जैसा कि शरीर ही मनुष्य नहीं है। आत्मा का खोल विचार नहीं करता। यह आत्मा के प्रति वैसा ही है—जैसा शरीर मनुष्य के लिये, यह आत्मा के काम का ओज़ार और एजेन्ट है। जब शरीर मर जाता है, तो आत्मा पर कोई असर नहीं होता वह दूसरे लोक को चली जाती है। वह सूक्ष्म द्रवित शरीर धारण कर लेती है। यह अर्ध-पार्थिव है।

आत्मा मादे पर काम कर सकती है और वह ऐसा अपने यन्त्र या एजेंट द्वारा करती है। जब आत्मा का द्रवित भाग मनुष्य शरीर के द्रवित भाग के साथ मिल जाता है तो पारलौकिक घटना दिखाई पड़ती हैं। जब ऐसा होता है तो जिसके द्वारा ऐसा होता है उसमें माध्यमिक शक्ति है ऐसा कहा जाता है। सब पारलौकिक घटनाएँ किसी शक्ति के क्रिया शील होने का फल हैं। जब मेज़ खटका देती है तो खटका माध्यम और चक्र में बैठने वालों से निकली शक्ति द्वारा दिया जाता है। किन्तु यह सत्य है कि वह शक्ति किसी उद्देश्य को लक्ष्य किये होती है और यह प्रमाणित करती है कि उसके पीछे कोई बुद्धि रहती है। हममें से प्रत्येक में एक पदार्थ रहता है जिसे एक्टोप्लाज़्म (Ectoplasm) कहते हैं। शरीर धारण कराने वाले माध्यम में इस पदार्थ को निकालने की शक्ति रहती है। और जब यह पदार्थ माध्यम के शरीर के छिद्रों-कान, मुँह, नयनों और सूँडी से निकलता है तो उसे मनुष्याकृति में ढाला जा सकता है—अर्थात् हाथ चेहरा या पूरा मनुष्य शरीर। शरीर धारण करने का अत्यन्त वैज्ञानिक वर्णन अपने समय के महान् रसायन—शास्त्री सरविलियम क्रुक्स ने दिया है, जिनकी साक्षी पर पूरा भरोसा किया जा सकता है।

वह कहते हैं कि "माध्यम कोठड़ी में दाखिल हुवा, और मूर्छित होगया। बड़े हाल में जो कि अन्धकार युक्त किया गया था मैं और अन्य बैठने वाले थे। गाने के साथ २ प्रार्थनामय वाता-

वरण था। सब लोग भयंकर शान्ति में बैठे थे, जिन घटनाओं के दिखाने की प्रतिज्ञा की गई थी, उनको देखने की भय पूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। माध्यम के शरीर में से ऐक्टोप्लाज़म निकलने लगा। धीरे २ उसका मनुष्याकार बन गया। मूर्तिमान 'केटी' कमरे में घूमने लगी और बैठे हुवे व्यक्तियों से परिचय करने लगी, पूरे दो घण्टों तक वह उनसे बातचीत करती रही। सरविलियम क्रुक्स कहते हैं, कि यह अनुभव करने के लिये कि वह कोई छाया नहीं है उन्होंने उसका शरीर छूने की अनुमति मांगी और वह उन्हें गर्म मालूम हुई, जब उन्होंने उसे अपनी बग़ल में लिया। तब वह उसकी कोठड़ी में गये, जहां पर माध्यम बेहोश पड़ी थी। केटी भी उस कोठड़ी में गई और माध्यम 'मिस एफ़. कुक' के पीछे सीधी खड़ी होगई जो कि अभी तक मूर्छित अवस्था में बेहोश पड़ी थी। जैसे ही हिलने जुलने का संकेत हुवा, 'केटी' ने क्रुक्स साहिब से कहा कि "दूर हो जावें' वह अदृश्य हो गई, और माध्यम अपनी मूर्छा से होश में आ गई। पादरी सी० ए० टवीडल ने अपनी पुस्तक "मनुष्यका मरणोत्तर जीवन" Man's Survival after death पृष्ठ ३३७ पर लिखते हैं। अन्त में ईसामसीह के सूली पर चढ़ाने के बाद बड़े चालीस दिनों में दिखाई देने के भिन्न २ वर्णनों को सावधानी पूर्वक विचारने और विचार करने पर मालूम होता है कि वह उनके दिव्य-शरीर के मूर्तिमान् होने के वर्णन हैं न कि उनके पार्थिव शरीर के दिखाई देने के। जो व्यक्ति इस अध्याय

में वर्णित घटनाओं का अनुभव रखता है और उनसे परिचित है वह कुछ अन्य विश्वास नहीं कर सकता जैसे गलेलियों (Galileo) के लिये अपनी दूरबीन से सावधानी पूर्वक देख लेने के बाद यह असम्भव था कि वह वृहस्पति के उपग्रह में या इस बात में अविश्वास करे कि सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है। यद्यपि इस प्रकार के आत्माओं के-प्रदर्शन अवाञ्छनीय हैं तो भी आत्मा का हाथ, चेहरा या पूरी शक्ल दिखाई देने से उन वैज्ञानिकों को मुँह तोड़ उत्तर मिला है जो आत्मा के और किसी भी प्रकाश को नहीं मानते थे। हाल के वर्षों में परलोक-वाद का विज्ञान इतनी अधिक प्रगति कर गया है कि आत्माओं के फ़ोटो लेना भी सम्भव हो गया है

आध्यात्मिक-फ़ोटो-ग्राफ़ी क्या है? यह प्लेट को प्रकाश देने के बाद उस पर कोई अतिरिक्त फोटो या अधिक फोटो शून्य में से आजाना है। यह अतिरिक्त फोटो किसी परलोक-गत मनुष्य या स्त्री का हमेशा ही पहिचाना गया है। जैसा कि और आत्मिक घटनाओं के सम्बन्ध में होता है। यह आत्मिक फोटोग्राफ़ी भी एक विशेष प्रकार के माध्यमों द्वारा आता है जिन्हें यह विशेष देन मिली है। सबसे अच्छे फोटोग्राफ़िक माध्यम मि० विल्यम होप (जिसकी "शा डेसमांड" बहुत तारीफ़ करते हैं) मिसिज़ बक्सरन दोनों ही क्रूके हैं, और मिसिज़ डीन लन्दन को हैं। अत्यन्त प्रसिद्ध वैज्ञानिक "सर विल्यम क्रुक्स" होप और क्रूक्स का वर्णन करते हुवे अपना एक निजी अनुभव

इस प्रकार देते हैं:—

मैं "क्रू" गया और उन माध्यमों द्वारा अपना फ़ोटो खिचवाया जिन्हें "क्रू सर्कल" कहते हैं। मेरा फ़ोटो बहुत अच्छा आया और उसी शीशे पर अच्छी प्रकार पहिचानी जाने योग्य तस्वीर मेरी स्त्री की मेरी बग़ल में आई। मैं प्लेटों का पैकेट लन्दन से अपने साथ जेब में लाया था। मैंने उन्हें अपने पड़ोस से ख़रीदा था और बिना खोला पैकेट जैसा का तैसा ले गया था। जब मैं मि० होप (फ़ोटो ग्राफ़र) के पास पहुँचा, मैं उसके साथ उसकी अंधेरी कोठड़ी में गया उसने मुझे लेजाना स्वीकार कर लिया। मैंने पैकेट स्वयं खोला और एक प्लेट निकाल कर उस पर अपने छोटे हस्ताक्षर किये। बाकी ११ प्लेटों को उसी क़ाग़ज़ में लपेट दिया जिसमें वह आई थी। तब मैंने निशान की हुई प्लेट डार्क स्लाईड में चढ़ा दी और उसे अपनी जेब में रख लिया। फिर हम उस कमरे में गये जहां मि० होप फ़ोटो खींचते थे। मैं १ कुर्सी पर बैठ गया, और जब फ़ोटो खींचने की सब तैयारी होगई तो मैंने डार्क स्लाईड उस महिला को दे दिया जो लन्दन से मेरे साथ आई थीं। और उन्होंने वह मि० होप को दे दिया। मि० होप ने केवल स्लाईड को कमरे में रखा और फिर वापिस उसी महिला को दे दिया, और उसने मुझे दे दिया, मैं उसे अन्धेरी कोठड़ी में लेगया और प्लेट को मसाले से स्वयं धोया। मैं कह देना चाहता हूँ कि मैं अनुभवी फ़ोटोग्राफ़र हूँ। मि० होप ने प्लेट के हाथ नहीं लगाया जब तक

कि तस्वीर को मैंने मसाले से दृढ़ नहीं कर दिया मैं उसे घर ले आया और उससे तस्वीर छापी। मैं अब समझता हूं कि यह अच्छी परीक्षा है। मैंने एक ही फोटो उतर वाया, मेरी बग़ल में कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया था। जो महिला मेरे साथ गई थीं उन्होंने किसी को नहीं देखा। मैं आपको तस्वीर दिखाऊँगा। प्रत्येक व्यक्ति जिसने तस्वीर को देखा है और जो मेरी स्त्री को जानता था (केवल मेरे सम्बन्धी और कुटुम्ब के आदमी ही नहीं) वह उस तस्वीर में उसकी तस्वीर पहिचानते हैं। उसका भाव वैसा ही है जैसा कि उसकी अन्तिम बीमारी में कमजोरी की दशा में था।"

हमने एक चोटी के समझदार वैज्ञानिक सर विल्यमक्रुक्स की उपरोक्त साक्षी सब की सब उद्धृत कर दी है।

"मनुष्य का मरणोत्तर जीवन" के लेखक चार्लस एल, ट्वीडल ने (जो ओटली के पादरी थे) एक पूरा अध्याय ही आध्यामिक फ़ोटोग्राफ़ी की साक्षियों का दिया है, और बहुत सी मिसालें नोट करने योग्य दी हैं। एक दो घटनाएँ हम उद्धृत कर सकते हैं:—

पादरी साहिब कहते हैं कि 'एक दिन उनकी स्त्री और उनका लड़का खाना खाने की मेज़ के पास बैठे थे। उनकी स्त्री को दिव्य दृष्टि थी उसने एक आत्मा को अपने पीछे चिपटे हुवे देखा, वह आश्चर्य में चिल्लाई। मैं फ़ौरन अपने पढ़ने के कमरे में गया और अपना कैमरा ले आया और अपनी स्त्री का फ़ोटो उस ओर

से लिया जिधर आत्मा थी। हम बड़े चकित हुये कि जब प्लेट मसाले से धोया गया वह तस्वीर मेरी स्त्री ने पहचान ली, उसे उसने देखा हुवा था। दिव्य दृष्टि का इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है? हमें मालूम हुवा है कि यह फोटोग्राफ़ "साईकिक-गज़ट' Psychic Guzette अप्रेल १९४६ में प्रकाशित हुवा है। दो और ग्रन्थकारों ने भी एक मि० हर्वर्ट कैरिंगटन ने अपनी पुस्तक "Modem Psychic phenomena" में प्रोफैसर (Coates) कोटस ने "Seeing the Invisible" (अदृश्यों को देखना) में प्रकाशित किया है। यही पादरी साहिब एक और निजी अनुभव बयान करते हैं जो बड़ा ही मनोरञ्जक है सर हीराम मैक्सिम (Sir Hiram Maximi) उनके एक मित्र थे। वह एक बड़े आविष्कर्ता मशहूर थे किन्तु मरणोत्तर जीवन के विरुद्ध उनके बड़े दृढ़ विचार थे। इसलिये दोनों मित्रों में एक समझौता हुवा कि यदि Sir Hiram जल्दी मर गये। और पादरी टूवीडल साहिब से अवस्था में अधिक होने के कारण यह सम्भव भी था कि उनके रहते वह परलोक चले जावें) तो वह अपने को प्रकट करें उन्होंने हँसी में कहा कि मैं आऊँगा और तुम्हें अपना कार्ड भेजूंगा। २४ नवम्बर सन् १९१६ को ७७ वर्ष की अवस्था में ३० नवम्बर गुरुवार को उनका देहान्त हो गया। ग्रन्थकार लिखते हैं कि "वह और उनकी स्त्री पारलौकिक घटना देखने को बैठे और उन्होंने पृथ्वी पर चलने का पाँव का भारी शब्द सुना। जब शब्दों के हिज्जे किये गये तो मालूम हुवा कि सर

हीटम अपने समझौते को पूरा करने, और आत्मा के मरणोत्तर जीवन की सच्चाई की घोषणा करने आये हैं । अपने अस्तित्व का और भी प्रमाण देने के लिये उन्होंने भविष्यवाणी की कि १००० पौंड उन्हें मिलेंगे। यह भी सत्य प्रमाणित हुवा जौलाई सन् १९१७ की एक प्रातःकाल, जब यह बात विल्कुल भूल गई थी ग्रन्थकार कहते हैं कि उन्हें मिस कैरोलीन के ट्रस्टियों की ओर से एक पत्र मिला (जिनकी मृत्यु फ़रवरी सन् १९१७ में हो चुकी थी) कि यह उनके नाम १०००) पौंड की वसीयत कर गई हैं कि यह रुपैया वैस्टन चर्च की उन्नति में लगाया जाय । कैसी सत्यता और यथार्थतापूर्वक सर हीराम ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। नहीं इससे भी और अधिक सर हीराम ने अपने मित्र 'मेजर क्लेरन्स कोली' से प्रतिज्ञा की थी जिसके साथ मरने से पहले उनका बहुत समय बीता था कि यदि मरणोत्तर जीवन है तो मैं तुम्हें मरने के बाद दिखाई दूंगा। यह प्रमाण उन्होंने दूसरे रूप में दिया। २३ जनवरी सन् १९१९ को 'मिस स्कैचर्ड (जो एश्याटिक रिव्यू की बुद्धिमान सहायक सम्पादिका थीं और जो मेजर कौली को भी जानती थीं) होप के स्टुडियों में गईं ताकि किसी आत्मा का फोटो लें। और उनकी इच्छापूर्ण हुई । जो फ़ोटोग्राफ़ आया उससे 'सर हीरम' की सुन्दर तस्वीर थी जिनको जीवन अवस्था में वह नहीं जानती थी न उन्हें "मेजरक्लैरन्स काली" के और उनके समझौते की बात मालूम थी। हमने आत्मा के फोटो के कई उदाहरण दिये हैं किन्तु निम्नलिखित घटना जिसका

वर्णन "जेम्स कोटस पी० एच० डी० एफ० ए० एस०" लन्दन की आध्यामिक सोसाइटी के सेक्रेटरी और अनेक पुस्तकों के रचयिता ने किया है, यह बहुत आश्चर्यजनक घटना है। इससे प्रमाणित होता है कि अदृश्य जगत से कितना कुछ प्राप्त हो सकता है. यदि वहां के व्यक्ति अपनी खुशी से हम इह लोक वासियों का समाधान करना चाहें न कि प्रयोगशाला में हमारे कहने से कुछ कहने पर।

"मि० हैनरी स्टेन्ड फ़ास्ट" (Mr. Henry Standfast) अमरीका में हाँडोरास के निवासी की स्त्री का १६०६ में ७२ वर्ष की अवस्था में परलोक-वास होगया। उन्हें नासूर का रोग था और बहुत शारीरिक कष्ट उठाने के बाद उनका देहान्त हो गया। उन्हें परमात्मा की ओर से आध्यात्मिक देन थी और अपने पति से बड़ा प्रेम था। उस विचारे के लिये वियोग असह्य हुवा और वह बहुत दुखित रहने लगे। "टूवर्ल्डस" (Two Worlds) में उन्होंने इङ्गलैंड के एक फोटोग्राफिक माध्यम मि० एडवर्ड विल्ली की बाबत पढ़ा। उन्होंने आध्यात्मिक पत्र के सम्पादक मि० जे० जे० मोर्स को अपनी स्त्री के मरने के दो वर्ष पीछे अपनी स्वर्गवासिनी स्त्री के बालों की लटों का एक पैकेट भेजा, और उनसे प्रार्थना की कि मैं माध्यम को नहीं जानता आप मेरी स्त्री के मरणोत्तर फोटोग्राफ़ के लिये उनसे बातचीत करें। उस दुखी व्यक्ति की स्त्री की आत्मा के आवाहन के लिये चिट्ठी और बालों की लट माध्यम के लिये पर्याप्त थीं। जिसका

अद्भुत परिणाम हुवा। उस स्त्री की दो फोटो आईं एक ७२ वर्ष की अवस्था का, जब उसका देहान्त हुवा था, और एक युवावस्था का फोटो एक ही प्लेट पर आया. और वही दुखी पति के पास सन्देश सहित भेजा गया, जिससे उसे बहुत उद्वेग और शान्ति हुई। उस मनुष्य के लिये जो जीवन के जंगल में अकेला छोड़ दिया गया था, कितना सन्तोष का विषय था और यह कितना सत्य है कि मृत्यु, जुदाई नहीं है, प्रत्युत शाश्वत जीवन की शृङ्खला में एक कड़ी है। हमारे अश्रद्धालु भाई कहेंगे कि "यह संयोग है और कुछ नहीं"। परमात्मा की इस विचित्र सृष्टि में कुछ भी संयोगमात्र नहीं है। और प्रभु के रहस्य उन्हीं इच्छुक हृदय और मनों पर प्रकट होते हैं जो सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक प्रभु के महत्व के लिये क्रियाशील हैं। सब जीवन के पीछे एक निश्चित नियम है।

पारलौकिक घटनाएँ थके हुवे और परेशान मन का भ्रम मात्र नहीं हैं। वह वास्तविक घटनाएँ हैं किन्तु वह अलौकिक नहीं हैं वह भी विश्व की घटनाओं में व्यापक हैं चाहे वह भौतिक हों या आध्यात्मिक। सब कुछ प्राकृतिक है। केवल परमात्मा ही अप्राकृतिक है। चीजें आने की घटनाएँ इतनी अद्भुत हैं कि वह अलिफ़ लीला की कहानियां मालूम होती हैं आत्मा की बुद्धि हैरान रह जाती है। 'एप्पर्ट' (Apport) शब्द फ्रान्सीसी भाषा का है जिसका अर्थ लाना है कभी २ वस्तु एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जाती है जैसे जीते पक्षी, सिक्के

मछली, मूंगे के दाने, मिट्टी की टिकियां और ऐसीही अन्य वस्तु। एक ठोस शरीर ठोस वस्तु में से आर पार हो जाता है और किसी गुप्त रीति से बन्द कमरे में भेजा जाता है। इस क्रिया को शरीर त्याग और शरीर ग्रहण क्रिया कहा जाता है। "शांडेसमंड" (Sbandesmond) इसका वर्णन बड़े तीव्र तरीके से करते हैं। 'एप्पर्ट' कोई ठोस वस्तु होती है, किसी भी रूप में या तो अवश्य जगत के रसायनिक तय्यार करके बन्द कमरे में पहुँचा देते हैं। या पृथ्वी के किसी दूसरे भाग से लाई जाती हैं। दोनों दशाओं में वह ऐसे तरीके से आती हैं जो अभी तक कुछ समझ में नहीं आता।

एप्पर्ट का माध्यम बन्द कमरे में और लोगों के साथ बैठता है। आश्चर्य है कि कोई वस्तु वहाँ कैसे आ जाती है। या तो वह ठोस चीज अपना पदार्थत्व भाव त्याग कर ठोस चीज़ में से गुज़र जाती हैं और फिर यथावत् हो जाती है। या वह ठोस चीज़ अपना घनत्व त्याग कर उसको अन्दर आने देती है। जब 'मैडम बैलबटास्की (Madam Balbatsky) ने एक घटना का वर्णन किया कि एक हिन्दुस्तानी दुशाला बन्द कमरे में दीवारों के अन्दर से उसके पास पहुँच गया तो उनका मज़ाक और हँसी उड़ाई गई। किन्तु 'ब्रिटिश कालेज आफ़ साईकिक साइन्स' (British College of PsychicSaince) की याददाश्तों में पक्षियों, कीड़ों और गरम और जीवित पशुओं के मिलने पर पर्याप्त प्रमाण हैं। कभी २ केवल वायु में से सुगन्ध और तेल छत में

बन्द कमरे में डाली जाती हैं। तब गायब होने वाली वस्तु भी हैं। सुगन्ध की बोतल एप्पर्ट के तौर पर आती है। माध्यम उसे छूता है और वह गायब हो जाती है।

मैं एक निजी बहुत विचित्र अनुभव यहाँ बयान करना चाहता हूँ मैं इङ्गलैंड से घर लौट रहा था। बम्बई में मैंने किश्ती छोड़ी और एक बड़ी नाव में बैठ गया, क्यों कि मुझे करांची जाना था और मुझे वह किश्ती पकड़नी थी जो दो तीन घंटे में जाने वाली थी। मैंने कुछ देना था और मैं हैरान रह गया जब मैंने बटुवे में से १० पौंड का नोट नहीं पाया जिसे मैंने बड़ी सावधानी से बटुवे के एक खाने में रख दिया था। जहाज़ की कोठड़ी के नौकर को बुलाया गया और उससे कहा गया कि कोठड़ी में तलाश करे कहीं वह वहां न गिर गया हो। मेरे पास एक मित्र बैठे थे उनसे कहा गया कि बटुवे को फिर से देखें। शायद घबराहट में मुझे नोट न मिला हो किन्तु नोट का कहीं पता न था। उसे खोया हुआ समझकर मैंने बटुवा अपने कोट की पाकेट में रख लिया। दूसरी किश्ती में प्रवेश करने के बाद मैंने अपना बटुवा फिर खोला। और मैं बहुत चकित रह गया कि १० पौंड का नोट बिल्कुल सामने की जगह में पड़ा था।

इटली में एक पुराना महल 'मारकिस कारलोडेई स्कोटो,' का है। कहा जाता है कि इस जगह चक्र करने से बहुत विचित्र बातें पैदा होती हैं। ऊपर उठाये जाने की क्रियायें होती हैं और सीधी आवाज़ सुनाई देती हैं। किन्तु सबसे बढ़िया बात

यह हुई कि इटालियन मारक्विस को बन्द कमरे में से उठाकर कई गज़ के अन्तर पर एक खालियान में फेंक दिया गया। उसे कैसे एक कमरे से नहीं प्रत्युत कई दूसरे कमरों में से (जिनके ताले लगे हुवे थे) किस प्रकार ले जाया गया। और अन्त में महल के बाहर के मकान में बिना ज़रा सी रगड़ के पहुँचा दिया गया। यह मनुष्य की समझ से बाहर की बात है। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना है। हवा में बिना किसी दिखाई देने वाले प्रत्यक्ष सहारे के शरीर को उठा देना एक और आध्यात्मिक घटना है जो एप्पर्ट से मिलती जुलती घटना है।

मेज़ में खटके होना एक अत्यन्त साधारण घटना है। कभी कभी मेज़ें और अन्य सामान ऊँचे हवा में उठ जाते हैं और वह लटकते रहते हैं और पृथ्वी के आकर्षण करने के नियम को रद्द करते हैं।

मास्टर आफ़लिंड से रायल सोसाइटी के फेलों और ज्योतिषी ने अनुसधान कारिणी कमेटी के सामने गवाही देते हुवे कहा "मैंने विक्टोरिया स्ट्रीट में ऊपर उठाये जाने की क्रियाओं को देखा जबकि होम खिड़की से बाहर उड़ाया गया वह पहिले मूर्छित हो गया और बड़ी घबराहट में इधर उधर घूमने लगा, तब वह बड़े हाल में गया। जब वह चला गया तो एक आवाज़ मेरे कान में धीरे २ कह रही थी। वह एक खिड़की से बाहर जायगा और दूसरी से लौट आयेगा। ऐसे ख़तरनाक तजरुबे के विचार से मैं डर गया। मैंने अपने साथियों से जो कुछ सुना था कह

दिया और हम होम की वापसी की प्रतीक्षा करने लगे (थोड़ी देर के बाद उसने कमरे में प्रवेश किया मैंने खिड़की को ऊपर जाते सुना। वह खिड़की में से चित्त पड़ा हुआ बाहर गया, और फिर मैंने उसे दूसरे कमरे की खिड़की के बाहर हवा में उड़ते हुवे देखा। वह जमीन से ८५ फुट ऊँची थी। खिड़की के आगे कोई बरामदा नहीं था। सिर्फ १॥ इञ्च की कानिस थी।

"सर विल्यम क्रुक्स" ने इसी माध्यम होम के साथ अपने अनुभवों की बाबत लिखा है "तीन अलग २ अवसरों पर मैंने उसे कमरे के फ़र्श से बिल्कुल ऊपर उठे देखा है। एक बार एक आरामकुर्सी में बैठे हुवे, एक बार कुर्सी पर घुटने टेककर बैठे हुवे और एक बार खड़े हुवे। प्रत्येक अवसर पर मुझे पूरा मौका इस घटना को देखने का दिया गया था जबकि यह हो रही थी। बैल फ़ास्ट (Balfast) की "मिस कैल्थटीन गोल्ड पर एक और ऐसी माध्यम हैं जिनमें उठाने की अद्भुत शक्ति है। जब वह किसी मेज़ को उठाती है तो मनुष्य की कोई भी शक्ति लगाने से वह अपनी पूर्व स्थिति में नहीं जाती। सरविल्यम बैरट ने अपना अनुभव इस माध्यम के साथ बयान करते हुवे यह स्वीकार किया है कि मेज़ जब उनकी उपस्थिति में उठाई गई तो उन्होंने मेज़ को नीचे बिठाने का बहुत प्रयत्न किया और जितनी उनमें शक्ति थी वह लगाई, और अन्त में उसे नीचे बिठाने में हारकर उन्होंने कूद कर उसके ऊपर बैठना चाहा किन्तु उन्हें परे फेंक दिया गया। तब मेज़ उल्टी होगई और

जब वह नीचे आगई तो मुझसे कहा गया कि उसे ऊपर उठावें। मैंने पूरा प्रयत्न किया, किन्तु मेज़ १ इंच भी नहीं हिली। उन्हीं के शब्दों में 'वह गोया पेच द्वारा फ़र्श में जड़ दी गई थी'। एक कमेटी फ़ाक्स बहिनों की जड़ वस्तुओं को उठाने की शक्ति की परीक्षा करने के लिये बनाई गई थी कि वह देखकर रिपोर्ट करे। प्रातःकाल कुछ भी नहीं हुआ और कमेटी के बुद्धिमान सदस्य बड़े खुश थे। उन्होंने सुन्दर भोजन की आज्ञा दी और फाक्स बहिनों को भी निमन्त्रण दिया गया। वह सर्वथा मुर्झाई हुई थीं। उनकी जो हँसी उड़ाई जा रही थी उसको उन्होंने धीरता पूर्वक सहन किया। जब मज़ाक पराकाष्ठा को पहुँच गया तो कमेटी के प्रसन्न व्यक्तियों को बड़ी घबराहट हुई जब मेज़ खटके देने लगी और बुरी तरह चीखने लगी। वह तश्तरियों और प्लेटों सहित छत तक पहुँच गई। मज़ाक करने वालों का मज़ाक बन्द होगया। उन्हें एक अच्छी चपत लगी जिसके वह अधिकारी थे। और हमेशा बढ़ने वाले प्रमाणों के बोझ के बावजूद हमारी अविश्वासी दुनिया निष्क्रय रहती हुई, जिसे वह आध्यात्मिक बेहूदगी कहती हैं उससे अलग रहना चाहती है।

कवि ने कहा है कि मृत्यु सनातनत्व का पतवारिया है। किन्तु दुर्भाग्यवश धार्मिक शिक्षा के बावजूद जिसका समर्थन परलोक-वाद के विज्ञान ने कर दिया है कि 'मनुष्य मरणोत्तर जीवित रहता है,' अभी भी हमारे बीच में मज़ाक उड़ाने वाले नास्तिक अविश्वासी जड़वादी हैं जो भौतिक जगत की खट-पट

से परे देखने से इन्कार करते हैं। उनमें दृष्टि दोष है।

"डेनियल डौगलस होम" एडिनबरा में पैदा हुवे थे किन्तु उनकी बुवा ने उन्हें अमेरिका में शिक्षा दी और वहीं वह बड़े हुवे। वह इङ्गलैंड और अमेरिका दोनों स्थानों में माध्यम का काम करते रहे किन्तु इङ्गलैंड की ओर उनका ध्यान सब देशों से अधिक रहा। उन्हें प्रभु की बड़ी भारी देन थी। अच्छे से अच्छे वैज्ञानिक उनकी महान् शक्ति को मानते थे। सर विलियम क्रुक्स ने "साइकीकल रीसर्च सोसाइटी" (Psychical Research Society) की मीटिंग में १८९८ में उनकी बाबत कहा था। "जो लोग होम को जानते थे उनके लिये वह प्रेम करने के लायक व्यक्ति था और उसकी निष्कपटता और सचाई सब सन्देहों से ऊपर थीं।"

हमने इस आकर्षक और प्रभु द्वारा उपकृत व्यक्ति की माध्यम शक्ति द्वारा हुवे कुछ बहुत ही अनूठे प्रयोगों का वर्णन किया है किन्तु निम्नलिखित बयान जो प्रसिद्ध अंग्रेजी सालीसिटर W.M. Wilkinsan द्वारा दिया गया है, वह इतना अजीब है कि वह लेखक के अपने शब्दों में ही उद्धृत करने योग्य है:—

"............... हम आठ व्यक्ति थे जिन सबको मैं अच्छी प्रकार जानता था; और कुछ ऐसे थे कि जहां भी अंग्रेजी भाषा बोली जाती है वहां ही प्रसिद्ध थे। हम रीजैंट पार्क के कार्नर वैलटैरस के मकान के मुलाकात के कमरे में थे, और हम एक बड़ी मेज़ के चारों तरफ़ बैठ गये और बातें करने लगे।

बड़ी अद्भुत बात हुई कि जब एक व्यक्ति ने कहा कि प्रोफैसर फैरेडे अगले सोमवार को प्रयोग में आरहे हैं और विचार करते ही कि उसकी संरक्षक आत्मा आसानी से विश्वास नहीं होने देती, तत्काल इस तजवीज़ के समर्थन में मेज पर ऊँचे खटके दिये गये। मैं अपनी स्त्री के साथ ही दांई तरफ़ बैठा था। मेरे ठीक पीछे मेरी बांई टांग को ऐसी जगह किसी ने छुवा जहां मि० होम के लिये पहुँचना असम्भव था। फिर धीरे २ किन्तु गहरा प्रकम्प मेज, कुर्सियों और फर्श में होने लगा यहाँ तक कि सारा कमरा जोर से हिलने लगा जिसमें मेज ऊपर १० इञ्च उठ गई और प्रकम्प बराबर जारी रहा। जहाँ मि० होम बैठे थे उसके सामने की ओर से ऊपर उठने लगी। उनकी शक्ति से वह स्पष्ट बाहर थी कि उसे इस प्रकार उठावें। मि० होम की कुर्सी चुपचाप मेज से करीब ३ फ़ीट परे हटा दी गई, और जब वह वहां थे तो मेरी स्त्री के और उनके पास बैठी हुई दूसरी महिला के कपड़े खींचे गये और ऐसे जोर से कि मैंने उन्हें नीचे खिंचते हुवे देखा। मैंने अपनी स्त्री की पोशाक भी जब वह खींची जा रही थी, छूकर देखी, ऐसा करने में अद्भुत शक्ति खर्च की जा रही थी। इस समय मि० होम पूरे ६ फ़ीट भूमि से अलग थे और इतने अन्तर पर रहने से और पूरे तौर से सामने रहने से मैं यह अच्छी प्रकार देख सकता था कि वह उनकी किसी शक्ति से नहीं हो रहा था। मि० होम अपनी कुर्सी के पास एक बाजा अपने दांयें हाथ में थामे हुवे थे। बाजे की चाबियां ऊपर

की तरफ़ होने से उनकी पहुँच से बाहर थीं। यह बिल्कुल असम्भव था कि वह उन तक पहुँच सकें। मैंने बाजे को सावधानी पूर्वक देखा, बाजे की चाबियां थी उसके नीचे के तख़्ते को खोलकर देखा। मुझे मालूम हुआ कि वह एक साधारण बाजा है और उसकी चाबियां भी और बाजों जैसी हैं। उसके अन्दर कोई बात नहीं थी मैं टिकटकी लगाकर उसकी ओर देख रहा था, और उनके हाथ और उँगलियों को देख रहा था, जिससे वह थमा हुवा था। वह ऊपर नीचे मधुरराग छोड़ता हुवा जाता था। जबकि उनके हाथ और उँगली में कोई हरकत नहीं हो रही थी। मैं बाजे के ऊपर और नीचे जाते देख सकता था, उसके हरकत करने का कोई दृश्य कारण नहीं था। न राग उत्पन्न करने के लिये चाबियों को खुलने और बन्द करने का कोई कारण था। जब बाजा बन्द होगया तो मेरी स्त्री ने कहा कि क्या वह मेरे हाथ में नहीं बज सकता। और फ़ौरन ही बाजे में से तीन आवाज़ निकली, जिसका हमने यह आशय समझा कि वह प्रसन्नता पूर्वक प्रयत्न करेगा। इसलिये वह मेरी स्त्री को दिया गया। और जब वह उसको थामे हुवे थी उसने कहा कि 'कोई उसकी उँगली को छू रहा है" इसके ठीक बाद मेज़ बराबर फ़र्श से १ फुट ऊँची उठ गई। चूंकि मेरी स्त्री के हाथ में बाजे से कोई आवाज नहीं निकल रही थी उसने वह मि० होम को वापिस लौटा दिया, किन्तु वह तत्काल ही उनके हाथ से ले लिया गया, और मेरी स्त्री के हाथ में दे दिया गया

और वह बजने लगा। उसे स्पष्ट मालूम हो रहा था कि वह ऊपर नीचे खींची जा रही थी। और वह बाजे की चाबियों को नहीं छू सकती थी, जो कि शब्द करने के लिये जरूर खोली जाती थीं। मि० होम के हाथों में एक सुन्दर राग अब गाया जाने लगा। जिसे हमने सुना, जो कि प्रायः बयान किया जाता है कि पूरे ऊँचे स्वर धीरे २ कम होते गये यहां तक कि बहुत मध्यम स्वरों में वह समाप्त होगया। जल्दी २ तीन बार शब्द करके प्रतिज्ञा की गई कि बाजा एक राग इस लोक के जीवन का और दूसरा 'परलोक के जीवन' का गाये। पहिला गाना इस लोक का बेमेल था जो कि कान पर बहुत बुरा लगता था और जो मेरे विचार से इस लोक के साथ अन्याय करता था, क्योंकि यद्यपि इस संसार में सुधार की गुञ्जाइश है तो भी इसकी तह में बहुत सी बहुत सी एकता हैं। हमारे कानों पर बड़ी कृपा हुई कि पहिले जीवन का गाना बहुत देर तक नहीं चला और उसके बाद ऐसी आवाज आने लगी जो सुन्दर, नर्म और स्वर्गीय संगीत था जैसा मैंने कभी नहीं सुना था। यह कई मिनट तक बजता रहा और खूब उच्च स्वर में बढ़ता गया जिसकी मधुरता कान के लिये बड़ी मोहक थी। और धीरे २ उसका लय "घर-प्यारा घर" होगई।

मरणोत्तर जीवन का इससे अधिक उचित और आनन्द देने वाला दृष्टिकोण संगीत में क्या हो सकता था। और दोनों जीवनों के परस्पर सम्बन्ध पर कैसा मीठा उपदेश था। मुझे

विश्वास है कि जितने व्यक्ति भी वहां मौजूद थे उन्होंने इसे बड़ी शान्ति और धन्यवाद पूर्वक सुना। हममें से एक इतना बीमार था कि वह मृत्यु के मार्ग पर था उसे भी भविष्य जीवन की आशामई इच्छाओं से बड़ी प्रसन्नता हुई। उसकी उपस्थिति में यह पूछना कि 'परलोक-वाद' का क्या लाभ है कुफर होगा। ऐसा प्रश्न अच्छे आदमी को पैदा ही नहीं होगा और कोई बुद्धिमान पुरुष नहीं पूछेगा। केवल वैज्ञानिक जो मनुष्य की आत्माओं का माप गणित विद्या से करता है ऐसे मौके पर वर्णन करने योग्य नहीं है और यदि मैं अपने विचारों में निमग्न न रहता तो मुझे प्रसन्नता होती कि ऐसे किसी व्यक्ति ने हमें तंग नहीं किया।

किन्तु ऊपर की यह सब घटनाएँ—खटके, मेज़ का हिलना और ऊपर उठना, बैठने वाले के हाथों और कपड़ों को छूना, बाजे का अज्ञात रूप से बजाना विशेषतः 'दोनों जीवन' का राग जिनको बैठने वालों ने ऐसी अच्छी तरह सुना ऐसी हैं जिन पर दूसरे लोग हँस देते हैं। 'मैस्मिरिज़म और ईसाई विज्ञान की लेखिका "फ्रैन्क पौड मोर" ने अपनी पुस्तक 'नया परलोक-वाद' में संसार पर यह प्रमाणित करने का बड़ा प्रयत्न किया है कि बहुत सी पारलौकिक घटनाएँ भोले व्यक्तियों को धोखा देना है, जो प्रयोगशाला के अन्धकार में होश हवास भूल जाते हैं।

यह एक भी ऐसा उदाहरण उद्धृत नहीं कर सके जिसमें

होम साहिब के आदरणीय नाम के साथ सम्बन्धित घटनाओं में वह धोखा प्रमाणित कर दें। मि० होम को परलोक-वाद न मानने वाले समालोचक भी सच्चा व्यक्ति मानते हैं। धोखे का कोई निशान न पाकर वह यह कल्पना करते हैं कि किसी यन्त्र द्वारा या भूल में यह सब घटनाएँ होती हैं क्योंकि इनको विज्ञान द्वारा समझाया नहीं जा सकता। वह कहते हैं, "यही बात कि यह सब घटनाएँ अन्धेरे कमरे में होती हैं। और न दिखाई देने वाले व्यक्तियों द्वारा होती हैं। इससे वह परिणाम निकालते हैं कि यह सच्ची नहीं हैं।" वह यह अनुभव नहीं करते कि ज्योति (रोशनी) अलग २ करने वाला तत्त्व है, और पारलौकिक अधिकांश घटनाओं की सफलता ज्योति के अभाव में होती है। दो मौलिक बातों का घटनाओं में होना जरूरी है:—

अदृश्य जगत् के अदृश्य व्यक्ति और माध्यम। अदृश्य व्यक्ति जब वह चाहते हैं माध्यमों की आध्यात्मिक शक्ति और उनके शारीरिक संगठन द्वारा काम करते हैं। कैमिल फ़्लेमेरियन एक फ्रैञ्च वैज्ञानिक जो जोविसी (Jovisi) फ्रान्स की नक्षत्रशाला के अध्यक्ष हैं अपनी किताब "गुप्त आध्यात्मिक शक्तियां" में इटली की प्रसिद्ध किसान स्त्री योसापिया पैलाडीनो (Eusapia Palladino) नाम की माध्यम शक्ति द्वारा किये गये प्रयोगों के अनुभवों का वर्णन करते हैं। उनकी वैज्ञानिक विवेक शक्ति यह स्वीकार करती है कि घटनाएँ किन्हीं गुप्त शक्तियों के द्वारा घटित

होती हैं. और अधिकांश अवस्थाओं में वह बयान करते हैं कि माध्यम या किसी और व्यक्ति की ओर से धोखे का कोई भी चिन्ह नहीं रहता, किन्तु हमारे विद्वान् मित्र "फ्रैन्क पोडमोर" जिन्होंने इन घटनाओं को अपने नेत्रों से नहीं देखा है। बड़ी सादगी से उनकी समालोचना करते हैं और येन केन प्रकारेण इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यह घटनाएँ सच्ची नहीं हो सकतीं। यह मनोवृत्ति उन लोगों की है जो किसी भी दशा में इन बातों को मानने को तैयार नहीं हैं किन्तु ज्ञान की उन्नति, पक्षपात, हठ और कल्पनाओं द्वारा नहीं हो सकती। सत्य घटनाओं का सामना करना चाहिये, उनका अनुभव करना चाहिये और उनका स्वतन्त्र अध्ययन करना चाहिये। वह भ्रान्त चित्तों की भ्रान्ति नहीं है। आंखें मीचकर दौड़ना मूर्खता है। "सर आलीवर लाज," "सर विलियम क्रुक्स" जैसे उच्च कोटि के वैज्ञानिकों के तजरुबे और अनुभव, और ऐसे ही अन्य व्यक्तियों के अनुभवों को इस विज्ञान की प्रगति में नियुक्त करना चाहिए। जो मनुष्य जाति की भावी समृद्धि के लिये शुभ सम्वाद देती है।

सैयदहुसैन आतशी की कहानी जो बम्बई में १९२७ में बिना हानि पहुँचे आग के बीच में से चलने का दृश्य दिखाया करते थे, बहुतसों को मालूम है। वह दहकते अँगारों में से ही नहीं चलते थे, बल्कि दूसरों को भी अपने पीछे (बगैर किसी दुर्घटना के) चलाते थे।

मि० इवन्स ने अपनी किताब 'कैसे माध्यम बने' मि० डी०

डी० होम का उदाहरण दिया है जो दहकता कोयला अग्नि में से लेते थे और सम्पादक के सिर पर रख देते थे। चमकता हुवा कोयला उसके सफेद बालों में से जलता दिखाई देता था किन्तु उसे कोई हानि नहीं पहुँचती थी।

प्रयोग में ट्रम्पैट (trampet) द्वारा आत्मा को बोलते हुवे सुनना एक आम बात है।

कहा जाता है कि आत्माएँ आरम्भिक अवस्था में इस लोक के साथ खटकों द्वारा सम्बन्ध जोड़ती हैं। यह पारलौकिक घटनाओं का वास्तविक में प्रथम रूप है।

इन्हें परमात्मा का तार यन्त्र ठीक ही कहा जाता है। महान् अमेरिकन माध्यम मिस फ़ाक्स खटकों की घटना देने वाली प्रथम माध्यम थी। वह किसी वस्तु पर भी अपना हाथ रख देती थी—शीशे के टुकड़े पर फैली हुई लोहे की तार पर थियेटर के फ़र्श पर, दर्वाजे के किवाड़ पर, मेज के ऊपर, बड़ी ठोकरों का शब्द सुनाई देता था। सर विलियम क्रुक्स ने अपनी पुस्तक "परलोक-वाद की घटनाओं का अनुसन्धान" में "मिस फाक्स" की खटके करने की विचित्र शक्तियों का वर्णन किया है। हम प्रायः घरों में भूतों के रहने की बात सुनते हैं। दरवाजे और खिड़कियां खड़खड़ाते हैं, छत हिलती है, पत्थर फेंके जाते हैं। हवा शोर करती है और घर बुरी तरह से हिलने लगता है। यह छोटी कोटि की आत्माओं द्वारा किया जाता है, जो परलोक में शान्ति पूर्वक न रह सकने के कारण इधर, उधर उपद्रव करती

रहती हैं। मृत व्यक्तियों के लिये, उनके मन और आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करना मात्र ही हम उनके लिये कर सकते हैं।

एलन कार्डक (Allan kardce) ने अपनी पुस्तक (Spiritisim) (स्पिरिटिज़्म) में पेरिस के महल रुईडिस नायर्स (RueDes Noyers) में जून १८६० में एक बुरी आत्मा द्वारा उपद्रव होने की घटना की कथा लिखी है। वह रहने वालों पर पत्थर फेंकती थी और अनुसंधान कर्ताओं ने अपने माध्यम 'सैंट-लुई' द्वारा इस आत्मा से निम्नलिखित बयान प्राप्त किया जो प्रश्नोत्तर हुवे वह नीचे दिये गये हैं:—

१—क्या आप हमें कृपाकर बतलावेंगे कि जो घटनाएँ रुईडेस नायर्स में हुई बतलाई जाती हैं वह वास्तव में हुई हैं ? उनकी सम्भावना में हमें सन्देह नहीं है ?

(उत्तर) हाँ ! वह वास्तव में हुई। आम जनता की बुद्धि उनको बढ़ाकर बयान करती है। किन्तु वह वास्तव में आत्मा का काम है, जो घर में रहने वालों को तंग कर प्रसन्न होती है।

२—(प्रश्न) क्या घर में कोई व्यक्ति है जिसके कारण से यह सब घटनाएँ होती हैं ? (उत्तर) ऐसी घटनाएँ हमेशा उस आदमी की उपस्थिति के कारण होती हैं जिस पर (हमला) आक्रमण होता है। यह उस आत्मा की इस जगह रहने वाले जिस व्यक्ति के प्रति दुर्भावना होती है उसके कारण से होता है। और आत्मा का उद्देश्य उस व्यक्ति को तंग करना और घर से

भगा देना होता है।

३—(प्रश्न) हम यह पूछना चाहते हैं कि घर में रहने वालों में से कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह घटनाएँ अपने माध्यमिक प्रभाव के कारण करा सकता है।

उत्तरः—बिना ऐसे प्रभाव के यह घटनाएँ हो नहीं सकती थीं। आत्मा ऐसे मकान में रहती है जिससे उसे पूर्व प्रेम है उस समय तक वह शान्त रहती हैं। जब तक उसमें कोई माध्यम होने योग्य नहीं होता है। किन्तु यदि ऐसा व्यक्ति वहां आ जाता है तो आत्मा उसकी माध्यमिक शक्ति को जितना चाहती है काम में लाती है।

४-(प्रश्न) आत्मा जिन वस्तुओं को फेंकतीं है वह कहाँ से आती हैं?

उत्तरः—भिन्न २ वस्तुएँ जो इस प्रकार काम में लाई जाती हैं, आम तौर से उस जगह से ली जाती हैं। जहाँ यह घटना होती हैं या पास पड़ौस से ले ली जाती हैं। आत्मा में से निकलने वाली एक शक्ति उन्हें हवा में फेंकती है और वह वहाँ गिरती है जहां आत्मा चाहती है।

५—(प्रश्न) क्या तुम खयाल करते हो कि इस आत्मा को बुलाने से कोई लाभ होगा ताकि हम उससे कुछ प्रश्न पूछ सकें?

(उत्तर) यदि तुम चाहते हो तो बुलाओ, किन्तु वह छोटे दर्जे की आत्मा है जो तुम्हें अधिक जानकारी नहीं करा सकेगी।

आत्मा का आवाहन! तुम मुझे क्यों बुलाते हो? क्या तुम चाहते हो कि कुछ पत्थर तुम पर फेंके जावें? ऐसी दशा में

हम देखेंगे कि तुम सब रफू चक्कर हो जावोगे, यद्यपि तुम सब बहादुर मालूम होते हो।

२—हम डरेंगे नहीं, चाहे तुम हम पर पत्थर फेंको। हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि क्या वास्तव में ऐसा करना आपकी शक्ति में है ?

शायद मैं यहाँ ऐसा न कर सकूँ। तुम्हारा एक रक्षक यहाँ है जो बड़ी सावधानी से तुम्हारी रक्षा कर रहा है।

३—क्या 'हईडैस नायर्स' में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने उस घर के रहने वालों के साथ खेल करने में तुम्हारी सहायता की हो। निस्सन्देह मेरा एक बहुत बड़ा साधन था। और कोई बुद्धिमान और धूर्त्त आत्मा मुझे रोकने वाली न थी। क्योंकि मैं खुश-दिल हूँ और कभी २ खेल करना चाहती हूँ।

४—कौन व्यक्ति तुम्हारा साधन था ?

एक दासी !

५—क्या वह अनजान में तुम्हारी साथी थी।

ओह ! हाँ ! विचारी लड़की ! वह सबसे अधिक डरती थी।

६—क्या तुम यह सब कुछ दुर्भावना से करती थीं ?

मैं ? मेरी कोई दुर्भावना नहीं थी, किन्तु तुम मनुष्य प्रत्येक वस्तु पर इसलिये हाथ डालते हो कि उसे अपने उपयोग में लावें।

७—तुम्हारा क्या मतलब है ? हम नहीं समझे।

(उत्तर) मैं खेल करना चाहता था किन्तु तुम्हारी आत्माएँ

इसका अध्ययन कर एक और तथ्य यह प्रमाणित करने के लिये लेना चाहती थीं कि हम जीवित हैं।

८—तुम कहती हो कि तुम्हारी कोई दुर्भावना नहीं थी किन्तु उस कमरे की सब खिडकियाँ तोड़ दीं और यह हानि तुमने की।

उत्तर—यह तो थोड़ी सी बात है।

९—वह चीजें तुम्हें कहाँ मिलीं जो तुमने घर में फेंकी? वह आम तौर से मिलती हैं। मैंने वह आंगन में और पास के बाग़ से प्राप्त कीं।

१०—क्या सब वस्तु तुम्हें मिल गईं या कुछ तुमने बनाई थीं?

(उत्तर) नहीं मैंने कोई चीज़ नहीं बनाई।

११—यदि तुम्हें वह चीजें न मिलती तो क्या तुम उन्हें बना सकते थे?

(उत्तर) वह बहुत कठिन होता किन्तु हम वस्तुओं को इकट्ठी मिला सकती हैं और सब से एक चीज़ बना सकते हैं।

१२—(प्रश्न) अब हमें यह बतलाओ कि तुम उन्हें कैसे फेंकते थे?

(उत्तर) यह बतलाना बहुत कठिन है। मैं उस लड़की की बिजली की शक्ति अपनी शक्ति से जो कम भौतिक है, मिलाकर काम करता था। इस प्रकार हम इन चीज़ों को अपने बीच में फेंक सकते थे।

१३—मैं खयाल करता हूँ कि आप अपने सम्बन्ध में कुछ जानकारी हमें देने में आपत्ति नहीं करेंगे? पहिले तो हमें यह बताओ कि क्या तुम्हें मरे हुवे मुद्दत हुई?

(उत्तर) बहुत समय-पूरे ५० साल

१४—प्रश्न ! जब तुम जीवित थे तो क्या करते थे ?

(उत्तर) बहुत अच्छा काम नहीं करता था। इधर ही चीथड़े उठाने का काम करता था, लोग मुझे तंग किया करते थे; क्योंकि मुझे शराब पीने की आदत थी इसलिये मैं उन सबको मकान से भगाना चाहता था।

१५—प्रश्नः—क्या तुमने हमारे इन प्रश्नों के उत्तर स्वेच्छा से दिये हैं ?

(उत्तर) मेरे एक शिक्षक थे।

१६—(प्रश्न) कौन ?

उत्तरः—तुम्हारे अच्छे बादशाह लुई।

१७—(प्रश्न) अब तुम क्या कर रहे हो ? क्या तुम्हें कभी अपने भविष्य का भी ख़याल आता है ?

उत्तरः—अभी नहीं—मैं एक घुमक्कड़ हूँ। संसार में लोग मेरी बाबत बहुत कम सोचते हैं। कोई मेरे लिये प्रार्थना नहीं करता। मेरी सहायता नहीं की जाती, और इसलिये मैं भी प्रयत्न नहीं करता।

१८—(प्रश्न) जब तुम जीवित थे, आपका क्या नाम था ?

उत्तरः—जीनेट (Jeeniet)

१९—अच्छा जीनेट हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करेंगे।

"अच्छा हमें यह बतलाओ कि हमारे बुलाने से तुम्हें खुशी हुई या कष्ट ?"

उत्तर:—खुशी हुई। तुम कृपालु अच्छे व्यक्ति हो, यद्यपि कुछ अधिक बहादुर हो। तुमने मेरी बात सुनी है और मैं इससे प्रसन्न हूँ।

प्रायः छोटे दर्जे की आत्माएँ शान्त जीवन की शृङ्खला को भङ्ग करने के लिये उपद्रव करती हैं। किन्तु कभी कभी जब पृथ्वी पर रहने वालों को किसी आवश्यक बात की सूचना देनी होती है तो बहुत ऊँचे दर्जे की आत्माएँ भी भौतिक तरीकों को काम में लाती हैं।

"Experimantal spiritism" के कर्ता ने हमें एक बड़ी विचित्र कहानी सुनाई। वह कहते हैं, कई वर्ष हुवे कि जब वह स्पिरिटिज़म पर एक किताब लिख रहे थे तो उन्हें और उनके साथियों को जो इसमें दिलचस्पी रखते थे, भारी खटके करके घबराया गया जो कई घण्टे तक जारी रहा। वह एक लिखने वाले माध्यम के पास गये कि इस गड़बड़ का कारण मालूम करें। मालूम हुवा कि यह खटके एक बहुत ऊँचे दर्जे की आत्मा करती थी जिसने पृथ्वी पर रहते हुवे बड़ा उत्तम कार्य किया था, वह उन्हें बताना चाहती थी कि उस ग्रन्थ में कई ग़लतियां हैं। और उन्हें आवश्यक संशोधन बतला दे। इसके बाद आत्मा उनके कहने में थी और माध्यम द्वारा उसने बहुत आवश्यक सूचनाएँ कई आध्यात्मिक विषयों पर दीं जिनकी वह खोज कर रहे थे।

हम ऊपर भौतिक घटनाओं का वर्णन कर चुके हैं। अब

हम कुछ मानसिक घटनाओं का वर्णन करेंगे। यह स्वयं लेखन, आवेश लेखन, दिव्यदर्शन, दिव्यश्रवण, आत्मिक दिव्य वर्णन और आत्मिक चिकित्सा हैं। एक लेखक लिखते हैं कि "हम जितना अधिक आत्मिक घटनाओं का अध्ययन करते हैं उतना ही अधिक हमें विश्वास होता है कि हमारे अनुसन्धान के लिये अपूर्व क्षेत्र हैं। यह ऐसा विषय है जिसको सहानुभूति पूर्ण मनोवृत्ति से अध्ययन करना चाहिये किन्तु अपनी विवेक शक्ति को जवाब नहीं देना चाहिये। हमें तर्क शक्ति का त्याग किसी भी मौके पर नहीं करना चाहिये। जो कुछ भी अदृश्य जगत् से आवे उसे अंजील का वाक्य नहीं समझना चाहिये। हमें अपने विवेक और बुद्धि की कसौटी पर उसे कसना चाहिये। जैसा कि 'ईवन्स' साहिब कहते हैं "परलोक ऐसा महकमा नहीं है कि प्रत्येक बात के लिये अन्दर तलाश किया जाय। माध्यमिक शक्ति हमारी मदद के लिये है न कि हमारी साधारण शक्तियों का स्थान लेने के लिये। सच्चा परलोक वादी वह है जो परमात्मा द्वारा दीगई अपनी शक्तियों का दूसरों के कल्याण के लिये, दूसरों के हितों की वृद्धि के लिये काम में लावे, अपनी प्रशंसा के लिये नहीं। जब मन वास्तविक उन्नति कर जाता है तो अहंकार का विचार उसे कभी विघ्न नहीं करता। प्रार्थना अपने लाभ के लिये व्यक्तिगत दर्खास्त नहीं होनी चाहिये किन्तु दूसरों की कठिनाइयों में सहायता देने के लिये होनी चाहिये। वास्तविक परलोक-वादी का उद्देश्य मन की यही उच्च अवस्था

प्राप्त करना है। केवल इच्छा हमें अन्तिम लक्ष्य तक नहीं लेजा सकती, न ही पवित्र प्रार्थनाओं का पाठ मात्र।। परिश्रम, उत्तरदायित्व की भावना और आवश्यक बुद्धि—यह इस विज्ञान को प्राप्त करने के लिये आवश्यक आधार हैं।

माध्यम कई प्रकार के होते हैं। स्वयं लेखक माध्यम जो परलोक से प्राप्त सन्देशों को पेन्सिल या प्लनचैट की सहायता से लिख सकते हैं। सुनने वाले माध्यम जो आत्माओं की आवाज़ सुनते हैं और उनसे बातचीत कर सकते हैं। बोलने वाले माध्यम जो कुछ आत्मायें उनसे कहती हैं उसे वह बता देती हैं। दिखने वाले माध्यम, नींद में उठकर चलने वाले माध्यम, और रोग अच्छा करने वाले माध्यम।

पुस्तक लेखक १६०७ में लन्दन में था। मैं एक मूर्छित होने वाले माध्यम के पास गया जो एक आप्रेशन होने के बाद दिव्य द्रष्टा भी था। मुझे माध्यम की मुलाकात की बहुत प्रबल स्मृति है। माध्यम बेहोश होगया और एक आवाज़ उसके अन्दर से बोलने लगी। उसने मेरी प्यारी परलोकगत आत्माओं का बड़ा सुन्दर वर्णन किया। माध्यम का मेरा कोई परिचय नहीं था और यह बड़ा कठिन है कि वह किस प्रकार मेरी आत्माओं का ऐसा अच्छा वर्णन दे सकी जो हर प्रकार से बहुत सच्चा था। जो सन्देश आये उनमें घनिष्ठता का सम्पर्क था, जिससे उनके इहलौकिक जीवन की स्मृति का पता चलता था। देखने वाले माध्यम बहुत ही कम होते हैं। उन्हें आत्माओं के देखने

की शक्ति होती है और एक दूसरी दृष्टि होती है। अन्धों के बारे में कहा जाता है कि वह अपनी आत्मा द्वारा देखते हैं। जो इस लोक में अन्धे थे उनकी आत्माओं से बातचीत करने पर इसका समर्थन होता है।

देखने वाले माध्यम अपनी आत्मा द्वारा देखते हैं। आत्मायें दिन रात हमारे चारों ओर घूमा करती हैं। उनमें अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की आत्माएँ हैं। निम्नलिखित कहानी "Experimental spiritism" के लेखक ने अपनी किताब में लिखी है जो बड़ी मनोरञ्जक है।

हमें बताया जाता है कि वह एक थियेटर में एक उत्तम देखने वाले माध्यम के साथ गया जबकि "औबरन" का खेल हो रहा था, कई जगह खाली थीं और माध्यम ने कहा "वह देख रही है कि उन पर आत्माएँ बैठी हैं। स्टेज पर भी आत्माएं थीं कुछ गम्भीर थी और कुछ हास्य-प्रिय। गम्भीर आत्माएं एक्टरों को उनके खेल में सहायता दे रही थीं। हास्य प्रिय आत्माएँ तरह २ की नक़ल उतार कर खेल कर रही थीं।

ऐसी आत्माएँ भी थीं जो तमाशा देखने वालों की बातचीत सुन रही थीं। एक शैतान आत्मा एक्टर के प्रति बुरा भाव रखती थी। नाटक के कर्ता 'वैबट' की आत्मा को माध्यम ने अवकाश में बुलाया और पूछा कि वह अपनी कृति के खेले जाने के सम्बन्ध में क्या राय रखता है! उसने उत्तर दिया "खेल बुरा नहीं है किन्तु इसमें जीवन का अभाव है।

एक्टर केवल गाते हैं उनमें भावुकता नहीं है। उसने कहा "ठहरो! मैं इन्हें थोड़ी पवित्र अग्नि देता हूँ" हमें बताया जाता है कि बाकी खेल के खेलने में विशेष अन्तर था जिससे मालूम होता था कि एक्टरों में विशेष उत्साह और भावुकता विद्यमान है।

सोते में उठ के चलने वाले माध्यम में एक प्रकार की माध्यमिक शक्ति होती है। ऐसा माध्यम भी देखने वाले माध्यम की तरह आत्माओं को देख सकता है और ठीक २ वर्णन कर सकता है। वह आम तौर से अपनी आत्मा के प्रभाव में होता है। आत्मा मुक्त होने पर अपनी इन्द्रियों की हद से परे देख, सुन और मालूम कर सकती हैं।

निद्रा में चलने वाले माध्यम कभी २ पथ प्रदर्शकों द्वारा चिकित्सा करने के लिये मूर्छितावस्था में ले जाये जाते हैं। 'कन्टैस्ट' '(Contest)' पत्र तारीख १६-३-१६३६ में एस० मार्टिन द्वारा एक बड़ी मनोरञ्जक कहानी दी गई है जो हम नीचे उद्धृत करते हैं। "मि० और मिसिज" 'हिल रिचमांड' सरे में रहने वाली परस्पर प्रेमियों की जोड़ी थी। वह बड़े धार्मिक और आत्मवादी थे। मि० हिल की यह आदत थी कि सोने से पहिले प्रति शनिवार को वह अपने जूते साफ़ करके रख देते थे। एक रविवार को प्रातःकाल मिसिज हिलने प्रातःकाल खाने के समय पूछा कि क्यों वह आज अपने जूते साफ़ करने भूल गये? वह सब गारा से भरे हुवे हैं। मि० हिल को

आश्चर्य हुवा। उन्होंने उत्तर दिया कि "नहीं मैंने उन्हें साफ़ किया था और आलमारी में रख दिया था तुम कैसे कहती हो कि मैं भूल गया ? जब जूते उन्हें दिखाये गये वह गारा से भरे हुवे थे वह इसका कारण न समझ सके। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि "मैंने जूते साफ़ किये थे और मैं उसी कमरे में सोया था जिसमें मेरी स्त्री सोई थी और मैं रात को बाहर नहीं गया।"

जब वह गिर्जा प्रातः प्रार्थना को गया, वहां एक दिव्यदृष्टा माध्यम था उसने मि० हिल की ओर संकेत करके कहा "मैं देखती हूं कि तुम ऊँची, नीची सड़क पर चल रहे हो, फिर एक खेत में से जा रहे हो। तुम एक झोंपड़ी के दर्वाजे पर आवाज़ करते हो, उस झोंपड़ी में एक बच्चा बीमार है, तुम अन्दर जाते हो 'मुझे उस झोंपड़ी का पता दो"। गिरजा में जो लोग थे, उन्होंने माध्यम से पता लेलिया और मि० हिल के साथ टेमज़ वैली की उस झोंपड़ी में पहुँचे। उसे अन्धेरी रात में उस ऊँची नीची सड़क पर चलने की बिल्कुल याद न थी। जब वह झोंपड़ी में दाखिल हुये, मि० हिल को झोंपड़ी वाली स्त्री ने तत्काल पहिचान लिया जो आधी रात को वहां आया था और उसके बीमार बच्चे की चिकित्सा करनी चाहता था। पहिले वह डरी, कि रात को आने वाला पुरुष कौन है किन्तु उसके प्रार्थनापूर्वक ढंगों ने उसकी तसल्ली करदी। उसने कहा कि उसने उसके बच्चें पर अपना हाथ रखा और प्रार्थना की। उसका तत्काल प्रभाव हुवा। बच्चे की दशा अच्छी होगई और

उसने कुछ खुराक ली। इसका स्पष्टीकरण साधारण है। मि० हिल के आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक ने उसके द्वारा काम किया था। ऊँची शक्तियों के प्रभाव से वह सोता हुवा बिस्तर से उठ गया और कपड़े पहिन कर जहां भेजा गया था वहां पहुँच गया। सब काम उसने ऐसा किया जैसा कि वह बेहोशी में था। और जब चिकित्सा करने का काम समाप्त होगया वह घर लौट आया।

हमारे वैज्ञानिकों ने अब परमाणु, अणु, रेडियो आदि की सक्रियता का वर्णन करना शुरू कर दिया है। वह अत्यन्त छोटी वस्तु है, उनके अपने नियम हैं और जब उनका पता चल जायगा तब हम अभौतिक जगत से सम्पर्क में आजावेंगे।

जैसी हमारी सभ्यता है वह नियमित अणुओं के संमिश्रण से बनी है, किन्तु हम छलांगें लगा रहे हैं। यद्यपि अपना मार्ग अँधेरे में देख रहे हैं। यदि परमाणु को छोटे अणु में, और रेडियम को सीसे में हम अपनी प्रयोगशाला में परिवर्तित कर सकें तो हम समझते हैं कि हम अनुभव की एक नई दुनिया तक पहुँच जायेंगे। यह घटनाएं भौतिक और अभौतिक संसार के बीच की कड़ियाँ हैं। हमारी ३ परिणाम की दुनिया पदार्थ, समय और जगह की भित्ति पर अधिष्ठित है। इन तीनों का परलोक में अभाव है। किन्तु प्रभु के तरीके अद्भुत हैं, और यही भौतिक लोक जो दुख, पीड़ा और कष्ट से आच्छादित है, स्वर्ग बन सकता है, यदि वह शक्ति जो हमारे अन्दर है और जो चारों ओर है उसे सब के कल्याण के लिये काम में लाया जा सके। यदि आकर्षण शक्ति

के नियम, बिजली, चुम्बक, गरमी, रसायनिक अनुकूलताएं मनु-ष्यों के पट्ठों और नाड़ियों की शक्ति, रेडियो की सक्रियता को अच्छी प्रकार समझा जाय और उनका अनुकरण किया जाय। मेरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में विज्ञान मनुष्य समाज की बहुत अधिक सेवा करेगा जितनी कि गिरजा नहीं कर सका। क्योंकि यह परमात्मा के अद्भुत रहस्यों को हल करने की ओर जाता है जो अभी बहुत दूर है और मनुष्य के ज्ञान से परे है। W.T. Stead मि० स्टैड प्रसिद्ध आत्मवादी मरणोत्तर अपनी लड़की को सन्देश भेजते थे जो एक पुस्तक रूप में हमें मिलते हैं। जिसका नाम है "शास्वतजीवन" यह एक यात्री की कृषि है जो इस संसार से बाहर के रहस्यों में से यात्रा कर रहे हैं । हमारा उद्देश्य कई प्रकार की घटनाओं पर जोर देने से यह है कि हम सबसे पहिले पाठक को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हमारा घनिष्ट सम्बन्ध परलोक से है जो निश्चित रूप से विद्यमान है। Man's Surviral after Death (मरणोत्तर मनुष्य का जीवन) नाम की पुस्तक के लेखक पादरी सी० एल० ट्वीडल निम्नलिखित घटना लिखते हैं जो W.T. Stead के मरने के बाद हुई जब कि अभागा 'टाईटानिक' जहाज जिसमें १६०० से २००० तक मुसाफ़िर थे बर्फ की चट्टान से टकरा कर टूट गया। जहाज़ १० अप्रैल १९१२ को साउथैम्पटन से चला था। हमें बतलाया गया है कि स्टेड ने पुस्तक लेखक को जो उनके मित्र थे चलने से पहिले लिखा था कि मैं प्रसिद्ध माध्यम मिसिज़

रीट को वापिस लाने अमेरिका जा रहा हूँ। और वापसी पर तुम मेरे घर पर विम्बलडन (इङ्गलैंड) में मिलना। जहाज़ के चलने से दो दिन पहिले अर्थात् ८ अप्रैल को नौकर बच्चों के कमरे में आने के बाहर के रास्ते से रोने और सुबकियां लेने का शब्द सुनकर डर गये, 'यह उस बड़ी दुर्घटना की सूचना थी जो आने वाली थी। १५ अप्रैल को जब जहाज़ वास्तव में डूब गया, पादरी साहिब की स्त्री ने जो (जैसा कि हम पहिले कह चुके हैं) दिव्य दृष्टा थी एक मनुष्य की आत्मा को देखा जिसकी भारी भँवें थीं और ठोढ़ी के नीचे दाढ़ी थी। वह उन्हें रसोई घर में मिला जहां वह थीं। इसके बाद सैंकड़ों आदमियों के रोने, चिल्लाने का ऊँचा शब्द सुनाई दिया। जब यह हुआ, ग्रन्थकर्ता कहते हैं कि 'हम सब टाईटानिक को क्या हुवा, यह कुछ नहीं जानते थे। उन्होंने यह दोनों बातें अपनी डायरी में लिख लीं। अगले दिन 'टाईटानिक" जहाज़ के डूबने का समाचार मिला। वह १४ अप्रैल को रात के ११·३५ बजे एक पत्थर की चट्टान से टकराया और ३ घण्टे के अन्दर डूब गया, ठीक २·२० पर प्रातःकाल १५ अप्रैल को। चूंकि उन्होंने मि० स्टैड को कभी अपने जीवन में नहीं देखा था, उन्हें उनका फ़ोटो दिखाया गया और उन्होंने फ़ौरन पहिचान लिया कि यह वही शक्ल है जो उन्होंने देखी थी। इससे बढ़कर मि० स्टेड मिसिज़ रीट को न्यूयार्क में १७ अप्रैल सन् १९१२ को दिखाई दिये। अपने परलोक जाने के २ दिन पीछे। और

पादरी व्हीडलसाहिब को ३१ मई को 'विम्बलडन' में दिखाई दिये। उन्होंने परिचित मनुष्य की तरह उन्हें सम्बोधित किया और अपने घर आने के लिये स्वागत किया। यदि वह शरीर से उनका स्वागत न कर सके तो मि० स्टैड की आत्मा ने उनका स्वागत किया और अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

अध्याय ७

क्या माध्यम शक्ति वाञ्छनीय है? इसके ख़तरे।

परलोक-वाद धोखा नहीं है। न यह जादूगिरी है यह एक विज्ञान है। किन्तु किसी को भी उधर प्रवेश करने का साहस नहीं करना चाहिये जब तक कि इस गुप्त विज्ञान के नियमों का ज्ञान उचित रीति से प्राप्त न कर लिया जाय "माध्यमता में इसलिये टांग अड़ाना किया तो नई हलचल मचाना, या आत्माभिमान की शांति करना, पूर्णतया निन्दनीय है। यह केवल अपनी प्रकृति द्वारा आश्चर्यजनक सम्भावनाओं का दुरुपयोग है। जबकि माध्यम शक्ति को या और किसी बात को जारी रखना जिससे मन, नाड़ियों और स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का बुरा प्रभाव पड़े अपने प्रति पाप है। और इसका अवश्यम्भावी परिणाम शारीरिक और मानसिक ख़राबियाँ हैं। उपरोक्त चेतावनी बिल्कुल यथार्थ है।

जब मैं माध्यम शक्ति की ओर प्रवृत्त हुआ, मैं इसके ख़तरों और हदबन्दियों से अपरिचित था। मैं घंटों मेज़ के पास बैठे रहने के प्रलोभन में पड़ गया। जब कभी काम से अवकाश

मिलता मैं ऐसा करता था। आरम्भ में मुझे थोड़ी सी थकान प्रतीत होने के सिवाय कोई शक्ति का ह्रास मालूम नहीं हुआ। एक दो मास इसी प्रकार चलता रहा यहाँ तक कि एक दिन दुर्घटना घटी। मेरे जोड़ों ने काम करने से इन्कार कर दिया। मुझे भयंकर पीड़ा हुई और मैं बिस्तर में पड़ने को मजबूर हो गया। किन्तु मूढ़ता इतनी बढ़ गई कि मेरी उत्कट इच्छा हुई कि इस आकर्षक विज्ञान के रहस्यों का पता लगाया जाय। मैं भगवान् के उच्च लोकों में पहुँच गया। उन आध्यात्मिक भ्रमणों की प्रसन्नता को मैं इहलौकिक यात्रा के अन्तिम दिन तक न भूलूंगा। उनसे मुझे नवीन दृष्टिकोण मिला इनसे मेरे सामने स्वर्गीय विज्ञान का द्वार खुल गया, किन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह ख़तरे से भरा विज्ञान है। केवल हृदय की पवित्रता और आपके उद्देश्य की सत्यता पर्याप्त नहीं है। प्रार्थना और ध्यान बहुत सहायक हैं वह तुम्हें दुष्ट आत्माओं के आक्रमण से बचाते हैं, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि शरीर की पीड़ा जो आत्मा के सम्पर्क से पैदा होती है, हमेशा उससे बचाव हो सकता है। अनुसन्धानकर्ता को कई प्रकार की आत्माओं से सम्बन्ध पड़ता है उसे गेहूँ के थोड़े दानों के प्राप्त करने के लिये बहुत सा भूसा परे हटाना पड़ता है। स्वर्गीय वृक्षों से उसका मूल्य दिये बगैर ज्ञान रूपी फल नहीं तोड़ा जा सकता। कष्ट के बगैर कोई सुख प्राप्त नहीं होता, किन्तु तुम्हारे सुख की सरिता में ख़तरे कम होंगे। यदि भूतकाल के जिज्ञासुओं के अनुभव पूरे तौर से समझ लिये

जावें और उचित सावधानी रखी जावे। आध्यात्मिक देन सर्वोपरि पूंजी है। उनकी इच्छा करनी चाहिये और उनको प्राप्त करना चाहिये। अलौकिक या करामात की बात कुछ नहीं है। मनुष्य आध्यात्मिक जीव है। उसका भौतिक तथा आत्मिक शरीर है। यह दोनों शरीर चुम्बक शक्ति से जड़े हुवे हैं। एक शरीर से दूसरे शरीर में शक्ति का निरन्तर प्रवाह जारी रहता है। जब तक उसमें रुकावट नहीं होती, शरीर पूर्ण स्वस्थ रहता है। जो व्यक्ति अपनी माध्यमिक शक्ति या आत्मिक शक्ति को बढ़ाना चाहता है उसे पवित्र उद्देश्यों से प्रेरित होना चाहिये। केवल भावुकता ही नहीं प्रत्युत विचार पूर्ण बुद्धिमता से काम लेना चाहिये। जिज्ञासु को आध्यात्मिक शक्तियों की पवित्रता को समझना चाहिये।

प्रयोग को प्रार्थना से आरम्भ करने का उद्देश्य मन को ऊँचे आध्यात्मिक स्तर पर ले जाना है और अच्छी आत्माओं के आगमन के लिये अनुकूल वातावरण पैदा करना है। संगीत आवश्यक एकता में सहायक होता है जो एक बड़ा अंग है। कम से कम ३ व्यक्तियों को प्रयोग में बैठना चाहिये। अकेले बैठना बुद्धिमता नहीं है। स्वयं लेखकों के परिणाम से जो अकेले बैठते हैं, हमें शिक्षा लेनी चाहिये। उनका नाड़ी चक्र खण्डित हो जाता है। जो व्यक्ति आपके साथ प्रयोग में बैठें वह अत्यन्त शुद्ध चरित्र होने चाहियें। बात यह है कि परलोक के पथप्रदर्शक को प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व पूछ लेना चाहिये

कि वह बैठने वालों को पसन्द करते हैं या नहीं। पब्लिक प्रयोग-स्थान से जहां पर तरह २ के चरित्र वाले व्यक्ति एकत्रित हों, सर्वथा बचना चाहिये। यह कृमि उत्पन्न करने वाला केन्द्र है और ऐसा माध्यम जो अपनी शक्ति का प्रदर्शन ऐसे अवाञ्छनीय वातावरण में करता है, अत्यन्त दमनीय व्यक्ति है।

मेरा परलोक—वाद से परिचय एक पब्लिक प्रयोगशाला में प्रवेश करने से हुवा और मैं इसके खतरों से अनभिज्ञ था। मैं अपने १ प्यारे सम्बन्धी से बातचीत करना चाहता था किन्तु आत्मा ने मुझे डांटा कि साधारण पब्लिक प्रयोगशाला में सन्देश प्राप्त करने का स्थान नहीं है। किसी घरेलु चक्र में सम्मिलित होने को कहा गया। सी० डब्ल्यू लैड बीटर, अपनी पुस्तक "वस्तुओं का छिपा हुवा पहलू" में प्राइवेट प्रयोग घरेलू चक्रों में ही करने की सिफ़ारिश करते हैं। यह सच है। क्योंकि ऐसे चक्र में जीवित और मरे हुवे कहलाने वाले व्यक्तियों में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है और सब वातावरण प्रेम और स्नेह से भरा हुआ है। पब्लिक प्रयोगशाला में इसका अभाव ही नहीं होता बल्कि वहां बड़े खतरे भी हैं।

लैड बीटर के शब्दों में 'ऐसे चक्र का मण्डल प्रायः कुछ अप्रिय होता है क्योंकि यह परलोक में तथा इहलोक में बहुत ध्यान आकर्षित कर देता है।' इसलिये प्रत्येक व्यक्ति के चारों ओर बहुत सी अवाञ्छनीय आत्माओं की भीड़ हो जाती है जिनको बलपूर्वक अन्दर आने से या माध्यम पर कब्जा करने

से रोका जाता है। ऐसे प्रयोगों में जो खतरे होते हैं उनमें यह भी सम्भव है कि इनमें से कोई उग्र व्यक्ति भावुक बैठने वाले को आक्रान्त करले और उस पर आवेश करले। उससे भी बुरा यह है कि वह उसके साथ घर चला जावे और उसकी स्त्री या लड़की पर कब्जा कर ले। ऐसी कई घटना हुई हैं। और प्रायः ऐसी आत्मा से पीछा छुड़ाना असम्भव हो जाता है जो किसी जीवित व्यक्ति पर आवेश कर लेता है। (The Hidden Side of things Pages 262-263) प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले प्रयोग बहुत खतरनाक होते हैं और अब जब कि मरणोत्तर जीवन बहुत निश्चितरूप से प्रमाणित हो चुका है, ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता नहीं है। परलोक में मनुष्यों की आत्माओं के अतिरिक्त अनेक अन्य आत्माएं हैं उनके परी, चुड़ैल, भूत, प्रेत, पिशाच आदि अनेक नाम हैं। शैक्सपीयर ने अपने नाटकों में इन भूत प्रेतों के कृत्यों का बड़ा हास्यास्पद वर्णन किया है कि वह किस प्रकार निरपराध, पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों से अपने खेल करते हैं।

हम यहां जादू की या उन कर्तबों की चर्चा नहीं करेंगे जो जो हिन्दुस्तान के फ़क़ीर इन अदृश्य दुष्टात्माओं की सहायता से करते हैं जिसकी उन्हें अन्त में भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

लैडबीटर साहिब हमें बतलाते हैं कि प्राकृतिक आत्माएं प्रयोगशालाओं में प्रायः जाने का अवसर पा लेती हैं और ऊँचे दर्जे की आत्माएँ होने का दावा करती हैं और महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर बड़ी बुद्धिमत्ता से देती हैं जिसका वह बहाना करती

हैं। उनका उद्देश्य केवल बैठने वालों को उल्लू बनाना है और वह इस प्रकार चक्र वालों से खेल करके खुश होती हैं कि चक्र में बैठने वाले भूल से उन्हें अपनी प्यारी आत्माएँ और फरिश्ता आत्माएँ मानते हैं। वह बहुत मनोरञ्जक प्रयोग करने योग्य होती हैं। उन्हें परलोक का और वहां की सम्भावनाओं का ज्ञान रहता है। वह खटके कर सकती हैं, ज्योति जला सकती हैं और बन्द कमरे में फूल ला सकती हैं। उनके लिये चक्र में बैठने वालों को धोखा देना बड़ा सुगम है साधारण प्रयोग कर्ता के लिये वास्तविक और नकली वस्तु में पहिचान करना कठिन है।

हर एक को अपनी आजीविका कमानी होती है। यदि कोई माध्यम आजीविका करता है तो उसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। डाक्टर और नर्स भी व्यवसायी हैं। किन्तु पेशावर माध्यम का मार्ग कटंकाकीर्ण है उसे बड़ा सावधान रहना चाहिये। आवेशित होने की अनेक घटनाएँ हैं। जिस पर आवेश होता है वह शारीरिक और मानसिक कष्ट पाता है। इस आवेश के भय के कारण ही माध्यम शक्ति को बुरा समझा जाता है और परलोक वाद को बदनाम किया जाता है—। यह ऐसा नहीं है। परलोक-वाद को अच्छी प्रकार समझा जावे और तद्नुसार कार्य किया जाय तो मनुष्य के लिये यह बड़ी अनुग्रह की वस्तु है।

आवेश का प्रधान कारण इस विज्ञान के नियमों से अनभिज्ञता है। बहुत बार यह आत्मिक बातों में बहुत अधिक लिप्त

रहने से होता है या प्लैनचेट के अनुचित प्रयोग से अथवा अत्याधिक स्वयं लेखन से प्रयोग में सप्ताह में दो बार से अधिक नहीं बैठना चाहिये, ३०-४० मिनट से अधिक एक बार नही बैठना चाहिये जब उच्च लोकों से आत्माओं के सन्देश लेने हों तो यह आवश्यक है कि चक्र ७ आदमियों से कम का न हो।

प्रयोग का कमरा एक पवित्र सीमा समझनी चाहिये। वहां पर किसी को आने नहीं देना चाहिये। कहीं उसका पवित्र वातावरण घटिया प्रकम्पों से खराब न हो जाय। दीवार पर बड़े महात्माओं और धर्म भक्तों के चित्र होने चाहियें। क्योंकि उनसे उच्च आत्माएँ आकर्षित होती हैं।

जहां तक सम्भव हो प्रयोग में एक ही पोशाक पहननी चाहिये क्योंक उच्च आत्माओं के साथ सम्पर्क में आने से उसका विशेष प्रभाव होता है।

आत्माओं से वार्तालाप उस अत्यन्त प्रसन्नता के लिये ही वाञ्छनीय नहीं है जो इससे उत्पन्न होती है बल्कि इसलिये भी कि यह हमारे जीवन को उन्नत बनाता है। इसे अन्तिम ध्येय नहीं समझना चाहिये प्रत्युत हमारे आचरण को पूर्ण बनाने का साधन है। वास्तविक प्रेम अधिक काल तक रहता है और दयालु है वह ईर्ष्या नहीं करता, अभिमान नहीं करता, अपना निजी स्वार्थ ही नहीं चाहता प्रत्युत दूसरों के जीवन को बलवान बनाने का यत्न करता है। इसको कोई कैसे प्रकाशित करे! परमात्मा इस विश्व में व्याप्त है मानों उसने विश्व का लबादा

आढ़ रखा है—वह विश्व के द्वारा अपना प्रेम और जीवन प्रकट करता है। वह प्रत्येक भाग में काम करता है, वह सबके साथ प्रेम को बाँटता है।

दूसरा प्रश्न जो पैदा होता है वह यह है कि माध्यमता वाञ्छनीय है क्या? हमारा उत्तर है कि बिल्कुल नहीं। यह प्रत्येक व्यक्ति के अपने ऊपर निर्भर है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन में उन कठिनाइयों और उस मार्ग की कठिनाइयों का जिस पर उसे चलना है, अन्दाज़ करना चाहिये। उसे भय मन से निकाल देना चाहिये, अपना दृष्टि-कोण विवेकपूर्ण रखना चाहिये। पहिले से सावधान रहना रक्षा का प्रबन्ध रखना चाहिये। पहिले से सावधान रहना रक्षा का प्रबन्ध रखना है। खतरे अपने अज्ञान और भूल का फल हैं।

किसी प्रयोग में ऐसे समय बैठना ज़ब तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, या जब तुमचिन्तित हो या थके मांदे हो जोखम का काम है। जब कि प्रयोगशाला में तुम्हारे साथी अपने अनुचित विचारों से तुम्हें ख़तरे में डाल देते हैं। यह सम्भव है कि तुम्हारी सब सावधानी के बावजूद तुम पर हानिकारक प्रभाव पड़े, जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़े। यह सब सम्भावनाएँ हैं। किन्तु तुम प्रभु के रहस्यों को नहीं जान सकते जब तक कि भयङ्कर विरोध में से न 'गुज़रोगे। अन्तिम विजय ही वाञ्छनीय है। प्रयत्न करने के भाव का ही मूल्य है। द्वार पर रहने वालों का भय कि वह तुम्हारे दिमाग को पीड़ा दें या तुम्हें टुकड़े २ करने

के कष्ट दें, तुम्हारे मार्ग में बाधक नहीं होना चाहिये।

एम० ए० (आक्सन) का फैसला बहुत विवेक पूर्ण है। व कहते हैं कि मैं नहीं समझता कि यह कहना युक्ति युक्त है कि प्रत्येक व्यक्ति को माध्यमता से परिचय प्राप्त करना बुद्धिमत्ता का और अच्छा काम है। यदि मैं इस सत्य को छिपाऊँ कि जो इस विषय में हाथ डालता है वह अपने उत्तर दायित्व पर ऐसा करता है। मैं यह नहीं कहता कि खतरा ऐसी वस्तु है जिस से सदा ही बचना चाहिये। कुछ हालतों में ऐसा नहीं है किन्तु मैं कहता हूँ कि माध्यमता कभी २ आपत्ति जनक लाभ होता है और कभी यह निश्चित प्रभु का आशीर्वाद है।

माध्यमता भी एक प्रभु की देन है जिसकी इसी प्रकार इच्छा करनी चाहिये जैसे राजनीतिज्ञ को वाक्य कुशलता की, और कवि को संगति की। इसका प्रधान काम मनुष्य को ऊंचे आध्यात्मिक लोकों में उन्नत करना है। हमारे से ऊंची आत्माओं के सम्पर्क में आकर कैसी शिक्षा और उच्च प्रेरणा प्राप्त होती है, यह केवल ऋषियों और महात्माओं के लिये ही नहीं है, मामूली योग्यता और बुद्धि के व्यक्ति भी इसे प्राप्त कर सकते हैं। एक उच्च भ्रातृमण्डल सदा ऐसे लोगों की रक्षा करने को उत्सुक रहता है जो आत्माओं से सम्पर्क करना चाहते हैं। सत्य ही उन का धर्म है। प्रेम ही उन की शक्ति है। पवित्रता उन की अंग रक्षक है। प्रत्येक माध्यम को अपनी आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव करना चाहिये, और अपने मन और शरीर पर पूर्ण संयम रखना चाहिये। जैसा कि "माध

मता का पथ प्रदर्शक" नाम की पुस्तक के निर्माता कहते हैं "कोई मार्ग कठिनाई और खतरे से खाली नहीं है और इस प्रदेश के विद्यार्थी को यह नहीं मालूम होगा कि मूर्खता ही परमानन्द है। इसके विपरीत उसे अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को बढ़ाने और समझने का प्रयत्न करना चाहिये और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने की ओर अपनी शक्तियों को लगाना चाहिये। हम अपने मित्र पाठकों से अनुरोध करेंगे कि उन्हें उन प्रभावों को अस्वीकार करना सीखना चाहिये जो हानिकारक हैं। और उन आत्माओं की शिक्षा और प्रभाव ग्रहण करना चाहिये जो बुद्धिमान हैं और विश्वसनीय हैं। इस लोक में आत्म-ज्ञान और आत्मपूर्णता सच्चे रक्षक हैं। आत्मिक शक्ति का आध्यात्मिक रीति पर उन्नत करना, और उत्तम और सर्वोत्कृष्ट वस्तु की ही उत्कट तलाश अनन्त सुख दे सकती है।"

परलोक-वाद के विरोधियों ने माध्यमता की ऐसी धुंदली तस्वीर खेंची है कि माध्यमता का परिणाम यह होता है कि मनुष्य या तो आत्म-घात कर लेता है या अपने दिन पागलख़ाने में काटता है, यह एक दम ऐसा ही झूठ है जैसा कि यह कहना कि वायु में विमान द्वारा उड़ना, या जहाज़ और रेल से यात्रा करना छोड़ देना चाहिये क्यों कि यह यात्रा के अत्यन्त खतरनाक तरीक़े हैं।

माध्यमता एक महत्व का काम हो जाता है जब इसका उपासक उच्च विचारों से प्रेरित होकर ज्ञान की अधीर खोज में सत्य को

प्राप्त करने के लिये, कड़े मनुष्य परिवार के लिये प्रेम रखने के
कारण ऊँची उड़ान भरता है। वह परमात्मा और मनुष्य समाज
के जोड़ने वाली जंजीर की कड़ी बन जाता है।

अध्याय ८

शङ्काओं और समालोचनाओं का समाधान

परलोक—वाद पूरक विद्या है, विनाशक नहीं। पहिले के
अध्यायों में कुछ विचित्र कहानियाँ वर्णन की गई हैं। अविश्वास
करने वाले व्यक्ति उन सत्य घटनाओं को अस्वस्थ मन की भ्रान्ति
या अतिरञ्जकता समझेंगे। हमारा यह इरादा नहीं है कि कमज़ोर
हाजमे वालों को कठिनता से पचने वाला मांस खिलायें। किन्तु
यह बात हम पूरे जोर से कह सकते हैं कि पिछले ५० वर्षों के
अनुभवों में परलोक—वाद बहुत अग्रसर हो गया है और इस
आन्दोलन के साथ वैज्ञानिकों के सम्पर्क ने इसका महत्त्व और
भी बढ़ा दिया है। 'एक समय में एक ही संसार' यह आम
दलील है जो हमें दी जाती है। हमें इस पर कोई आपत्ति नहीं
कि मनुष्य का प्रधान कर्तव्य है इस लोक में मानव समाज की
सेवा करना। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि हम अपना मेल
जोल का क्षेत्र न बढ़ावें। न ही इस सत्यसे आंखें मीची जा सकती
हैं कि परलोक और यह लोक एक दूसरे से जुड़े हुवे हैं, और
मनुष्य की पूर्णता के लिये आध्यात्मिक जगत् का ज्ञान और
उससे मेल जोल आवश्यक है।

मनुष्य की आत्मा, परमात्मा का अंश है जिसे उसने अपने अनुरूप बनाया है। उसे पूर्ण बनाने के लिये न केवल इस जगत में जीवन व्यतीत करने के लिये प्रत्युत परलोक में उन्नति करने के लिये उच्च विकास का उद्देश्य है 'हर्बर्ट स्पैन्सर' ने जीवन का उद्देश्य आन्तरिक सम्बन्धों का बाह्य सम्बन्धों के साथ मेल बैठाना बताया है।

डालास (Dallas) ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि "यह परिभाषा ऊँची अवस्थाओं में भी ऐसी ही लागू है जैसी कि इस लोक में, यह जीवन आन्तरिक शक्तियों का बाह्य आध्यात्मिक वातावरण के साथ मेल का फल है।"

मृत्यु हमें अस्तित्व के नये रूप में पहुँचा देती है, और यदि हम सच्चाई जानना चाहते हैं—'यह शास्वत सच्चाई जिसमें कि हम जीवन व्यतीत करते हैं, चलते फिरते हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम सब सम्भावनाओं का पता लगावें और अपनी क्रियाओं का क्षेत्र विस्तत करें। उसे मृत्यु के द्वार से भी परे बढ़ावें।"

सर विल्यम बैरट अपनी पुस्तक "विचारों का नया संसार" में "परलोक-वाद" को सत्य घटनाओं का विज्ञान बयान करते हैं। इङ्गलैंड के प्रसिद्ध परलोक-सन्बन्धी पत्र, लाईट (Light) के सम्पादक के शब्दों में यह (परलोक-वाद) मनुष्य का विचार एक आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में और शरीर धारी मनुष्य और स्थूल शरीर विहीन मनुष्य के परस्पर मेल-जोल के सम्बन्ध में

करता है। निस्सन्देह इस प्रकार के मेल जोल में खतरे हैं। मनुष्य का विशेष सम्बन्ध इस जीवन से और इस जीवन के कामों से है, इसमें सन्देह नहीं, धार्मिक विचार के मन को पुराने विश्वास पर ही जीना अच्छा मालूम होता है, किसी प्रकार का भी आध्यात्मिक प्रदर्शन उसे अरुचिकर होता है। जो पवित्र आत्मा हैं और अपने पारलौकिक जीवन में संयमी हैं वह परलोक-वाद से डरते हैं कि कहीं यह उनको उन गड्ढों और खतरों में न डालदें जो ऐसे तजरुबों में होते हैं जिसके लिये वह तय्यार नहीं है। किन्तु डर की कोई वजह है? क्या सत्य घटनाओं से आँखें बंद की जा सकती हैं?

अज्ञात खतरों से भय का कारण उनके सम्बन्ध में अज्ञात है इसलिये उन्हें साफ़ समझने के लिये क्यों प्रयत्न न करना चाहिये और तब आगे बढ़ना चाहिये। पहिले से सावधान किया जाना पहिले से प्रबन्ध कर लेना है।

"एच० ए० डल्लास" भी प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देते हैं:—
"यदि यह घटनाएँ और विचित्र सुविधाएँ परमात्मा के संसार में रहती हैं तो यह इस संसार में भी होनी चाहियें। देर में या जल्दी हममें से प्रत्येक को सत्य घटनाओं का ध्यान होना चाहिये। उनकी वास्तविकता स्वीकार करनी चाहिये और उन्हें अपने दिमाग में सम्मिलित कर लेना चाहिये। संसार की कोई स्कीम भी जो मनुष्य सोच सकता है इसके विश्वास को स्थायी रूप से नहीं क़ायम रख सकती, यदि यह उन घटनाओं की उपेक्षा करके जो

भगवान् की सृष्टि में हैं, युक्ति युक्त मालूम हो।

जीवन के प्रत्येक विभाग में ख़तरे हैं। जितना बड़ा मिशन है उतना ही अधिक उसमें ख़तरा है। जब बुद्धिमान 'एम० पैरी' और 'मैडम ईवाकरी' ने रेडियम को खोज निकाला, उन्हें क्या २ जोखम उठानी नहीं पड़ी। कितनी बार पैरी साहिब के हाथों में सफेद चमकती हुई धातु की किरणों से छाले पड़ गये, तब कहीं रसायन शाला में इसका पता लगा, जहाँ पर उन्हों ने अपने जीवन के बहुत परिश्रमी वर्ष बिताये और ठंड और बर्षा में दिन रात काम करते रहे।

सब प्रकार के ख़तरों से बचना अपनी तरक्की को ही रोकना होगा। साधारण जीवन में भी ख़तरा है। जब बच्चा पैदा होता है क्या उसके मरे हुवे पैदा होने का ख़तरा नहीं है?

जब स्त्री माता बनने वाली होती है तो उसे कितने ख़तरे होते हैं। सम्भव जोखमों को जान लेना होता है। जीवन के उच्च उद्देश्य को जान लेने के लिये जो परलोक वाद सिखाता है अर्थात् 'परमात्मा की महानता' जिसका अर्थ धार्मिक भाषा में मनुष्य जाति की आध्यात्मिक शक्तियों का पूरा विकसित होना है जो इसे परमात्मा से प्राप्त हुई हैं। हमें साधारण जीवन का त्याग कर आत्माओं के साथ मेल जोल और भक्ति-भाव प्राप्त करना चाहिये।

कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो जङ्गलों में चले जाते हैं। साधु और साधिकाएँ इस भय से कि कहीं वह सांसारिक प्रलोभनों के

चक्कर में न पड़ जावें मनुष्यों के मेल जोल से अलग रहते हैं। यह प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तिगत मन की शक्ति पर निर्भर है। मनुष्यों का मेल जोल किस हद तक मनुष्य के जीवन को भला या बुरा बना सकता है, उसकी अपनी शक्ति के अनुभव पर निर्भर है। दो सिद्धान्त हमारे कर्मों का सञ्चालन करते हैं। प्रेम और शक्ति, वही नियम जो इस संसार का सञ्चालन करते हैं परलोक से सम्बन्ध रखने में भी लागू रहते हैं। बिना प्रेम और शक्ति के आत्मा समाज में सुरक्षित नहीं है चाहे वह समाज शरीरधारी हो या बिना शरीर के। अविश्वासी और डरपोक लोगों को परमात्मा की नगरी में विश्राम का स्थान नहीं मिलता। जो कोई भी पैग़म्बर इस लोक में मनुष्य समाज की उन्नति के लिये पैदा हुवे हैं सभी का यह संदेश रहा है कि 'डरो मत'।

आत्माओं से जो संदेश प्राप्त हुवे हैं उन के विपक्ष में यह आपत्ति साधारणत: की जाती है कि उनमें कोई बात सर्वथा नई नहीं होती। वह किसी नई सच्चाई को प्रकट नहीं करते। वह जिन कर्तव्यों को बताते हैं हम उन्हें जानते हैं। वह परमात्मा का वर्णन करते हैं जिससे हम परिचित हैं।

जब ईसामसीह पृथ्वी पर आये, क्या उन्हों ने संसार के सामने किसी नई बात का प्रचार किया? 'परमात्मा तुम्हारा पिता है और तुम उसके बेटे हो, यह कुछ नया संदेश नहीं है। उस ने प्रेम का उपदेश किया किन्तु महात्मा बुद्ध ने जो उनसे ५०० वर्ष पूर्व पैदा हुवे यही शान्तिदायक उपदेश दिया था। किन्तु यद्यपि ईसा-

मसीह ने कोई नया उपदेश नहीं दिया तथापि उन्होंने पुरानी सच्चाईयों में नयी रोशनी का प्रकाश किया। और हमारी बुद्धि को परमात्मा के साथ अधिक सम्पर्क में लाये और हमारे विचारों में आध्यात्मिकता पैदा की। उन्होंने प्रेम, पितृभाव और पुत्र भाव तथा भ्रातृभाव के शब्दों में नया और गहरा अर्थ उत्पन्न किया। उनके सम्बन्ध में कोई नई बातें नहीं कहीं किन्तु उन को अपने अनुभव में ऊंचा करके और अपने द्वारा प्रकट करके दिखाया।

परलोक-वाद का कोई नया संदेश नहीं है किन्तु यह हमारे अन्दर जीवन पैदा करता है। यह हमारी आत्माका स्पर्श करता है। यह अधिक मानसिक जागृति पैदा करता है। हम परमात्मा और संसार के साथ अपना सम्बन्ध समझ जाते हैं, ऐसे तरीके से कि जिसका स्थायी प्रभाव होता है। जिससे संसार की कोई पुस्तक हमारे मन और शरीर में प्रवेश नहीं करा सकती 'डालस' साहिब के शब्दो में 'विशेष' गुप्त और अवर्णनीय परिवर्तन हमारे दृष्टि-कोण में होजाता है। वस्तुओं का अनुपात बदल जाता है। हमारा अपने साथियों से मेल जोल, हमारा इस संसार से सम्बन्ध, हमारा वर्तमान और भविष्य इस नूतन ज्योति से बदल जाता है इस नवीनता को अनुभव किया जाता है, और समझा जाता है यह बतलाई नहीं जा सकती।

परलोक-वाद मनुष्य के मरणोत्तर जीवन को सिखाता है। बल्कि उससे भी कुछ अधिक बतलाता है। यह सच्चाई को और स्पष्ट करता है। आत्माओं के सन्देश और प्रदर्शन हमें यह स्वीकार

कराते हैं कि 'परलोक' कारणों का जगत् है और भूलोक आत्मा को प्रकाशित करने का तरीका है।

संसार माया है। इसके आगे झुकना झूठा है। परलोक वाद बहुत सों के लिये आकर्षक विषय रहा है। कुछ लोग तो केवल उत्सुकता और जिज्ञासा बुद्धि से इधर प्रवृत्त होते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो परलोक वाद में आत्मोन्नति का मार्ग पाते हैं। जिन लोगों ने अपने किसी बन्धु या प्यारे को खो दिया है उसके जख़मी हृदय को यह सान्त्वना देता है। इस आत्म-सन्तोष के मार्ग को ढूंढने में कोई बुराई नहीं है। किन्तु इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिये हमें ऊंचा उठना होगा। इस का अर्थ यह है कि हमें अहंकार, व्यक्तिगत पक्षपात, और हट छोड़ने होंगे। प्रकृति का आदर्श है ऊंची से ऊंची जाति की उन्नति करना।

परलोक-वाद अपने छोटे रूप से ऊंचे दर्जे के वास्तविक अध्यात्म जीवन को प्राप्त कराने में अग्रसर होना चाहिये।

सिंध के साधु 'वसवानी' ने जो बड़े भारी विद्वान, व्याख्याता और उच्च कोटि के परलोक-वादी हैं, गीता जयन्ती के अवसर पर २६-११-१९४१ को निम्नलिखित सन्देश दिया:—

'वर्तमान सभ्यता विषयों से आक्रान्त है। इस लिये यह नष्ट भ्रष्ट हो रही है। यह विनाश और गड़बड़ी की ओर दौड़ रही है। संसार को एक नये अन्धकार मय युग का खतरा है। मनुष्य के लिये आध्यात्मिक उन्नति की आवश्यक्ता है। ऊपरी प्रयत्न में मनुष्य को आध्यात्मिक प्रकाश की जरूरत है। मनुष्य के

लिये यह सब से सच्ची और उत्तम देन है यदि उस का युक्ति युक्त उपयोग किया जाय। यह आत्माको शक्ति देती है यह हमारे बोझ को हल्का करता है यह दूसरों के बोझ को हल्का करने में सहायक होता है। यह त्रुटियों को दूर करता है और पृथ्वी पर उत्तम प्रसन्नता का मार्ग बनाता है। यह हमें परमात्मा की सृष्टि में सुन्दरता सिखाती है। उत्साही विद्यार्थी परमात्मा के रहस्यों को अधिक से अधिक जानने की चेष्टा करता है। और उन के उद्घाटन की उत्सुकता स्वाभाविक है दरवाजा बिल्कुल बन्द नहीं है। किन्तु परोक्षज्ञान का मार्ग सहज नहीं है। आत्माओं के संदेश का उद्देश्य हमारा पथ प्रदर्शन करना और हमें परलोक की यात्रा के लिये तय्यार करना है। उन का उद्देश्य परमात्मा के रहस्यों का उद्घाटन नहीं है जो ऊंचे २ फरिश्तों के लिये भी अगम्य है। एक आत्मा का सन्देश है "शिक्षा का उद्देश्य आप को आगामी जीवन के लिये तय्यार करना है, आप को प्रत्येक रहस्य बताना नहीं। जो तुम्हें यहाँ से जाने के बाद स्वयं मालूम हो जायेंगे। तुम्हें इस से कुछ लाभ न होगा। और यही कारण है कि उत्साही विचारक यह चाहते हैं कि जिन प्रतिकारक आत्माओं के बीच तुम और वह कड़ियाँ हो वह आत्माऐं सीखने से रोके, बगैर दूसरों को शिक्षा देती हैं और सन्देश लाती हैं। तुम देखते हो कि किसी वस्तु के साथ धीरता पूर्वक लगा रहने से तुम कितना सीख जाते हो। किन्तु एक बात तुम्हें जाननी चाहिये और वह यह कि हम तुम्हें उसका आधा या चौथाई भी

सिखा नहीं सकते जो कुछ जानने योग्य है क्योंकि उसे हम स्वयं भी नहीं जानते। केवल हमें यह विश्वास है और आप भी निश्चय रखो कि जो कुछ हम तुम्हें सिखाते हैं वह व्यर्थ नहीं जायगा। क्योंकि यद्यपि उन रहस्यों की वर्णमाला ही हो जो किसी दिन मालूम हो जावेंगे। तथापि यह बुनियादी काम है जिसे तुम कभी नहीं भूलोगे। यह नित्यता की मूक भाषा की वर्णमाला है।

कभी २ जब हम उस का ध्यान करते हैं, जो कुछ हम तुम्हें सिखाते हैं तो हम अफ़सोस करते हैं कि यह बहुत थोड़ा नया है और पुरानी सच्चाई नये कपड़ों में है। किन्तु मास्टर हमें बतलाते हैं कि यदि हम तुम्हें कुछ भी न सिखावें और केवल आप को यह स्मरण कराते रहें कि आप प्रति दिन अपना जीवन जहाँ तक भी हो उत्तमता से बिताओ, तो भी हम अपना कार्य पथ-प्रदर्शक के रूपमें पूरा कर चुके।"

उपरोक्त सन्देश से यह स्पष्ट है कि परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि मनुष्य तमाम सच्चाई को तत्काल जान ले। वह उस तक क्रमशः पहुँच सकता है जैसे उसकी आत्मा अनन्त काल में उन्नत होती है, क्यों कि प्रभु की सुन्दरता बहुत अधिक है। उसका संसार बड़ा विस्तृत और ईश्वरीय ज्ञान अनन्त है।

जोरास्टर, राम, बुद्ध, ईसामसीह और मुहम्मद यह सब ईश्वर की ओर से इस संसार में सन्देश वाहक थे। और अपने दैवी कृत्यों को पूर्ण करने के बाद फिर परमात्मा में लीन हो गये। जो सन्देश उन्होंने समय २ पर दिये वह बहुत कुछ मिलते

जुलते हैं।

परलोक-वाद जीवित व्यक्तियों का परलोक-गत प्राणियों से सम्बन्ध स्थापित कर हमारे दैनिक कार्यों में प्रभु के पद-चिन्हों पर चलने में हमारी सहायता करता है। मरणोत्तर जीवन के निश्चय से और मरणोत्तर जीवन के जारी रहने के विचार से, मनुष्य का मनुष्य के प्रति दृष्टि-कोण बदल जाता है। यह उसे अधिक दयालु, विचार वान, अधिक उदार हृदय और ईसा मसीह की तरह बहुत प्रेमी बना देता है।

यह दलील देना गलत है कि परलोक-वाद मनुष्य सांसारिक कर्तव्यों के पालन से हटा देता है। यह बुरी शक्ति नहीं है जैसा कि कुछ लोग विश्वास करते हैं कि यह मनुष्य की समझ को खराब कर देता है। यह प्रकाश है जो कवि के शब्दों में अन्धकार से हटाकर पूर्ण प्रकाशमान दिन की ओर ले जाता है।

रात्रि के अन्धकार और दुखों से परे उस प्रातःकाल की ओर ले जाता है जो समुद्र पर से गाती हुई आती है।"

जो व्यक्ति पवित्र हृदय है और जो प्रार्थना करता है उसके लिये माध्यम बनाना सम्भव है। कोई दिन होगा जब प्रत्येक घर में माध्यम होगा। संसार अभी सन्देह और भय के बादलों से ढका हुवा है। किन्तु यह अविश्वास का आवरण जल्दी या देर में दृढ़ विश्वास के सामने दूर हो जायगा।

प्रायः ऐसा होता है कि अच्छे काम को भी बनावटी लोगों के कारण (जो सीधे लोगों को धोखा देते हैं) हांनि पहुँचती है।

ऐसे कामों से कभी २ बड़ा कुफल निकलता है। सर कानन डायल ने (जो प्रसिद्ध जासूसी उपन्यास लेखक थे) ऐसे धोखों का भण्डा फोड़ करने में अपना धन खर्च किया उन्होंने यह इसलिये किया, क्योंकि परलोक-वाद के महत्व पूर्ण मिशन के सम्बन्ध में उन्हें दृढ़ विश्वास था। वह कमीने लोगों की चाल बाजियों से इसे बचाते थे जो इसे अपने अपवित्र उद्देश्य के लिये काम में लाते थे।

'दो संसारों में मेरा जीवन' किताब को एक प्रसिद्ध माध्यम "मिसिज ग्लैडीज आसवर्न लियोनार्ड" ने लिखा है जिसने अपने आध्यात्मिक अनुभव बयान किये हैं जो बड़े ही मनोरञ्जक हैं। Sir Oliver Lodge) सर आलिवर लाज जैसा वैज्ञानिक ने इसकी भूमिका लिखी है। यह बात ही इसका प्रमाण है कि उसमें लिखी बातें सच्ची हैं।

सर आलिवर लाज लिखते हैं कि वह अपनी कहानी को इस विश्वास पर बयान करती हैं कि एक आध्यात्मिक संसार है जिसके साथ सम्पर्क करना कुछ खास परिस्थितियों में सम्भव है उनके विचार में (और मेरे विचारों में भी) उस संसार के निवासी हमारे चारों ओर हैं। किन्तु उनतक हम नहीं पहुँच सकते जब तक उनका स्वागत करने वाला यंत्र हमारे पास न हो। ठीक जैसे डेवेन्डरी और दूसरे स्टेशनों से भेजी गई ईथर की लहरों का ज्ञान हमें है। यद्यपि उन्हें वाणी और राग में परिवर्तन करने के लिये एक ठीक किये हुवे यन्त्र की जरूरत है। परलोककी आत्माओं

से सम्पर्क करने के लिये हमें एक ऐसे मनुष्य की आवश्यक्ता है जिसका शरीर सङ्गठन ऐसा सधा हुवा हो कि वह दूसरी आत्माओं द्वारा अपना शरीर काम में लिया जाने दें जो कि इस प्रकार अपना अस्तित्व प्रमाणित करने में और प्रेम और शान्ति के सन्देश देने में समर्थ है "मिसिज़ ल्योनार्ड" ऐसी ही एक माध्यम हैं, और एक बढ़िया माध्यम हैं, जो मुझे मालूम है।

हम यहां कुछ कहानियां उन बहुत से अनुभवों में से लिखते हैं जो "मिसिज़ ल्योनार्ड" के आध्यात्मिक जीवन काल में हुवे हैं, उनसे पाठकों का मनोरञ्जन होगा।

एक प्रयोग में १५ मिनट प्रार्थना और ध्यान करने के बाद कमरे के एक कोने में रोशनी की चमक दिखाई पड़ी। उस रोशनी के केन्द्र में (D) डी अक्षर साफ २ बनगया। प्रयोग में बैठने वाले हैरान हुवे और उन्हों ने पूछा कि इस का क्या आशय है। मेज़ खटके देने लगी और निम्न लिखित शब्द बने "इस कमरे में मृत्यु (Death in this room) उन्हों ने प्रश्न किया कि "बड़ी डी (Death) मृत्यु के लिये है क्या? उत्तर आया 'नहीं आदमी का नाम-जल्दी ही है" कुछ दिन बाद एक आदमी जिसका नाम 'डी' अक्षर से आरम्भ होता था उस कमरे में अचानक मर गया। "मिसिज़ ल्योनार्ड" कहती है कि "वह हमें बिल्कुल नहीं जानती थी, इसलिये वह सन्देश हमारे लिये किसी महत्व का नहीं है। सम्भवतः जब हम लोग बैठे वह बीमार था और आत्माओं को मालूम था कि उसकी मृत्यु हो जायगी, और

वह हमें यह बताना चाहती थी कि उन्हें ऐसी बातें मालूम हैं जो हमें मालूम नहीं,यद्यपि बहुत बार उन्हें उनकी चर्चा हमसे करने की आज्ञा नहीं होती। बहुत से आदमी परलोक के संदेशों को (Telepathy) मानसिक भावों के कारण बताते हैं। निम्नलिखित कहानी जो मिसिज्ज ल्योनार्ड ने बताई वह बड़ी समाधान कारक है। एक स्त्री मिसिज्ज "केल्वेबैम्बर" नाम की एक दिन १६१६ में माध्यम के कमरे में आई। उसका लड़का लड़ाई में मारा गया था उसने अपनी वियोग व्यथित माता से कहा 'अम्माँ! मैं जानता हूँ कि तुम प्रायः चाहती हो कि मैं तुम्हें कोई प्रमाण दूं जो सर्वथा निश्चयात्मक हो। कोई ऐसी बात बताऊं कि पृथ्वी पर किसी को उसकी बाबत कुछ मालूम न हो'। उसकी माता ने कहा हाँ। 'मैं चाहती हूँ कि तुम ऐसे करसको इससे प्रत्येक पुरुष को मरणोत्तर जीवन में विश्वास करने में मदद मिलेगी। यदि मैं उनको कोई ऐसी बात बता सकूँ जिससे मानसिक प्रभाव की कल्पना दूर हो जाय'। उसने उत्तर दिया अच्छा अम्मां! क्या तुम्हें याद है कि एक लड़का मदरसे में मेरा खास मित्र था हम उसे हमेशा 'छोटी बिल्ली' पुकारा करते थे। यहाँ उसने अपनी माँ को उस लड़के के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिये अनेक बातें बताईं।

माता ने तत्काल कहा 'अलबत्ता मुझे उस की याद आगई किन्तु कुछ समय से हमने उस की बाबत नहीं सुना।'

उसके लड़के ने कहा "बिल्ली" की अभी हाल में मृत्यु हो गई है। वह फ्रान्स की लड़ाई में मारा गया है। एक हवाईजहाज में

उसके गोली लगी थी। उस का शरीर ऐसी जगह पड़ा है जहाँ कुछ समय तक उसका मिलना सम्भव नहीं। मैं उसकी मदद कर रहा हूं कि वह अपने शरीर से और लड़ाई की अवस्था से चित्त को हटा ले क्यों कि जब वह होश में आयेगा और जो कुछ हुआ है उसका उसे ज्ञान होगा तो उसे बड़ा धक्का लगेगा।

किसी को मालूम नहीं कि वह मर गया है और इस संसार में अब जीवित नहीं है, क्यों कि वह उसके वेस में आने की आशा नहीं करते। वह अभी हाल में मरा है। तुम्हारे साथ आज इस बैठने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, इसलिये मैं तुम्हें इस की बावत किसी दूसरे को जानने से पहिले बता सकता हूँ। प्रयोग समाप्त होते ही उसकी माता लड़ाई के कार्यालय में पहुँची किन्तु उसे बताया गया कि जहाँ तक उन्हें मालूम है वह अफ़सर बिल्कुल सुरक्षित है। थोड़े दिन पीछे यह रिपोर्ट हुई कि उसका पता नहीं है और एक साल पीछे उसकी मृत्यु प्रमाणित हो गई वह ठीक उसी दिन मरा था जिस दिन उस लड़के की माता ने अपने पुत्र से 'मिसिज़लल्योनार्ड' के हुवे कमरे में प्रयोग में सन्देश प्राप्त किया था।

निम्नलिखित कहानी जो ग्रन्थकर्ता ने अपने पिता के सम्बध में बयान की है बड़ी मनोरञ्जक है। उन्होंने घर को बड़ी आर्थिक हानि के बाद छोड़ा था। उनकी लड़की प्रवास में पिता के साथ आना चाहती थी। किन्तु अपनी माता के प्रेम के कारण और अपने घर के लिये कुछ आजीविका का प्रबन्ध करने के लिये उसे

घर ही रहना पड़ा। कुछ वर्षों तक उसके पिता का कोई समाचार नहीं मिला। मेज़ के एक प्रयोग में उस ने उन की बाबत पूछा। वह हैरान हुई जब विल्यम के ऐडवर्ड के नाम से किसी ने उत्तर दिया। आवाज़ ने कही कि 'मैं तुम्हारे पिता का भाई हूँ' उस ने यह विश्वास करने से इन्कार किया क्यों कि उसे मालूम था कि उसका एक भाई हैरी नामक था। उसने पूछा कि क्या तुम हैरी हो ?" उस ने उत्तर दिया 'नहीं मैं तुम्हारे पिता का बड़ा भाई हूँ' "तुम ग़लत कहते हो क्यों कि मेरे पिता का कोई बड़ा भाई नहीं था, वही सबसे बड़े थे।"

उसने कहा "मैं उस का भाई हूँ किन्तु मैं तुम्हारे पिता के जन्म से पूर्व मर गया था।"

"पिता जी कहाँ हैं ? क्या वह महाद्वीप में हैं ?"

"नहीं वह इङ्गलैंड में हैं और आत्मा ने उस का पता "कैलेडोनियन रोड, लीडस" दिया।

मिसिज़ लियोनार्ड ने एक चिट्ठी उपरोक्त पते पर भेजी और कुछ समय के बाद उत्तर आया किन्तु वह उसी पते से नहीं था। उस के पिता कैलेडोनियन रोड से दूसरी जगह चले गये थे और चिट्ठी नये पते पर उन्हें मिली थी। कोई व्यक्ति जो उन्हें जानता था, डाकिये को नये पते पर ले गया। पिता का अपनी लड़की के साथ बड़ा सुन्दर सम्मिलन हुआ। अविश्वासी पिता हमेशा परलोक वाद की हँसी उड़ाया करता था, परन्तु अब अपनी आत्म-शक्ति सम्पन्न लड़की के प्रभाव, के कारण कुछ कमज़ोरी के लक्षण

दिखाने लगा। उसने 'पूछा क्या तुम समझती हिकोकोई व्यक्ति वापिस भी आसकता है।' "परन्तु शर्त यह है कि इस लोक में भी कोई ऐसा व्यक्ति हो जो उससे सम्पर्क करना चाहता हो।" कुछ दिन या सप्ताह पीछे पिता को यह पूर्व सूचना मिली कि वह १५ जनवरी को मर जायगा। और वह ठीक उसी तारीख को मर गया अपनी मृत्यु के ३ दिन पीछे वह अपनी लड़की के पलंग के पास प्रकट हुवा। और वह इसलिये कि वह इस प्रतिज्ञा को पूरा करे कि वह ऐसा करेगा, और उसकी घबराई हुई लड़की के मुख से यह शब्द निकल पड़े "ओह पिता जी"! वह मुस्कराया, सिर झुकाया और लोप होगया।

हमें बताया गया है कि पिता ने कई प्रयोगों में अपनी मृत्यु के बाद अपने जीवित रहने का प्रमाण दिया और अपनी वियोग व्यथित लड़की को आशा पूर्ण और प्रसन्न करने वाले सन्देश दिये। १९१४ के जाड़े की एक सन्ध्या को, "मिसिज ल्योनार्ड" कहती हैं कि वह एक मित्र के घर मेज के प्रयोग के लिये गई। कई छोटे सन्देश आएँ और तब मेज बिल्कुल शान्त हो गई। यह खयाल हुआ कि प्रयोग समाप्त हो गया किन्तु यकायक मेज हिलने लगी। पहिले तो अनिश्चित रूप में रुक रुक कर और फिर धीरे २ इसके झटके अधिक जोर के और दृढ़ होते गये। कुछ शब्द लिखे गये। एक ईसाई नाम और उसका आरम्भिक नाम। यह मिसिज ल्योनार्ड के मामा का नाम था, उन्होंने इसके मानने से इन्कार कर दिया क्यों कि उसके पास यह

विश्वास करने के कारण थे कि वह मरे नहीं। उन्होंने कहा 'यह मेरे एक मामा का नाम है। किन्तु पूरा विश्वास है कि वह जीवित हैं और अच्छी तरह हैं। नहीं तो मुझे खबर मिली होती। मुझे विश्वास है कि यह वह नहीं हो सकते।'

उन्हों ने अपने मन का भाव अभी प्रकट ही किया था कि मेज़ ऊँची उठ गई और उसने वास्तव में यह शब्द खटकों से बताये हाँ मैं वही तुम्हारा मामा हूँ और मेरी अचानक मृत्यु हो गई। ईसाई और कुटुम्ब का नाम फिर लिखा गया, मिसिज़ ल्योनार्ड को फिर भी विश्वास नहीं हुआ और घर का पूरा पता पाने का उसने हट किया जहाँ पर वह रहते थे। यह बड़ी छोटे २ विवरण सहित लिखा गया। मेज़ के पास बैठने वालों में एक दिव्य द्रष्टा थे। उन्होंने कहा कि जब सन्देश दिये जा रहे थे तो उन्होंने कुर्सी के पीछे एक शक्ल ऐसी साफ़ देखी जो इस वर्णन से ठीक २ मिलती थी जो उसकी जीवित अवस्था का दिया गया था। मामा ने कुछ और समाचार भी दिये कि उस का सब से छोटा लड़का जर्मनी में युद्ध-बन्दी के रूप में रुका हुवा है। मिसिज़ ल्योनार्ड लिखती हैं "कि मुझे जो जो कुछ कुटुम्ब की हलचल को बाबत मालूम था उसकी सङ्गति इसके साथ नहीं बैठती थी। मैं बहुत परेशान हुई। तब मेरे मामा ने मुझे कहा कि 'तुम चिट्ठी लिख कर अपनी मामी को सब बातें बतावो जो मैं ने कहीं हैं और मेरे सब बयानों की तस्दीक करो।

मिसिज़ ल्योनार्ड ने अपनी मामी को लिखा और उन्हें मालूम

हुवा कि वास्तव में उनके मामा का देहान्त ३ सप्ताह हुवे हो गया था, किन्तु कुछ घटनाओं के कारण उसे इसकी सूचना नहीं दी जा सकी और उस के मामा इस बात से बड़े दुखी थे कि जब कि युद्ध आरम्भ हो गया था तो उन का छोटा लड़का जर्मनी में से क्यों गुज़रे।

मि० एच० अर्नेस्ट हन्ट अपनी पुस्तक 'जिज्ञासु के लिये पर-लोक-वाद में लिखते हैं "हमें यह बात निश्चय कर लेनी चाहिये कि परोक्ष जगत के साथ बढ़ता हुआ सम्पर्क मनुष्य का स्वाभाविक प्रारब्ध है। और कला धर्म और विज्ञान भी इस ओर ही सङ्केत कर रहे हैं। इसलिये चाहे हम पसंद करें या न करें हमारी गति प्रति वर्ष आत्मिक और आध्यात्मिक जगत की ओर अग्रसर हो रही है।" यह शब्द कितने सत्य हैं। यह बार बार कहा गया है कि परलोक-वाद सब से उच्च विज्ञान है किन्तु यह ग़लत ख़याल है कि इस विषय की ओर ख़ाली कौतूहलवश या अपने स्वार्थमय उद्देश्यों को लेकर प्रवृत्तहोता।

दुर्भाग्यवश इस संसार में रुपया ही मनुष्य की योग्यता की कसौटी बना हुवा है किन्तु परलोक में उसका कुछ मूल्य नहीं है वहाँ पर न Stock Exchange का दफ़्तर है न चाँदी सोने की मण्डी है। बैङ्कर्स और पूंजी पतियों को परलोक में कोई धन्दा नहीं है। यदि आत्मा तुच्छ बातें करती है या झूठी निकम्मी भविष्यवाणियाँ करती हैं तो यह माध्यमों की कमियों के कारण हैं जो कि ऊंची आत्माओं का आवाहन नहीं कर सकतीं। इस

कारण से परलोक-वाद पर आपत्ति करना व्यर्थ है। यह ऐसा विज्ञान है कि जिसका उपयोग और दुरुपयोग में अग्नि से मिलान कर सकते हैं। हम सब जानते हैं कि अग्नि अच्छा नौकर है परन्तु बुरा मास्टर है। परलोक-वाद निस्सन्देह मनुष्य को स्तम्भित करने वाला है किन्तु किसीभी व्यक्ति को इस विज्ञान में नहीं पड़ना चाहिये जब तक कि उसे निश्चय न हो जावे कि उसने इस लोक का त्याग कर दिया है, और वह प्रभु की इच्छा पूरा करने के लिये प्रभु की सेवा करने को राजी न हो जावे। परलोक-वाद की सफलता उन व्यक्तियों की श्रेणी पर निर्भर है जो अपने को माध्यम बनने के लिये पेश करते हैं। माध्यमता इस संसार की उन्नति के लिये एक ऊंचा काम है जैसा कि (Mr. W. T. Steed) मि० डब्ल्यू० टी० स्टैड ने कहा था यदि हम में से अधिकांश ने माध्यमता का काम ले लिया होता तो भलाई करने की बजाय इस से आपदाओं का द्वार खुल गया होता। इसका परिणाम यह होगा नीचे लोकों की आत्माएं इस लोक पर कब्जा कर लेंगी और खराबी फैलावेंगी। वैज्ञानिक और विद्यार्थी ही स्वभाव से उच्च आदर्शों के प्राप्त करने के योग्य हैं। उन्हें ही आत्मिक आन्दोलन में सम्मिलित होना चाहिये क्यों कि वही उद्देश्य को अग्रसर कर सकते हैं।

जो लोग आध्यात्मिक घटनाओं के वैज्ञानिक प्रमाण मिल जाने पर भी उनकी हंसी उड़ाते हैं वह सबसे बड़े पापी हैं। वह नहीं जानते कि क्या करें। इन में से बहुत से ऐसे कट्टर

जड़वादी हैं कि वह अपनी बेहूदगी का प्रदर्शन करने में लगे हुवे अपने झूठे देवताओं को चिमटे रहते हैं और भ्रम निवारण से डरते हैं। घमण्डी विद्वान् जो सम्भव बात पर हँसता है वह मूर्ख के आस पास ही है। जान बूझ कर सत्य घटना से बचना और अभिमान-पूर्ण हास्य से पीठ फेर लेना सत्य का दिवाला निकालना है ऐसा "विक्टर ह्यूगो" का कहना है। वैज्ञानिक का काम है कि हर प्रकार की घटना का अनुशीलन करे और सच्चाई को और कार्य करने वाली शक्तियों को मालूम करने के लिये पक्षपात हीन मनसे विचार करे। जैसा "सर विल्यम कामसन" ने कहा है। "विज्ञान प्रतिष्ठा के सिद्धान्त से बंधा हुआ प्रत्येक समस्या का सामना निडर होकर करने के लिये है।"

यदि अदृश्य रूप से कार्य करती हुई शक्तियों को ठीक २ समझा जासके, और परलोक का ज्ञान सर्वसाधारण को वैज्ञानिक प्रमाणों द्वारा समझाया जाय तो हमारी यह महायुद्ध से आक्रान्त और अपने पापों द्वारा लदी गई सजाओं से कराहती हुई दुनियां परमात्मा का शान्ति, और विश्राम और सन्तोष से पूर्ण बगीचा बन जाय।

हमें "बैन हैट" की अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "चमत्कारों की किताब" में से एक कहानी याद आती है। परमात्मा संसार की गड़बड़ का विचार कर रहे थे। ईसामसीह का प्रचार असफल हो चुका था। लोगों ने अपने पैदा करने वाले परमात्मा को भुला दिया था। परमात्मा ने कहा कि मुझे यह बात स्वीकार नहीं कि

जड़ वस्तु बोले, रेत स्वप्न देखे और परमाणु विचार करें। रेत के उन्नति कर विचार बन जाने में कुछ गड़बड़ है जिस पर मैं ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। अलबत्ता मनुष्य जाति के इन सुनाई देने वाले और विचार करने वाले परमाणुओं में से विचार का विकास हुआ है। यह विचार ऐसा रही है कि उस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। किन्तु मुझे विचार करना ही होगा क्यों कि इसमें बड़ी गड़बड़ी है। मेकाईल परमात्मा का प्यारा फरिश्ता था। उसने मनुष्य के विचार का इतिहास अध्ययन करना शुरू कर दिया और उसकी रिपोर्ट थी कि यह विचार हजारों शक्लों का प्रतिबिम्ब है जो उस अस्तित्व की छोटी परिछांई है। जिस पर मनुष्य चलते फिरते हैं। और यह परिछाईं रहस्य पूर्ण रीति से और परिछाइयों को पैदा करती है जो शून्य के द्वारा शून्य में पड़ती है यह युक्तिवाद कहलाता है। इन परिछाइयों में भूलकर एक दूसरे से प्रेम करते हैं। एक दूसरे की हत्या करते हैं और अजीब ढंग से वह मिट्टी में लड़खड़ाकर मिल जाते हैं। यह लड़खड़ाना और चिल्लाहट जो इसके साथ होती है, इतिहास कहलाती है। क्योंकि इनका विचार उन परिछाइयों की संक्षिप्त याददाश्त है जिन्होंने उनको कभी समाप्त न होने वाली लड़ाइयों में प्रवृत्त कर दिया है। जैसे भूख से प्रेरित पशु खूराक के लिये एक दूसरे का गला फाड़ डालते हैं। इसी प्रकार एक विचार दूसरे विचार पर आक्रमण करता है।

मेकाईल ने कहना जारी रखा "हमारे विचार के विपरीत यह

कुछ नहीं जानता तो भी यह सोचता है। यह एक ऐसे पशु की जबान है जो एक गुफा में से (जो भयंकर हड्डियों से भरी है) मूर्खता पूर्ण दुम हिलाता निकलता है। वह ऐसी चीज़ों का ध्यान करते हैं जिन पर विश्वास नहीं कर सकते और ऐसी चीज़ों पर विश्वास करते हैं जिनका वह विचार नहीं कर सकते। यह है उनका धर्म। वह अपने दिमाग़ों के शून्य में नये नाम उस वस्तु के ढूंढ़ते हैं जो सदा से उनकी दृष्टि से छिपी हुई है। यह उनका विज्ञान है वह अपने कुछ रहस्यों को उद्‌घाटन नहीं कर सकते किन्तु जैसे ही किसी रहस्य का उद्‌घाटन होता है। वह उसे वैसे ही रहस्यमय अन्धकार में दबा देते हैं। जिससे उन्हें उसके समझने में रुकावट होती है जिसे वह जानते हैं। और जैसे हैं उससे बड़ा होने की अजीब इच्छा में वह एक दूसरे को मुर्दों के ढ़ेर में परिवर्तित कर रहे हैं यह है उनकी राजनीति।

वह अपने मनों की बढ़ती हुई धुन्द में लड़खड़ाते फिरते हैं और अपनी तर्क शक्ति की गाढ़ छायाओं में जीवित रहते हैं और मर जाते हैं। अन्धे होते हुवे वह रोशनी की बातचीत करते हैं। मूर्ख होते हुवे वह बुद्धिमत्ता की चीख पुकार करते हैं, भयङ्कर होते हुवे वह फ़रिश्तों की तरह रोते हैं। मृत्यू के कीड़े से खाये जाते हुवे वह देवताओं की तरह हँसते हैं।

हमें बताया जाता है कि परमात्मा ने मेकाईल फ़रिश्ते को इस पृथ्वी पर अपना सन्देश वाहक और सत्य वक्ता बनाकर

भेजा था। तब यह कथा बयान की जाती है कि कैसे मेकाईल ने बच्चे का रूप धारण किया, और उसे एक कुमरी अपनी चोंच में उठा लेगई और उसे एक बच्चों के रहने के घर के पास डाल दिया। 'सारा' बूढ़ी मेहतरानी ने इस खज़ाने को उठाया और इस बच्चे को अपने बहुत प्रेम से पाला। बुढ़िया मर गई और बच्चा बढ़कर लड़का होगया और अनन्त पीड़ा और कष्ट पूर्ण संसार में आता है।

लड़के को अपने स्वर्गीय आगमन स्थान का और जो काम करने का उद्देश्य था स्वयं ज्ञान था। किन्तु उस पर आपत्ति पर आपत्ति आती हैं। वह परमात्मा को और अपने उद्देश्य को भूल जाता है मेकाईल अपने जीवन के ५० से ऊपर वर्ष इस पृथ्वी पर दुख, कष्ट, बीमारी और निराशा में बिताता है, और आखिर में हस्पताल में किसी व्यक्ति के भी रोये बग़ैर सारा की याद करता हुवा मर जाता है जिसने बचपन में उसकी माता का काम किया था। वह मनुष्यता का एक अत्यन्त दुखी दृश्य दिखाता हुवा मर जाता है। हमारा उद्देश्य इस कहानी का (जो मर्मपूर्ण) है ज़िक्र करने से केवल यह है कि हमारी बाईबल और कुरानों के (और जो कुछ भी रहस्यमय वाणियाँ प्राचीन पैग़म्बरों ने उच्चारण की हैं उनके) बावजूद हम लोग ईश्वर को भुला देते हैं। परलोक-वाद का ज्ञान हमें निश्चित रूप से परमात्मा और परलोक के निकट लाता है। हम कभी अपना मार्ग नहीं भूल सकते, और परमात्मा के प्रताप से प्रेरित

हुवे हम अपने जीवन को शाश्वत शान्ति और प्रसन्नता के लिये ढालते हैं जिसका भले आदमियों को वचन दिया गया है।

संसार में मूर्ख, विद्वान्, अविश्वासी और संदिग्ध और दुविधा में पड़े हुवे समालोचक हैं। वर्तमान परलोक-वाद उलझा हुवा मकड़ी का जाला है कुछ समालोचक खयाल करते हैं कि यह मज़ाक है। कुछ समझते हैं कि यह अन्तर्मन के साथ खेलना है। मि० "फ्रैन्क पोडमोर" ने एक बड़ी पुस्तक शब्दाडम्बर पूर्ण अधिक 'नया परलोक-वाद' के नाम से निकाली है। उदार मन से एक विद्यार्थी के रूप में उसे पढ़ने से मालूम होता है कि विद्वान् लेखक ने अपना सब परिश्रम जो इस में खर्च किया है अन्यत्र अधिक उपयोगी होता। उन जैसे समालोचक सब प्रकार के प्रश्न करते हैं 'ऐसी २ स्थितियां क्या जरूरी हैं? माध्यम की और चक्र की क्या ज़रूरत है? प्रत्येक मनुष्य माध्यम क्यों नहीं होना चाहिये? प्रयोग के कमरे में अंधेरा क्यों हो? गाना बजाना क्यों किया जाय? जब भी हम चाहें उसी समय घटनाएँ क्यों न घटें? हम भी ऐसे समालोचकों से पूछ सकते हैं फ़ोटोग्राफ़ के शीशे अन्धेरे में ही क्यों धोये जाँय रोशनी में क्यों नहीं?

दूसरे ऐसे व्यक्ति भी हैं जो अपने विचार के अनुसार विश्वास करनेमें ऐसे निमग्न हैं कि वह किसी प्रकार भी उन्हें त्यागेंगे नहीं और तब ऐसे मूर्ख व्यक्ति भी हैं जो प्रमाण के लिये अपने स्वर्गीय सम्पूर्ण मेहमानों की जीवनी पूछने का हठ करेंगे, और तमाम विश्व का शहर वार वर्णन चाहेंगे,

जैसा कि एक लेखक ने हंसी में कहा है। हम ऐसे समालोचकों पर उनके सारहीन विरोध के लिये केवल उन पर दया प्रकाशित करते हैं।

अध्याय ६

आत्माओं से मिलना

यद्यपि थियासोफिस्टों का परलोक-वाद में विश्वास है, और "मैडम ब्लैवटस्की", "लैडबीटर" और अन्यव्यक्ति ऊँचे दर्जे के माध्यम थे, जिनकी पुस्तकों से इस विषय पर बहुत प्रकाश पड़ता है, तथापि थियासोफ़ीकल समिति कमरे में प्रयोग करने के परलोक-वाद के विरुद्ध है। एक प्रकार से यह ठीक भी है क्यों कि इस मार्ग में इतने गड्ढे और खतरे हैं जिनको पूर्व के अध्यायों में बताया जा चुका है। परलोक-वाद एक अत्यन्त गम्भीर विषय है जिसकी ओर ऐसे विद्यार्थी को ही जाना चाहिये जिसकी नेक नियती निस्सन्दिग्ध हो। सम्बन्ध का नियम आध्यात्मिक-जगत में ही काम नहीं करता बल्कि परलोकगत आत्माओं के सम्बन्ध में भी। समान, समान की ओर जाता है और यदि माध्यम पवित्र हृदय होता है और निस्स्वार्थ भाव से मानव जाति की सेवा करता है तो अच्छी आत्माएँ आकृष्ट होती हैं और ऐसी दशा में आत्माओं का मिलन लाभ की चीज़ बन जाती है इससे मन प्रसन्न होता है और हमारे जीवन की गति को नया रङ्ग देता

है। हमारे पास ऐसे उदाहरण हैं कि जिनका शरीर बिगड़ गया है या जिनके दिमाग़ खराब हो गये हैं,वह आत्माओं के सम्मिलन के दुष्परिणामों की बहुत ही दुखद और दमनीय मिसालें हैं किन्तु यह किसका क़सूर है ?

जो आदमी मोटर चलाना चाहता है उसे मोटर की बनावट का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, उसके बाद उस पर मोटर चलाने का भरोसा किया जा सकता है। वैज्ञानिक जो प्रयोगशाला में काम करता है वह डरता नहीं, क्योंकि वह रसायन विद्या के नियमों को जानता है और बड़ा सावधान है। आत्माओं का सम्मिलन लाभदायक और उपयोगी भी हो सकता है यदि ठीक तरह के आदमी इसको करें। और उनको इस विषय के नियमों का पूरा ज्ञान हो और उचित सावधानी वर्ती जाय जैसा कि जेमज्ञ राबर्टसन(James Rabertson)ने अपनी पुस्तक 'Spiritism' परलोक-वाद में लिखा है। हमें विश्वास करना चाहिये कि यदि दृश्य और अदृश्य के बीच मिलने का मार्ग है तो वह विश्व की सुव्यवस्था का ज़रूरी अङ्ग होना चाहिए जब 'जेराल्ड मैसी' (Gerald Massey) से (जो वरदान प्राप्त कवि और ब्रह्मज्ञानी थे) पूछा गया कि क्या मरे हुवों के साथ सम्बंन्ध रखना ग़लत नहीं है ? तो उसने उत्तर दिया:—मेरा विश्वास है कि परमात्मा हमारा मालिक है, वह अभी भी शासन करता है, जिस की फूँक मात्र से अनेक लोक ओस की बिन्दुओं की तरह काँप उठते हैं। और यदि परलोक का पता लग गया है तो ऐसा नहीं

हो सकता कि उसे मालूम न हो, वह उसी की इच्छा से हुवा होगा लोगों के खाली वहम से नहीं।

मनुष्य एक आत्मा है और यह उचित है कि वह अपनी उपयोगिता का विस्तार और अपनी दृष्टि-कोण का विस्तार ऊँची आत्माओं के निरीक्षण और सहयोग से करे। माध्यमता में स्वभावतः कोई वस्तु खतरनाक नहीं है, यदि आवश्यक सावधानियाँ बरती जावें। किन्तु इससे इन्कार नहीं हो सकता कि माध्यम के शरीर और मन पर बड़ा भारी खिंचाव पड़ता है। कुछ लोग इस खिंचाव को बर्दाश्त कर सकते हैं और कुछ नहीं कर सकते। "सर कानन डायल" अपनी पुस्तक 'अज्ञात का किनारा' (The Edge of the Unknown) में कहते हैं कि उन्होंने एक बार अपने को अपने शरीर से एक्टोप्लाजम (Ectoplasm) निकालने के लिये माध्यम बनने दिया और इसका उन्हें भारी मूल्य चुकाना पड़ा। क्योंकि उनका शरीर शक्ति के भारी ह्रास के योग्य न था और उन्हें पक्षाघात का दौरा हो गया। सर डडलेमेयर्स (Dudley Meyers) 'Spirtiesl Forces' आध्यात्मिक शक्तियों के कर्ता ने भी अपना अनुभव दिया है। वह अच्छे स्वयं लेखक थे किन्तु उन्हें स्वयं लेखन छोड़ना पड़ा क्योंकि इससे उनकी नाड़ियाँ कड़कती थीं।

इसके विपरीत ऐसी अनन्त मिसालें उन लोगों की हैं जिन्होंने वर्षों माध्यम का काम किया है और उन्होंने शरीर पर किसी

बुरे प्रभाव की शिकायत नहीं की। "मिसिज़ लियोनार्ड" और 'शाडेस्मांड' ग्रन्थकर्ता माध्यम बहुत मशहूर हैं जिनको परलोक की आत्माओं के सम्पर्क से स्वास्थ्य में ज़रा सी भी गड़बड़ नहीं हुई। डब्ल्यू० टी० स्टेड टाईटानिक जहाज़ के डूबने पर मरने से पहिले १५ वर्ष तक स्वयं लेखक माध्यम थे, और उन्होंने कभी माध्यमता के फलरूप शारीरिक पीड़ा की कभी शिकायत नहीं की। यदि तुम्हें अपने परलोक के पथप्रदर्शकों की नेकनियती पर सन्तोष हो तो तुम्हारी प्रार्थनायें और तुम्हारे उद्देश्य की पवित्रता बुरी आत्माओं के प्रवेश के मार्ग में रुकावट हो जाती हैं। घरेलू चक्र अपने प्यारों से मिलने का सबसे अच्छा तरीका है किन्तु तब भी जैसा (Shawdesmond) "शाडैसमोंड" कहते हैं "आध्यात्मिक परिस्थितियों का किसी दक्ष पुरुष से सीख लेना रक्षा के लिये ज़रूरी है।"

थियोसोफ़िस्ट यह भी कहते हैं कि कमरे के प्रयोग का परलोक-वाद उस आत्मा की उन्नति में बाधक है जिसे बुलाया जाता है। ए० पी० सिनेट के नाम महात्माओं के पत्रों में निम्नलिखित निषेध है—

"जैसा मैंने कहा था यदि माध्यम और परलोक-वादी यह जान लेते कि प्रत्येक नये फ़रिश्ते के साथ जिसका स्वागत वह बड़े आनन्द से करते हैं वह नये जीवन के लिये अनेक बुराइयों को पैदा करते हैं जो इसके बुरे प्रभाव में पैदा होगा, और प्रत्येक प्रयोग के साथ विशेषतः प्रत्यक्ष दर्शन के प्रयोग में वह आपत्ति

के कारणों की वृद्धि करते हैं। ऐसे कारण जो उस अभागे जीव को अपने आध्यात्मिक जीवन में असफल बनाते हैं या उसका पुनर्जन्म पहिले से भी बुरा बनाते हैं, तो वह अपने आमन्त्रण में कम उदार होते। (Page पृष्ठ 113) इसके विपरीत गृह प्रयोगों में प्राप्त ढेरों सन्देश यह प्रमाणित करते हैं कि यह प्राकृतिक नियम है और शरीरधारी आत्मा का अशरीरी आत्मा के साथ वार्तालाप सर्वथा उचित है। यह विचार कि आत्मा का सम्मिलन परलोक में आत्मा की उन्नति को रोकता है, स्पष्ट ग़लत है। 'आत्मा की सहायता द्वारा इलाज' के लेखक आत्मा के सन्देश के उदाहरण देते हैं जिनसे प्रमाणित होता है कि किसी प्रकार भी आत्माओं की तरक्की में बाधा नहीं पड़ती। इसके विपरीत वह प्रसन्नता पूर्वक वार्तालाप का अवसर मिलने से वह कृतज्ञ होते हैं। नीचे एक उच्च कोटि की आत्मा का उत्तर है जो उसने इस प्रश्न के उत्तर में दिया है कि क्या निरन्तर वार्तालाप आत्मा की उन्नति को रोकता है?

"ओह नहीं, नहीं—यह सत्य नहीं है। यह विचार भी भयङ्कर है.................मैं तुम्हें आग्रह पूर्वक कहता हूँ कि इस मुलाक़ात से जो सुख मिलता है उसका पवित्र प्रभाव होता है और आत्मा को अपने स्वर्गीय पिता की ओर ऊँचा उठाता है, और उन्नति में सहायक है। पिता खोये हुवे बच्चे को पाता है जिसको वह खोया हुवा समझता है। स्त्री अपने प्यारे पति को पाती है उनका परस्पर सम्बन्ध प्रसन्नता पैदा करता है। निरन्तर

सम्पर्क उस प्रसन्नता की वृद्धि करता है यहाँ तक कि वह सब शरीर में व्याप्त हो जाता है। यह अज्ञान है जो परमात्मा की उस आज्ञा को रोकता है जिससे हम तुम्हें अपना सम्पर्क कराते हैं। एक मिनिट भी यह खयाल न करो कि हमें इससे हानि पहुँचती है। जब लोग यह कहते हैं कि हमें पृथ्वी पर आने में कष्ट होता है, वह नहीं जानते कि हमें इससे कितनी खुशी होती है।"

जब तक प्रबल इंच्छा और ठीक भाव हैं; परलोकगत व्यक्तियों से संसर्ग बुरा काम नहीं है। यह दोनों सिरों पर अदृश्य और दृश्य आत्माओं के लिये सुख और प्रसन्नता का पुल बाँधता है किसी व्यक्ति को भी प्रयोग करने को नहीं बैठना चाहिये जब तक सफल और प्रसन्न प्रयोग की आरम्भिक आवश्यक्ताओं का विश्वास न हो। प्रयोग की सफलता के लिये माध्यम का चरित्र और बैठने वालों का चरित्र ही आवश्यक नहीं यह भी आवश्यक है कि तार के दूसरे सिरे पर पथप्रदर्शक आत्मा भी उपस्थित हो जो चक्र को बुरे प्रभावों से बचावे। माध्यम के लिये सबसे बुरा खतरा यह है कि जब उसके पार्थिव शरीर में कोई बुरी आत्मा प्रविष्ट हो जाती है। निम्नलिखित कहानी माननीय सी० डब्ल्यू. लैडवीटर की किताब 'मृत्यु के दूसरी ओर' (Ths other side of Death) में बतलाती है कि आत्मायें कहाँ तक बदला ले सकती हैं यह पार्थिव शरीर छोड़ देने के बाद भी इस लोक की आत्माओं से बदला लेती हैं।

५ अप्रैल १९०४ को एक प्रयोग में माध्यम सहित ६ बैठने वाले थे। ग्रन्थकर्ता यह नाम देता है:—डा० गुरुपी बेनज़ाना, अर्नेस्टोज़ोबोनो, केविलियर कालोप्रेटी, सिगनोरा गुडेरा प्रेटी, एक एल० पी० माध्यम और एक साहब जिनका नाम उन कारणों से नहीं लिखा जाता जिनको हम समझ जावेंगे, जैसे हम कहानी को पढ़ेंगे। माध्यम का पथ प्रदर्शक आत्मा उसका पिता 'लिंगी' नाम का था। इस प्रयोग में अभाग्यवश वह मोजूद न रह सका और माध्यम ने बड़ा विचित्र व्यवहार प्रदर्शित किया। भय से आक्रान्त वह अदृश्य शत्रु से लड़ रहा था, वह कमरे के एक कोने से दूसरे कोने में दौड़ रहा था, बुरी दिखाई देने वाली आत्मा के पंजे से बचने का प्रयत्न करता हुवा, माध्यम पुकारा, पीछे हट जावो। मैं तुम्हें नहीं चाहता। मेरी मदद करो। मुझे बचावो। कहा जाता है कि प्रयोग देखने वालों ने अपने विचार दृढ़ता पूर्वक माध्यम के पथप्रदर्शकपर जमाये और उन्हें बड़ा सन्तोष हुवा कि शान्तिस्थापित हो गई। माध्यम के पथ-प्रदर्शक माध्यम के पिता ने उनको बताया कि एक नीच आत्मा को एक बैठने वाले से बड़ी घृणा थी। उसे दबालिया इससे वह माध्यमको अरक्षित छोड़नेको मजबूर हो गई। उसने अपना यह बयान समाप्त ही किया था और वह उन्हें प्रयोग बन्द करने का परामर्श दे नहीं पाया था कि उसी बुरी आत्मा ने क्रोध से जलते हुवे फिर विघ्न किया और पथ प्रदर्शक फिर लाचार हो गया। इस बार आत्मा बिचारे माध्यम के गले को पकड़ने में सफल हुई और उसके शरीर में प्रवेश कर गई। कुछ अद्भुत

दृश्य दिखाई दिये। माध्यम का चेहरा बिल्कुल बदल गया। वह लाल भयङ्कर हो गया। हाथ कांपने लगे और उस बैठने वाले की ओर फैल गये जैसा कि भयङ्कर बदला लेने के लिये हो। तब कड़कती हुई आवाज़ में यह शब्द यकायक निकल पड़े 'ओ डर-पोक! आखिर मैंने तुम्हें पाया है। मैं शाही जहाज़ की फौज में था। क्या तुम्हें ओपार्टो का झगड़ा याद नहीं है? तुमने वहाँ मुझे मार दिया था। किन्तु आज मैं अपना बदला लूंगा और तुम्हारा गला घोटूंगा। उस बैठने वाले को पकड़ लिया गया और माध्यम के हाथ उसके गले में लोहे की संडासी की तरह जकड़े गये। ऐसी भयङ्कर स्थिति में जब कि मालूम होता था कि वह व्यक्ति मर जायगा, चारों बैठने वालों ने बड़ी जबर्दस्त शक्ति से आवेशित माध्यम को उसके पास से हटाया। उस व्यक्ति को कमरे से बाहर निकाल दिया गया और दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। इससे जोश में आकर रुकावट दूर करने का व्यर्थ प्रयत्न किया गया। हताश होकर माध्यम फ़र्श पर गिर पड़ा और आत्मा लोप हो गई। इस घटना के बाद वस्तु स्थिति का पता लगाना सम्भव हुवा, माध्यम के विचित्र शब्दों से पता चला, यह मालूम हुवा कि वह व्यक्ति कुछ वर्ष हुए जहाज़ी फ़ौज में अफ़सर था और उसे त्याग पत्र देने को बाध्य होना पड़ा था। कहा जाता है कि एक दिन जब उसका जहाज़ पुर्तगाल के नगर आपोर्टो में पहुँचा, वह किनारे पर दिल बहलाने को उतरा। एक सराय के पास से गुज-रते हुवे उसने झगड़ते हुए आदमियों की आवाज़ सुनी जो शराब

पिये हुवे थे। यह कमरे में दाखिल हुवा और वह देखकर हैरान हुवा कि उसके अपने ही आदमी शराब पी रहे थे और झगड़ रहे थे। उसने उनको हुक्म दिया कि फ़ौरन जहाज़ पर वापिस चलो। उनमें से एक ने जो दूसरों की अपेक्षा अधिक नशे में था, आज्ञा मानने से इन्कार किया और गाली दी। क्रोध में आकर वह शराब पीये हुवे मल्लाह पर टूट पड़ा और उसे उसी जगह मार दिया। अलबत्ता उसका कोर्ट मार्शल हुवा और उसे ६ माह की क़ैद का दण्ड दिया गया। सज़ा समाप्त होने पर उसे जहाज़ की नौकरी छोड़ने को मजबूर किया गया और उसने व्योपार आरम्भ किया।

कराची में एक प्राइवेट प्रयोग में एक I.C.S. आफ़ीसर की आत्मा का जो क़त्ल किया गया था, आवाहन किया गया और इस क़तल के सम्बन्ध में कुछ रहस्य था आत्मा ने भयङ्कर बदला लेने के शब्द बोले जिससे मालूम होता है कि आत्माओं के मुआमले में व्यवहार करना कैसा खतरनाक है। इस विषय में उन्हीं लोगों को पढ़ना चाहिये जिनको इस विषय का काल्पनिक और क्रियात्मक ज्ञान है। क्योंकि हमारी सच्चाई और अच्छे से अच्छी नियत भी इस मार्ग की कठिनाइयों से हमें बचा नहीं सकती। इस ख़याल से कि हमारे ऊपर यह आरोप न किया जाय कि हमने उन कठिनाइयों और ख़तरों को नहीं बताया जो परलोक-गत आत्माओं से बातचीत करने में आते हैं हमने निस्सङ्कोच इसका अन्धेरा पृष्ठ भाग भी

सामने रख दिया है। किन्तु इसके ज्ञान ,का सुख और स्वर्गीय संसार की झांकी जो हमें माध्यमता द्वारा प्राप्त होती है वह इतने महत्व की वस्तु है कि आध्यत्मिकता प्रेमी के मार्ग में आने वाली वाली कठिनाइयों से आध्यात्मिक दर्शन का विद्यार्थी अपने अनुसन्धानों में हतोत्साह नहीं होगा। बहुत से माध्यमों ने मित्र आत्माओं की सहायता से दिव्य दृष्टि, आचरणज्ञान की शक्ति, अच्छे विचारों को प्रवेश करने और रोग चंगा करने की शक्ति प्राप्त की है। क्या यह कुछ कम लाभ है ? क्या कोई वस्तु जो हमारी आध्यात्मिक उन्नति को बढ़ावे, स्वागत करने योग्य नहीं है ?

हमें उस आध्यात्मिक गायक 'टैनीसन' की निम्नपंक्तियाँ स्मरण होती हैं:—

परलोक गत व्यक्ति ने एक एक शब्द और एक एक लाईन अतीत की सम्पर्क कराई। अन्त में मुझे तत्काल ऐसा लगा कि जीवित आत्मा मेरे सामने खड़ी है।

अध्याय १०

परलोक-वाद की वास्तविक उपयोगिता—

विद्वानों ने परलोक-वाद को एक विज्ञान स्वीकार किया है। जोनेथन स्टैग (Jonathan Stagge) द्वारा अग्नि के लिये अन्त्येष्टि कर्म (Funeral for fire) लिखा ग्रन्थ एक अमीर

साहूकार की कहानी है, जो बनावटी प्रयोगों की शरण लेकर यह प्रभाव डालना चाहता है कि उसकी धर्मपत्नी मर गई है। जब कि वास्तव में उसने उसे एक स्वास्थ्यप्रद प्रदेश में एक अकेले कमरे में कैद कर रखा है और एक दूसरी स्त्री से अपने विश्वास-घात पूर्ण प्रेम की तृप्ति कर रहा है। इससे बढ़कर दुःखपूर्ण पाप कर्म क्या हो सकता है! किन्तु इसका यह आशय नहीं कि परलोक-वाद धोखा है।

हम पहिले ही कह चुके हैं कि परलोक-वाद के नाम से अनेक धोखे दिये जाते हैं। धोखा देना एक आम पेशा है। पारलौकिक घटनाओं की नक़ल होशियार जादू के खेल दिखानेवाले करते हैं। किन्तु सभी माध्यम जो रोजगार के तौर से इसे करते हैं, दयानतदार नहीं होते। वह बहुत सी सन्देहपूर्ण क्रियायें करते हैं। ऐसे शैतानों की धूर्तता और चालाकी का भंडा फोड़ करने में ही "सरआर्थर कानन डायल" ने अपनी सब सम्पत्ति लगा दी और धूर्तों के कारनामे प्रकट करते रहे। संसार के सभी कामों में धूर्तता बरती जाती है। यदि शराब बेचने वाला शराब की जगह रंगाई का मसाला बेचता है तो इसका यह मतलब नहीं है कि प्रत्येक शराब बेचनेवाला ही शराब में मिलावट करता है। बहुत से बनावटी डाक्टर संसार में हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि रोगों का इलाज करने वाले हैं ही नहीं और रोगों को अच्छा करना धोखा है।

माध्यम परलोक के बेतार के तार के खम्बे हैं। जो व्यक्ति

अपने को माध्यम के तौर पर पेश करता है निस्सन्देह निस्स्वार्थ काम करने वालों की उच्च श्रेणी में सम्मिलित होता है। किन्तु जो व्यक्ति कुछ फ़ीस लेकर प्रत्येक व्यक्ति के लिये अपने को किराये पर देने को तय्यार है या जो उसकी सेवाएं अपने मृतकों से बातचीत करने को किराये पर लेने को तय्यार हों वह धीरे धीरे निराशा और अधोगति को प्राप्त होते हैं। मानवी इतिहास में इस से अधिक दुखद कोई बात नहीं है, कि वह व्यक्ति जो हमारे सन्मान के पात्र हैं वह बुरी आत्माओं का शिकार बन जायें जो उनके मन और शरीर पर कब्जा करके अन्त में उन्हें बदनाम और नष्ट करदेती हैं परलोक-वाद अत्यन्त खतरनाक व्यवसाय है। जिन लोगों ने मुनासिब शिक्षा और दीक्षा न प्राप्त की हो और निस्स्वार्थ सेवा के भाव से जो लोग प्रेरित न हों उन्हें इस के ख़तरों से सावधान रहना चाहिये। व्यापारिक माध्यमता शापरूप है। किन्तु घरेलू प्रयोगों में कोई ख़तरा नहीं है जिस में अपने किसी मित्र या बन्धु माध्यम के साथ प्रयोग किया जाय। घरेलू प्रयोग वियोग पीड़ित व्यक्ति के लिये अत्यन्त शान्ति और सन्तोष का साधन है और परलोक-वाद के विद्यार्थी के लिये जो अपने अध्ययन में उन्नति करना चाहता है बड़ा उत्तम आहार है।

परलोक-वाद हमारी आँखें परमात्मा की ओर से खोलता है किन्तु अपनी सफलता के लिये अपने पुजारियों से उच्च कोटि की सभ्यता और भावनाओं की अपेक्षा करता है।

मिसिस आसबोर्न लियोनार्ड, सर आलीवर लाज की माध्यम

की पुस्तक 'दो संसारों में मेरा जीवन उस के सुन्दर और उप-योगी कार्यकाल, का चित्र है और मिसिज़ एस्टेले राबर्टस जो रेडक्लाऊड (Red Cloud) नाम के विख्यात पथप्रदर्शक के चक्र से सम्बन्धित हैं अपने काम के सर्वोत्तम नमूने हैं।

हम अनेक नामों में उस प्रसिद्ध आयरिश (Irish) स्त्री मिस जेंटेल्डीन कमिन्स का नाम भी जोड़ सकते हैं, जिसे शोडेस्मांड (Shaw Desmand) जीवित लेखक उच्च-माध्यमों में से एक समझते हैं। वह साहित्यिक व्यक्ति हैं। वह उपन्यास लेखक और नाटककार भी हैं किन्तु। (सिक्रिप्टस आफ डिओफ़ाश्र) Scripts of Deophas पुस्तक जो ईसाई धर्म का आरम्भिक इतिहास है स्वयं लेखन द्वारा प्राप्त हुई है। यह ऐसा विषय है जिसे उस ने कभी नहीं पढ़ा था और जिस का उसे रत्ती भर भी ज्ञान न था। क्या इस ख़याल का खंडन करने के लिये कि सन्देश हमारे अन्तर्मन के भाव होते हैं, इस से अधिक सन्तोष पूर प्रमाण हो सकता है? वह डेढ़ घंटे में २००० शब्द की तेजी से लिख सकती थी। और ऐतिहासिज्ञों का विचार है कि यह पुस्तक ईसाई धर्म के अन्धकार पूर्ण आरम्भिक समय पर बहुत अधिक प्रकाश डालती है।

माध्यमिक शक्ति के विकास के लिये साधारण गुण सहन-शीलता (Passivity) और आत्म त्याग हैं। कोई आश्चर्य कहीं कि आदमियों से अधिक स्त्रियाँ माध्यम हैं। किन्तु हमें आशा करनी चाहिये कि सहनशक्ति पूर्ण माध्यमता की जगह क्रिया-

त्मक माध्मता शीघ्र ले लेगी। (Shaw Desmand) शोडेस्मांड लिखते हैं जबरदस्त व्यक्तित्व शक्ति पूर्ण नियमित भावुकता और आज्ञा दाता बुद्धि, और चतुर व्यक्ति की उत्पादक शक्ति, आने वाले समय में माध्यमता के नये युग में सहायक होंगी।

परलोक वाद की उन्नति माध्यमों के आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्वभाव पर निर्भर हैं।

कवियों ने आत्मा के सम्बन्ध में गाया है कि वह किसी दूर अतीत से आई है और इस संसार की यात्रा के बाद किसी अदृश्य ठिकाने को जायेगी, हमारे सामने सदैव यह प्रश्न बने रहते हैं कि 'कहाँ से ? कहाँ? और क्यों ?' जीवित बने रहना मनुष्य की उत्कट इच्छा है। ईसाई धर्म हमें सिखाता है कि मनुष्य की भलाई के लिये हमें बलिदान करना चाहिये ताकि हम व्यक्तिगत मुक्ति प्राप्त कर सकें।

व्यक्ति गत उन्नति मानवी प्रयत्नों की कसौटी है। महात्माबुद्ध का सन्देश क्या है ? अहं में संसार का लय न कि संसार में अहं का लय। हमें दिखावे के उपासक नहीं होना चाहिये। सब रस्म रिवाजों पर विज्ञान मूलक विचार होना चाहिये। हमारी केवल पाँच इन्द्रियाँ-सुनना, देखना, सूंघना, छूना और चखना ही नहीं हैं प्रत्युत १ छठी इन्द्रिय भी है जिस के लिये पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं। यहाँ (Psyctvie) आध्यात्मिक इन्द्रिय है जिस की उपेक्षा नहीं की जासकती। परलोक-वाद का ज्ञान आत्मा को बन्धन से ऊँचा उठाता है। मनुष्य इस बन्धन के घर का जेलर ही क्यों बना

रहे। लोग परलोक-वाद पर हँसते हैं और खिल्ली उड़ाते हैं। भले२ आदमी भी यह प्रचार करते हैं कि परलोक के वासियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना पाप है। वह बुरी आत्माओं से डरते हैं जो यद्यपि इस संसार को छोड़ चुकी हैं, फिर भी इस संसार के जीवन में आसक्त हैं। वह हमें तंग करती हैं और नुक़सान पहुँचाती हैं। किन्तु वह नहीं जानते कि यद्यपि गढ़े हैं—(और क्या मानवी सब कामों में गढ़े नहीं है ?) तथापि परलोक-वाद एक विज्ञान है। एक जीता जागता धर्म है। जिसे जीवन से पृथक नहीं कर सकते। जो लोग इसके दुरुपयोग से डरते हैं वह बुद्धिमान पैग़म्बर नहीं है। वह अपने मित्रों को सच्चे अनुसन्धान की यात्रा से रोकते हैं।

परलोक-वाद प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है और आप को हैरान नहीं होना चाहिये कि समय पाकर यह संसार भर का धर्म बन जाय, धर्म जो कुछ विश्वास द्वारा स्थापित करता है, परलोक-वाद उससे एक पग आगे चलता है, वह उसी बात को सच्ची घटनाओं द्वारा प्रमाणित करता है। दिव्यदृष्टि, दिव्यश्रवण, ऊपर उठ जाना, आवेश भाषण मेज़ के खटके, स्वयं लेखन और इसी प्रकार के अनेक और तरीके आत्मा के प्रकाश के लिये सच्ची घटनाएँ हैं।

परलोक-वाद तजरुबों का विज्ञान है। हरबर्ट स्पैन्सर ने एक बार कहा था "यह मान भी लिया जाय कि यह घटनाएँ सच्ची हैं। मुझे इनमें दिलचस्पी नहीं।" इस आन्दोलन का सब से बड़ा

विरोधी जड़वादी नहीं है। यदि उसका विरोध वास्तविक है, तो जड़वाद की दलीलों का उसीकी भित्ति पर जवाब दिया जा सकता है। किन्तु सब से बुरा विरोधी तो वह है जो जड़वाद के ढंग का जीवन बिताने पर लट्टू है और अपना जीवन और विचार बदलना नहीं चाहता। ऐसे व्यक्ति को परलोक वाद का पुजारी बनाना कठिन है। परलोक-वाद का विरोध करने के लिये इसे धूर्तता, धोखेबाजी, भ्रान्ति, हृदय की दुर्बलता और अनेक ऐसी ही बातें कही जाती रही हैं। डा० कार्पेन्टर इसे 'हानिकारक छूतकी भ्रान्ति' कहते थे और इसे सत्तरहवीं सदी की जादूगरी से उपमा देते थे। उन्होंने १२ वर्ष तक परिश्रम पूर्वक तजरुबे किये और द्रोह पूर्ण परिणाम निकाला कि अनेक प्रकारकी पारलौकिक घटनाएँ बेहोशी के अनुभव हैं, यह वाक्य उन्हीं का घड़ा हुवा है। यह परिणाम 'उच्च मन के अनुभव' के विचार से मिलता जुलता है। हम इस पर किसी दूसरे अध्यांय में प्रकाश डालेंगे! यह कहना पर्याप्त होगा कि आत्माओं की भाषा विचार है यह दलील देना गलत है कि आत्माओं से जो सन्देश हमें प्राप्त होते हैं वह हमारे सुषुप्त मन के भाव होते हैं। यह तो हमारे सुषुप्त मन को अलौकिक शक्तियाँ प्रदान करना होगा। आत्मा का विचार एक चिनगारी की तरह है जो अपनी रोशनी चारों ओर फैंकती है, और आत्मा जितनी उच्च कोटि की होगी उसके विचार की उतनी ही अधिक चमक मालूम होगी और उतना ही उसका अधिक विस्तार होगा। यही कारण है कि उच्च आत्मा पृथ्वी के रहने वालों से एक से अधिक स्थानों पर

बात चीत कर सकती है। छोटे दर्जे की आत्माओं का यह हाल नहीं है जो अपनी थोड़ी शक्ति के कारण एक समय में एक ही जगह ध्यान दे सकती हैं।

उच्च और उन्नत माध्यम आत्मा के लिये काम करने का अच्छा द्वार है। आत्मा अपना मसाला माध्यमके दिमागसे अपने विचारों के प्रकट करने के लिये माध्यम की भाषा के रूप में फेंकती है।

यह सत्य घटनाओं की एक कथा है जिससे अत्यन्त अविश्वासी को भी विश्वास हो सकता है। डेनमार्क देश का एक लेखक मरणोत्तर जीवन में विश्वास नहीं करता था। उसका मृत पिता मशहूर पायनो बजाने वाला था। और एक दिन जब वह एक छोटी मेज के पास कुछ मित्रों सहित बैठा था, उसने मेज के खटके सुने। वह बराबर ज़ोर से होते रहे। और अन्त में एक संकेत नियत करके शब्दों में परिणत किये गये। यह मालूम हुवा कि यह खटके उसके पिताकी आत्मा कर रही थी। "मैं तुम्हारा पिता हूँ। मैं मरा नहीं हूँ मैं जीवित हूँ और मैं तुम से प्रेम करता हूँ"। और अपने जीवित होने के निश्चित प्रमाण के लिये लड़के से जिसने अपने जीवन भर में कभी पायनो बाजा नहीं छुआ था कहा कि पायनो बजाओ! परिणाम आश्चर्यजनक निकला। हाथोंने सुरों को छुवा और उसके पिताकी अलौकिक प्रेरणा द्वारा वह हाल मधुर राग से भर गया जिससे कट्टर विरोधियों को बड़ा विस्मय और हैरानी हुई। डेन्मार्क के लेखक ने यह कथा अपनी पुस्तक "परमात्मा का प्रसन्न हास" में दी है। परमात्मा की बातें बड़ी

अद्भुत है। आदम के समय से हम कितने आगे बढ़ गये हैं। मनुष्य सभ्यता के आरम्भ में समझता था कि यह पृथ्वी संसार का केन्द्र है और सूर्य इसके चारों ओर घूमता है। और सितारे सुनहरी मेखें हैं जो नील आकाश में जड़ी हुई हैं। हमारा ज्ञान भगवान् की अपरिमित सृष्टि के सम्बन्ध में बड़ा परिमित था कोपर्नीक्स (Copernious) ने १५४२ में इस विचार को छिन्न-भिन्न कर दिया, जब उसने यह प्रमाणित कर दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। सूर्य पृथ्वी के गिर्द नहीं घूमता। गलेलो और कैपलर बड़े बुद्धिमान् थे जिन्हें सचाई का प्रकाश प्राप्त हुवा था किन्तु चूंकि वह अपने समयसे बहुत आगे थे उनकी शिक्षाओं को काम की दृष्टि से नहीं देखा गया और उन्हें कष्ट सहन करना पड़ा। पाईथा गोरस ने अपनी दिव्यदृष्टि से सितारों को जड़ी हुई चीजें नहीं पाया प्रत्युत बड़ी शक्ति के केन्द्र घूमने वाले लोक मालूम किया। हमारा खगोल का ज्ञान आज इतना उन्नत हो गया है और इतनी अद्भुत गति से बढ़ रहा है कि हमें अब मालूम है कि हमारी पृथ्वी मानों एक रेत का कण समुद्र के किनारे पर है और सितारों के प्रदेश में अगणित लाखों लोक हैं जो अपूर्व तेजी से घूम रहे हैं।

जीवन का प्रारम्भ आध्यात्मिकता में हुआ। पदार्थ(Mettor) नाशवान नहीं है। आकाश और समय अनन्त हैं। सूर्य और तारे बदलते हैं, जीर्ण हो जाते हैं और फिर नवीन हो जाते हैं। अब बहुत समय तक चुप रहने के बाद विज्ञान ने धुंदले

तौर से ईसामसीह की इस शिक्षा को समझा है कि "मेरे पिता के घर में बहुत से महल हैं" और आत्मा मरणोत्तर जीवत रहती है। हमें सम्प्रति परलोक-वाद के वर्णन में वैज्ञानिक मनोवृत्तियों तक ही सीमित रहना चाहिये। वैज्ञानिक मन एक विशिष्ट प्रकार का मन है। यह निःस्वार्थ प्रेमी है। यह ज्ञान प्राप्ति के लिये उत्कंठित है। वैज्ञानिक को एक ही विचार की धुन है। उसका हैनरी फार्ड का मत है जो अन्तिम सीमा को पहुँचगया है जैसा कि शाडेस्मांड ने अपनी पुस्तक 'हम नहीं मरते' (We do not die) में सुन्दरता पूर्वक प्रकट किया है, यह विश्लेषक है संयोजक नहीं। वैज्ञानिक सार पदार्थ के साथ व्यवहार करता है। वह भौतिक घटनाओं की अच्छी याददाश्त रखता है और उन का लेखा रखता है, किन्तु उस से व्याख्यान करने को कहो तो वह सटपटा जाता है। उसका काम जीवन की सवारी से है जीवन से नहीं। वह वस्तु को देखता है। वस्तु की सत्ता को नहीं। उसे अनुभव करने की आदत नहीं। वह केवल विचारता रहता है। पदार्थ के पीछे क्या है इससे उसे कुछ सम्बन्ध नहीं। यह दार्शनिक का विषय है। ईटन, हैरो, आक्सफोर्ड, केम्बरिज के स्कूल और विश्वविद्यालयों ने यही सोचा कि आत्मा सम्बन्ध में कुछ कहना ठीक नहीं। उनके दार्शनिक अर्थ में आत्मा के बहुबचन अर्थात् अनेक हैं। वैज्ञानिक मन इसी प्रकार पदार्थ से ठसी हुई दशा में वर्षों चलता रहा, किन्त अब वैज्ञानिकों की बिरादरी में भी पर्दा उठगया है। पदार्थ से ठसा हुआ वैज्ञानिक सूक्ष्म-तत्वज्ञ को

जगह दे रहा है।

सर विल्यम क्रुक्स ने जो अपने समय के चोटी के रसायन शास्त्री थे, और सर आलीवर लाज ने जो बड़े पदार्थ—शास्त्री और ब्रिटिश एसोसीयेशन के सभापति थे, कठोर पदार्थ को फोड़ कर यह घोषणा कर दी है कि मनुष्य की आत्मा के मरणोत्तर जीवन में विश्वास रखते हैं। एडीसन प्रख्यात बिजली के विशेषज्ञ को जब 'हम नहीं मरते' की पुस्तक के लेखक शाडेस्मांड ने पूछा तो उसने कहा कि मैं मरणोत्तर जीवन के प्रश्न में इतनी दिलचस्पी रखता हूँ कि मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि दोनो लोकों के बीच में बात चीत करने के सुभीते के लिये एक प्रवेश द्वार ईजाद करूँ। उसने अपने एक व्याख्यान में कहा कि "मैं उस हद पर पहुँच गया हूँ जहाँ से मैं यह दृढ़ता पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरी खोज मरणोत्तर जीवन के विचार का ज़ोर से समर्थन करती है और मैं परलोक-वाद का समर्थन करने को भी उद्यत हूँ कि इस लोक के और उस लोक के बीच जहाँ मृत व्यक्ति जाते हैं बात चीत सम्भव है।" पुराना जड़वाद जिसके कि हैकल (Haeokel) और हक्सले (Haxley) अत्यन्त देदीप्य मान सितारे थे, सर आलीवर लाज, इनस्टीन, डा० आर० जे० टिल्यर्ड और हजारों अन्य आदर्शवादियों के सामने हारता चला जा रहा है। हमें पुराने विचारों के बचपन पर दया आ जाती है, किन्तु यह बड़े अभिमान का विषय है कि अन्त में विज्ञान ने इस महान सत्य को अपना लिया है कि मृत्यु सब का अन्त नहीं है—यह

न समाप्त होने वाली निद्रा है किन्तु एक नये लोक में इस लोक से उत्तम और अधिक क्रिया शीलता की जननी है। परस्पर कैसा विरोध है। हैकल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "संसार की समस्या "The Riddle of the Universe में कहा है कि "आत्मा के अमरत्व में विश्वास ऐसा सिद्धान्त है जो आधुनिक विज्ञान की उच्च सत्यता के सर्वथा विपरीत हैं।" टिंडल (Tyndall) महान् प्रकृतिवादी परलोक-वाद के नाम पर हँसता था। वह कहता था "निस्सन्देह आत्माओं में विश्वास से बढ़कर मनुष्य के कमजोर मन को धोखा देने वाली और घटिया भ्रान्ति नहीं है।" किन्तु हमारे आधुनिक वैज्ञानिक क्या कहते हैं? "आत्माओं का लोक अत्यन्त जीवन और क्रिया से भरा हुवा है, और वहाँ के निवासी कार्य व्यग्र व्यक्ति हैं।" यह कथन कैलीफ़ोरलिया की लो वेधशाला (Lowe Observatory) के सञ्चालक प्रोफ़ैसर लाटकिन का है। और सर आलीवर लाज का विश्वास जो इतना अधिक है कि उसकी गर्मी इन शब्दों से टपकती है "मैं अपने विश्वास की पूर्ण उक्ति से कहता हूँ कि हम जरूर मरणोत्तर जीवित रहते हैं और यह बात मैं वैज्ञानिक आधार पर कहता हूँ। मैं यह इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे कुछ मित्र जो मर चुके हैं, अब भी मौजूद हैं क्योंकि मैंने उनसे बातचीत की है। परलोक-वाद अत्यन्त अद्भुत विज्ञान है यह दो लोकों के बीच पुल बाँधता है। वास्तव में यह संसार एक बड़े दूसरे संसार का ही भाग है। यह अत्यन्त महत्व का

समय है कि पूर्व और पश्चिम के विद्यालयों में पारलौकिक अनु-सन्धान के लिये कुर्सियाँ स्थापित की जायें। हमारे विद्यार्थियों को दोनों संसारों की प्रयोगशालाओं में पढ़ना चाहिये। सब जीवन के पीछे शक्ति और तजवीज़ (Plan) है यहाँ भी और वहाँ भी जीवन और मृत्यु स्वर्गीय जोड़े हैं। वैज्ञानिक पतित मूर्तियों की खोज में आँसू बहा सकते हैं। किन्तु इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि नई ज्योति जलाई जा चुकी है और हम सब शीघ्र ही सितारों की सड़क पर आगे बढ़ेंगे। युद्ध एक नये सामाजिक संगठन की अगवानी कर रहा है जो नई जागृति कर रहा है। क्यों कि कष्ट यद्यपि मनुष्य की और जाति की उन्नति में बड़ा आवश्यक भाग है किन्तु एक बार खास स्थिति में पहुँच जाने पर नितान्त आवश्यक अंग नहीं है।

सर आलीवर लाज की पुस्तक 'रेमंड या मरणोत्तर जीवन' के पृष्ठ उलटने में बड़ा आनन्द मिलता है। यह बड़ा विज्ञान मूलक और परलोक-वाद का सबसे बड़ा प्रचारक है। सच्चाई के लिये उसका कितना प्रेम था। उसने अविश्वासी के रूप में आरंभ करके वह वस्तु संसार को देने में संकोच नहीं किया जो उसके हृदय को सबसे अधिक प्यारी थी। अपने प्यारे बच्चे से सम्बन्ध रखने वाली बातों का वर्णन साधारण लोगों में करना और पारलौकिक विषयों में हाथ डालना क्या यह एक वैज्ञानिक के साहस का सबसे बड़ा प्रमाण नहीं है?

मि० होरेसलीफ ने (जो एक प्रसिद्ध परलोक वादी हैं)

एक अविश्वासी के रूप में जीवन आरम्भ किया था। अपनी पुस्तक "यह परलोक-वाद क्या है" में उन्होंने अनेक अनुभवों का वर्णन किया है, जिनके कारण वह इस विज्ञान के बड़े कट्टर प्रचारक बन गये। उनका एक भाई था जो दक्षिण अफ्रीका के युद्ध के लिये भर्ती हुवा था। जब वह लड़ाई के बाद घर लौटा तो उसकी छाती में भयङ्कर रोग था। वह एक डाक्टर से चिकित्सा करा रहा था। किन्तु उसकी हालत दिन ब दिन खराब होती गई, और उसे लन्दन के एक हस्पताल में दाखिल कर दिया गया।

कठिनाई यह थी कि बीमारी के कारण का पता नहीं चल रहा था। उस युवक की माता उसके कहने सुनने से उसका एक रूमाल माध्यम के पास आध्यात्मिक जाँच के लिये ले गई। माध्यम नेत्र-हीन था। माता ३ बार रूमाल ले गई और प्रत्येक बार उसे अस-फलता हुई। किन्तु चौथी बार उसे सफलता हुई, जो आशातीत थी। उसका ठीक २ हुलिया और वह कहाँ रहता है यह बताया गया। उसके रोग का भी ठीक २ हुलिया और वह कहाँ रहता है यह बताया गया। उसके रोग का भी ठीक ठीक निदान किया गया। किन्तु साथ ही हृदय विदारक समाचार दिया गया कि वह अच्छा नहीं होगा। ग्रन्थकर्ता लिखता है कि "माध्यम ने बयान किया कि मेरा भाई आगामी वर्ष की २२ या २३ फरवरी को मर जायगा। वह तारीख के बारे में अनिश्चित थी क्योंकि दोनों ही तारीखें उसे एक सी प्रभावित कर रही थीं। और ठीक वैसा ही

हुवा जैसा कि पहिले माध्यम ने बताया था। २२ फरवरी को रात के ११ बजे श्वास का बुरा दौरा आरम्भ हुवा और अगले दिन प्रातः १-१५ पर उसकी मृत्यु हो गई इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि माध्यम २२ या २३ बताने में संकोच कर रहा था। यही ग्रंथकर्ता हारेसलीफ़ (Horace Leaf) अपने एक साले की बाबत लिखते हैं जो कि नास्तिक था। वह सारी उमर ही बीमार रहा और बिल्कुल युवा ही मर गया। उसकी माँ उससे बहुत प्रेम करती थी क्योंकि उसका वह इकलौता बेटा था। उसकी मृत्यु का उसके हृदय पर बड़ा आघात लगा। एक बार एक माध्यम के साथ बैठने पर (जो उस कुटुम्ब को नहीं जानता था) बोलने की तुरी (Trumpet) उसके पास पहुँची और उसने फ़ौरन अपने बहनोई की आवाज़ पहिचान ली।

उसने कहा "मेरी मां से कह दो मैं जीवित हूँ, मरा नहीं हूँ," उसे कहा गया कि अपना नाम बताओ। किन्तु उसने इन्कार किया, परन्तु ऐसी घटनाएँ बयान कीं जिससे उसका व्यक्तित्व प्रमाणित हो गया।"

क्या आप जानते हैं कि मेरे पास एक घड़ी और जंजीर है?

उत्तर—"नहीं"

प्रश्न—'अच्छा तो मेरे पास है। घड़ी की जंजीर मेरी माता के घर में ऊपर के मंजिल में एक मेज़ के खाने में है। घड़ी और जंजीर जहां बताई गई थीं वहां मिलीं, और इससे और भी उसका व्यक्तित्व साबित हुवा।

निम्नलिखित घटना सितम्बर १६०७ की 'आध्यात्मिक विज्ञान की रिपोर्ट' में डा० जोजेफ़वैन जिन्सर के हस्ताक्षर से बयान की गई है। माध्यम पूरा कब्जे में था और कमरे में मोमबत्ती का धीमा प्रकाश था। सहसा एक मूर्ति डा० बेनजेनों की कुर्सी के पीछे से निकलती हुई देखी गई। यह काफ़ी लम्बी मूर्ति थी, और उसने बैठने वाले के बांयें कन्धे से सिर लगा कर सुबकियां लेकर रोना आरम्भ कर दिया। रोना इतना ऊँचा था कि कमरे में बैठे हुये दूसरे व्यक्ति भी सुन सकते थे। उसने डा० का बार २ चुम्बन किया। वह लिखते हैं 'मैंने उसके चेहरे का आकार साफ़ साफ़ देखा जो मेरे चेहरे को छू रहा था। और मैंने बड़े सुन्दर और घने बाल अपने गाल के साथ छूते अनुभव किये। इसलिये मुझे बिल्कुल विश्वास हो गया कि वह स्त्री थी। मेज़ हिलने लगी और खटकों से उसने एक बहुत नज़दीकी रिश्तेदार का नाम बताया जिसको उपस्थित लोगों में से मेरे सिवाय कोई नहीं जानता था। वह कुछ समय पूर्व मर चुकी थी और मिज़ाज न मिलने के कारण उसके साथ विशेष मतभेद रहता था। मुझे मेज़ के खटकों द्वारा उत्तर की आशा इतनी कम थी कि मैं पहिले सोचने लगा कि यह नाम इत्तफ़ाक से ही आ गया है। किन्तु जब मैं यह मानसिक विचार कर रहा था तो मुझे गरम श्वास युक्त एक मुँह का अनुभव हुआ जो मेरे बांयें कान को छूते हुवे और मन्द आवाज़ में जिनोआ की भाषा में कई वाक्य लगातार मेरे कान में कह दिये जिसकी सरसराहट अन्य पास बैठने वालों ने भी सुनी।

इन वाक्यों में रोने से वार २ रुकावट पड़ती थी। और उनका अभिप्राय उस हानि के लिये क्षमा मांगना था, जो मुझे पहुँचाई गई थी। जिसका पूरा वर्णन घरेलू मामलों सहित किया गया था जो उपरोक्त व्यक्ति को ही मालूम हो सकते थे। यह घटना इतनी वास्तविक मालूम हुई कि मैं मजबूर हो गया कि उस मुआफ़ी का उत्तर दूँ जो प्रेमपूर्वक पेश की जा रही थी। तथा मैंने भी उन बुराइयों के प्रतिकार में यदि कहीं अधिक सख़्ती की हो तो उसके बदले में क्षमा मांगूँ। किन्तु मेरे मुख से प्रथम अक्षर उच्चारण होते ही २ अत्यन्त कोमल हाथों ने मेरे होठों को ढ़क लिया और मुझे बोलने से रोक दिया। उस मूर्ति ने तब मुझसे कहा "आपका धन्यवाद है" मुझे आलिङ्गन किया, चुम्बन लिया और विलीन हो गई। इस घटना की साक्षी और लोगों ने भी दी जो मेज़ के पास बैठे थे। इसलिये इसे बुद्धि का भ्रम नहीं कह सकते। डा० वेनजेनो (Venzano) यह भी कहते हैं कि वह आरम्भ से अन्त तक शांत रहे। और माध्यम को कौटुम्बिक व्योरों (Details) का कुछ भी ज्ञान नहीं था जो प्रकट किये गये। धोखे का तो कोई भी ज़रा सा भी निशान न था।

हम परलोकगत आत्माओं का ही आवाहन नहीं कर सकते प्रत्युत यह भी सम्भव है (यद्यपि साधारणतः नहीं) कि शरीर धारी मनुष्य की आत्मा को भी बुलाया जा सके जब कि वह सो रहा हो। (Allen Kardec) एलन कर्डक की

पुस्तक 'अनुभवात्मक प्रेत विद्या' के अनुवादक ने कुछ ऐसे उदाहरण दिये हैं जो बड़े ही मनोरंजक हैं।

एक महिला ने (जो कि माध्यम थी) एक दिन अपने पोते की आत्मा को बुलाना शुरू किया जो कि अपने कमरे में सो रहा था। ग्रन्थ कर्ता लिखता है कि व्यक्तित्व का पूरा प्रमाण मिल गया, आत्मा की भाषा से भी, और परिचित-वाक्यों से और जो कुछ बातें हुई थीं उनके वर्णन से भी। और फिर एक ऐसी घटना हुई जिसने इसे और भी प्रमाणित कर दिया।

माध्यम बच्चे की आत्मा के कथनानुसार लिख रहा था किन्तु एक वाक्य के ठीक मध्य में उसका हाथ सहसा रुक गया और मालूम हुवा कि लड़का आधा जगा हुवा है और बिस्तरे में उलट पलट हो रहा है। वह फिर सो गया और माध्यम का हाथ फिर सन्देश लिखने लगा।

निम्नलिखित कहानी बहुत आश्चर्यजनक है और हम इसकी सच्चाई में सन्देह नहीं कर सकते क्योंकि वह वैज्ञानिक और प्रमाणित स्रोत से प्राप्त हुई है। कहा जाता है कि एक अंग्रेज अफ़सर ने जो कि पेन्शन लेकर पेरिस में रह रहा था अपने एक मित्र को बहुत ही जरूरी क़ागज़ सुपुर्द किये, जो कि फ्रान्सीसी था और उसके मकान के नीचे मकान में रहता था। वह दोनों अच्छे मित्र थे और कर्नेल ने सोचा कि वह उसका विश्वास कर सकता है। किन्तु फ्रांसीसी का लोभ क़ाग़ज़ों को

प्राप्त कर उत्तेजित हुआ और उसके मनमें आया कि वह उन्हें अपने काम में लावे। उसने उन्हें अंग्रेज़ मित्र को लौटाने से इन्कार कर दिया। वह बड़ा निराश हुवा। उसने उसकी खुशामद की, उसके साथ दलील की, किन्तु सब व्यर्थ। लालच के शैतान ने उसपर क़ब्जा कर लिया। उसने क़ाग़ज़ देने से इन्कार कर दिया। उनके वापिस लेने के लिये कोई मुक़दमा चलाना भी सम्भव न था उस अंग्रेज का एक मित्र था जो उच्चकोटि का माध्यम था। उसमें माध्यमिक शक्तियों के अतिरिक्त आकर्षण करने की भी बड़ी शक्ति थी। उसका यह विश्वास था कि जीवित व्यक्तियों की आत्माएँ भी बुलाई जा सकती हैं। उसने बेईमानी से क़ाग़ज़ रखलेने वाले व्यक्ति की आत्मा को बुलाकर उससे खोये हुवे काग़ज़ों को प्राप्त करना सम्भव समझा। दोनों मित्र धार्मिक विचार के थे। उन्होंने सारा दिन ध्यान और प्रार्थना में बिताया और रात्रि को जब वह फ्रांसीसी अपने कमरे में चला गया और गाढ़ निद्रा में सो गया, माध्यम ने उसकी आत्मा को बुलाया। वह आई किन्तु बड़े भारी विरोध के बाद। पहिले तो उसने कुछ पता बताने से इन्कार किया कि क़ाग़ज़ कहाँ छिपाये गये हैं। किन्तु माध्यम के ज़बरदस्त प्रभाव से वह अनिच्छा पूर्वक मान गया किस जगह क़ाग़ज़ रक्खे हैं। उसे मजबूर किया गया कि वह एक पर्चा स्थान रक्षक को लिख दे जहां पर कि क़ाग़ज़ एक आलमारी में सुरक्षित थे, कि वह तालियां और कागज दे दें जैसे ही कि दिन निकला दोनों मित्र उस स्थान पर शीघ्रता पूर्वक

गये जो बताया गया था और उस चिट्ठी की सहायता से जो आत्मा के हाथ से लिखी गई थी, काग़ज़ प्राप्त कर लिये और इङ्गलैण्ड अपने वकील के पास भेज दिये।

वह फ्रान्सीसी जब प्रातःकाल जगा तो उस विचित्र स्वप्न की बावत सोचने लगा जो उसे आया था। क्या यह स्वप्न था या वास्तविक घटना। वह उस जगह गया जहां काग़ज़ छिपाये गये थे, और बड़ा दुखी हुवा जब उसे मालूम हुवा कि उसके विरोधियों ने उसे मात देदी थी और वह क़ीमती काग़ज़ कहीं ले उड़े। उसने अपने अंग्रेज़ मित्र पर मुक़दमा चलाने की धमकी दी यदि काग़ज़ नहिं लौटाये गये? और वास्तव में मुक़दमा दायर कर दिया गया। परन्तु मजिस्ट्रेट को यह कहानी ऐसी सिड़ीपन की मालूम हुई कि उसने आरोपी को पागल करार दिया और अदालत ने नुकसान उठाये हुवे अपराधियों से क्षमा मांगी।

कहानी चाहे सिड़ीपन की मालूम दे किन्तु हमें इसकी सत्यता का पूरा विश्वास है। मनुष्य में मनके भावों से सम्बन्ध जोड़ना सर्वथा सम्भव है। मनुष्य का उच्चकोटि की पवित्रता प्राप्त करने पर सब निर्भर है। वह दिन दूर नहीं जबकि पवित्रता का उच्च आदर्श स्थापित हो जाने पर एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ तार या रेडियो की सहायता के बग़ैर मानसिक विचार परिवर्तन कर सकेगा। आज भी इस प्रकार के सन्देश परिवर्तन के उदाहरण यद्यपि साधारणतया मालूम नहीं किन्तु उनका अभाव नहीं है।

जिन वैज्ञानिकों और विद्वानों की सम्मतियाँ ऊपर दी गई हैं उनसे मरणोत्तर जीवन के सम्बन्ध में सब सन्देह दूर हो जाने चाहियें। परलोक-वाद एक विज्ञान है। यह बात परलोक वाद की शिक्षाओं और पुस्तकों के अनुशीलन से पूरे तौर से प्रमाणित होती है। इसने मनुष्य सम्बन्धी ज्ञान को विधिवत कर दिया है कि मनुष्य भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार का व्यक्ति है। इसने मालूम किया है और हमारे सत्य सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि की है। तथा अनेक सत्य घटनाओं को सर्व साधारण की जानकारी में ला दिया है, जिनका प्रकाश उन आध्यात्मिक घटनाओं से हुवा है जो पूरी जांच की दशा में देखी गई हैं। इसने सत्य और ज्ञान की खोज अपने लिये की है और अनेक कल्पित धार्मिक सम्मतियोंका खंडन किया है जो अब तक प्रचलित थीं। इसने सब ज्ञानों की सच्चाइयों के समिश्रण से ज्ञान का एक विभाग स्थापित किया है तथा उससे भी कुछ अधिक किया है।

परलोक-वाद का वास्तविक उद्देश्य सदाचार की उन्नति और जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण बदलना है।

परलोक-वाद ऐसा विषय है कि जिस पर गम्भीरता पूर्वक विचार होना चाहिये। यह आलसी और छिछोरे मनुष्यों की दिल्लगी की चीज नहीं है। साथ ही साथ यह भी कह देना चाहिये कि प्रत्येक वस्तु में अन्ध विश्वास जो कि अदृश्य जगत से प्राप्त हो, यह भी हानिकारक है। परलोक-वाद का प्रधान

ध्येय हमारी सुख सम्पति में सहायता करना है। यह एक नया विज्ञान हैं, एक नया दर्शन है किन्तु हमें इतना दुर्बल हृदय भी नहीं होना चाहिये कि इसकी नशीली सुरा हमारे मनकी शान्ति को नष्ट कर दे, या हमारी विवेक शक्ति को भ्रष्ट कर दे।

परलोक-वाद सर्वोच्च विज्ञान है। यह विश्वात्मक सत्यता है। जब हम एक रसायनशाला में जाते हैं तो हमें वहाँ कठोर पदार्थ से व्यवहार करना होता है। उसके नियम नियत हैं। परन्तु पर-लोक-वाद के साथ व्यवहार करने में हमें समझदार व्यक्तियों से वास्ता पड़ता है जो हमारी आज्ञानुसार आ नहीं सकते किन्तु वह हमें अवसर देते हैं कि हम उनका अध्ययन करें। जिससे हमारा ज्ञान ऊपर के लोकों के सम्बन्ध में बढ़े, जो लोग उच्च ज्ञान के मूल्य को नहीं समझते उन्हें हँसी भी न उड़ानी चाहिये। वह केवल अपना अज्ञान प्रकट करते हैं और अपनी ही हानि करते हैं।

परलोक-वाद के विषय को बड़ी गम्भीरता और तत्परता से अध्ययन करना चाहिये। माध्यम पूरे और अधूरे, अच्छे और बुरे सभी प्रकार के होते हैं। भले और पूर्ण माध्यम परमात्मा की दी हुई शक्ति का सदुपयोग करते हैं। अधूरे और छिछोरे माध्यम हानिकारक होते हैं उनसे बचना चाहिये। अच्छे माध्यम अपनी ओर अच्छी आत्माओं का आकर्षण करते हैं। अवनत आत्माएँ जो अभी इस संसार के जीवन में आशक्त हैं अपना अस्तित्व बताने के लिये सब मार्ग ढूंढ़ती हैं और अधूरे

माध्यम आसानी से उनका शिकार हो जाते हैं और उनके हाथ का खिलौना बन जाते हैं। और वह निकृष्ट आत्माओं की इच्छापूर्ति करने में सहायक होते हैं। यही खतरा है जिससे परलोक-वाद में बचना चाहिये।

पारलौकिक घटनाओं का अध्ययन इसलिये बड़ा उपयोगी है कि वह केवल अनुसन्धान के नये क्षेत्र ही नहीं खोलता, प्रत्युत वह हमारी आत्मा पर यह छाप बैठाता है कि हम यह अनुभव करने लगते हैं कि भौतिक जीवन ही सब कुछ नहीं है। यह मनुष्य के जीवट के दृष्टिकोण को बदलने में बड़ा सहायक होता है। परलोक-वाद के विज्ञान का यथार्थ उद्देश्य केवल दुखी हृदयों का दुख दूर ही करना नहीं जो अपने प्रिय बन्धुओं के लिये दुखी रहते हैं, प्रत्युत वह हमारी दृष्टि और मन का विकास करता है कि हम प्रभु के महान् ऐश्वर्य का अनुभव करें और वह हमें दैवी जीवन की प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। अनुभवात्मक 'आत्म विज्ञान' के लेखक के शब्दों में 'परलोक-वाद' का आवश्यक और एक मात्र उद्देश्य आपके जीवन को उच्च बनाना है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये आत्माओं को आज्ञा दी जाती है कि वह तुम्हें आगामी जीवन का ज्ञान करावेंगे, और इस प्रकार तुम्हें उदाहरण उपस्थित करें जिनसे तुम्हें लाभ पहुँचे जितना अधिक तुम अपने को परलोक के साथ सम्बधित करते जावोगे उतना ही कम तुम्हें इस संसार के वियोग का दुख होगा जिसमें तुम रह रहे हो। यही वास्तव में इस नये

विज्ञान का एक मात्र उद्देश्य है "मरने के बाद मनुष्य फिर जीवित होता है।"

क्योंकि हमें यह मालूम है कि यदि हमारा इहलौकिक अस्थायी घर नष्ट हो जाता है तो हमारे लिये प्रेम का निवास स्थान है जो हाथों से नहीं बनाया गया परलोक में वह शाश्वत है।

हमें भरोसा है, मेरा कहना है कि हम शरीर छोड़ कर प्रभु के साथ रहेंगे। परमात्मा मुर्दों का परमात्मा नहीं है बल्कि जीतों का है।"

इन उपरोक्त पंक्तियों में इसलिये ईसाहमसीह का स्पष्ट और निश्चित वक्तव्य है। कवि लांग फैलो (Long fellow) ने कहा है "मृत्यु नहीं है जो ऐसा मालूम होता है वह परिवर्तन मात्र है यह जीवन या नश्वर श्वास स्वर्गीय जीवन की चार दीवारी है जिसके द्वार को हम मृत्यु कहते हैं।

मजहब जो नितान्त विश्वास पर अवलम्बित है, शक्लों और रिवाजों में ऐसा लिपटा हुआ है कि वर्तमान वैज्ञानिक संसार में मनुष्य पर यह अपना अधिकार खोता जा रहा है। ठोस विचारक मरणोत्तर जीवन का प्रमाण चाहता है। परलोक-वाद उसे यह प्रमाण देता है। इसलिये यह मजहब से बड़ा है।

हमारा संसार अधूरा संसार है। सच्चरित्रता और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण से भी इस पृथ्वी के निवासी इतने पछड़े हुवे हैं कि प्रभु द्वारा सञ्चालित इस संसार में हमें उच्चात्माओं द्वारा मार्ग-प्रदर्शन की आवश्यकता है। उच्चात्माओं द्वारा यह हस्तक्षेप

नापसंद किया जा सकता है। नहीं हम इतने अभिमानी और मूर्ख हैं कि अपने अभिमान के नशे में हम पैग़म्बरों पर भी पत्थर फेंकने को तय्यार रहते हैं। किन्तु इस विषय पर अधिक सूक्ष्मता से विचार करने पर हमें अपने विचारों की निस्सारता मालूम हो जावेगी। 'कार्डेक' की पुस्तकें आत्मवाद के सम्बन्ध में ज्ञान की गहराई प्रकट करती हैं। वह यह सिद्धान्तिक सचाई प्रतिपादित करती है कि आत्माओं से सम्पर्क होने से ही पृथ्वी की सच्चरित्रता उन्नत हो सकती है।

आत्म-वाद का ज्ञान खाली उत्सुकता की शान्ति के लिये नहीं है प्रत्युत हमारे ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिये इतना जरूरी है जिससे मनुष्य जाति का स्थायी और वास्तविक कल्याण हो।

हम यहाँ पर थोड़ा प्रारम्भिक विचार करेंगे। हमारा धर्म सिखाता है कि प्रत्येक मनुष्य की एक आत्मा है और वह अमर है। वह आत्मा शरीर से पृथक है। यह अपना व्यक्तित्व और ज्ञान क़ायम रखती है और सुख और दुख अनुभव करने की शक्ति रखती है। जब मनुष्य मरता है तो इस आत्मा को कहीं जाना चाहिये। हमारा धर्म बताता है कि या तो यह ऊपर स्वर्ग को जाती है या नीचे नर्क में जाती है किन्तु यह पृथ्वी संसार का केन्द्र नहीं है। यह सूर्य अनन्त सूर्यों में से एक है। और अनेक लोक आबाद हैं। जीवन निरन्तर है। आत्माएँ कल्पित नहीं हैं। वह उन आदमियों की आत्माएं हैं जिनकी मैली सांसारिक पोशाक उतार ली गई है।

मार्कस आरिलियस (Marcus Aurelius) ने मनुष्य का लक्षण "एक छोटी आत्मा जो एक लाश को उठाये हुवे है।" किया है आत्मा के दो शरीर होते हैं—दो खोल जिनमें यह रहती है-भौतिक और आधिभौतिक।

भौतिक शरीर तो मनुष्य का शरीर है जो पीछे रह जाता है जब आत्मा बाहर के खोल से निकल जाती है। अर्धभौतिक शरीर जिसे हम आध्यात्मिक कह सकते हैं, वायवी, और द्रव शरीर है जो हमें दिखाई नहीं देता परन्तु उसमें कुछ भौतिक गुण हैं। यह नामालूम या गणित का प्रश्न नहीं है। यह वास्तविक वस्तु है। यह भौतिक पदार्थ पर बिजली की तरह असर करता है। मृत्यु के समय हम शरीर खो देते हैं किन्तु हमारी बुद्धि और प्रकृति नहीं बदलती। इसका सम्बन्ध आत्मा से है। यदि यह सिद्धान्तक सत्य मान लिये जावें और उनको न मानने के कोई कारण नहीं हैं, तो परलोक-वाद का दावा प्रमाणित हो जाता है। जो रास्ट्रियन (Gorastrian) धर्म पुस्तकों के अनुसार मृतव्यक्ति की आत्मा तीन दिन में परलोक में अपने घर पहुँचती है। पार्सी इन तीन दिनों में बहुत प्रार्थनाएँ करते हैं। प्रश्न पूछा गया था कि मरने के बाद कितनी जल्दी आत्मा का आवाहन करना चाहिये।"

एक आत्मा ने उत्तर दिया:—

तुम आत्मा का आवाहन ठीक मृत्यु के समय कर सकते हो किन्तु यह उस समय परेशानी की दशा में होती है इसलिये अधूरे उत्तर दे सकती है।

हमें बताया गया है कि परेशानी की दशा भिन्न भिन्न व्यक्तियों की भिन्न २ होती है। एक सप्ताह के अन्त तक शायद ही कोई विरली ठीक होश में न आती हो। आम तौर से दो या तीन दिन लगते हैं। यह बात आत्मा की सच्चरित्रताकी उन्नति पर निर्भर है जो उसने पृथ्वी पर रहते हुवे की हो।

एलन कार्डेक [Allan Kardeo] ३१ मार्च १८६६ को अचानक मर गया। और हमें बताया गया है कि योरोप में परलोक-वाद के आन्दोलन के इस आदि प्रचारक के मंत्री ने उस का आवाहन किया तो वह अपनी स्त्री को एक छोटा सन्देश दे सका। और यह उसके इस संसार से विदा होने के दो ढाई घंटे के अन्दर ही दिया गया था। इस भौतिक बन्धन से छूटने के १२ घंटे बाद उसने एक दूसरा बहुत बड़ा सन्देश दिया और कहा जाता है कि इस लोक से परलोक के जाने के मार्ग में उस का पूरा ज्ञान बना रहा और उसकी यह यात्रा आँख झपकने में पूरी हो गई। कहते हैं कि उस ने इस लोक में आँखें बन्द की और परलोक में खोल लीं। आपत्तियाँ छिपे हुवे वरदान होते हैं प्रायः मनुष्य अपना जीवन नास्तिक के तौर पर आरम्भ करता है और अन्त में बड़ा पक्का परलोक वादी बन जाता है—परमात्मा का यथार्थ में सच्चा प्रेमी बनजाता है। डा० एनी बेसेन्ट जो उस तेजस्वी और उदार हृदय पुरुष 'चार्लस ब्रैडला' की साथिन थी उसी की तरह अनीश्वरं वादिनी थी। किन्तु शीघ्र ही उसने बुद्धि-वादियों के आन्दोलन से सम्बन्ध तोड़ लिया और ब्रह्म विद्या के लोक-

विख्यात आन्दोलन की अग्रगामिनी बन गई। और अपना दिमाग़ और जीवन परमात्मा के और मनुष्य की स्वतन्त्रता के पक्ष में लगा दिया। "एक वकील के पारलौकिक अनुभव" नाम की सुन्दर छोटी पुस्तक एक अँग्रेज़ ने लिखी है जो शिक्षा के लिये जर्मनी भेजा गया था। उसने वहाँ हक्सले (Huxley) डार्विन (Darvein) तथा और ऐसी ही पुस्तकें पढ़ीं। स्वभाव से और शिक्षा से वह नास्तिक था। बाल साहिब के ज्योतिष शास्त्र पर ग्रन्थों से (जो उस समय लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे) उसके विचारों में परिवर्तन हुवा। वह सोचने लगा कि कोई उत्पन्न करने वाली शक्ति है। किन्तु उसका क़ानूनी दिमाग़ अञ्जील की इस सचाई को कोई महत्व नहीं देता था कि मनुष्य परमात्मा की शक्ल पर बनाया गया है।

"वाहियात! क्या यह छोटा सा मनुष्य क्रमोन्नति के फल-स्वरूप ही घटना चक्र से नहीं बन गया? किन्तु सन् १६२३ में उसके जीवन में बड़ा परिवर्तन हुवा। उसकी स्त्री मर गई और अगले साल उसका एक मात्र बच्चा भी मर गया। उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति से उसे वञ्चित कर दिया गया। उसके मित्रों ने बताया कि उसकी स्त्री से सन्देश प्राप्त हुवे हैं। और जो उससे बातें करने को उत्सुक हैं। उसने स्वभावतः अन्तर्दृष्टि की। W. H. Myer साहिब की एक पुस्तक "मनुष्य का मरणोत्तर जीवन" "Survival of Human Persolaity" उसके हाथ में दी गई। उसने उसे बड़े उत्सुक बच्चे की तरह पढ़ा उस

पर एक नया प्रकाश प्रकट हुवा उसकी नास्तिक बुद्धि दूर हो गई वह उच्च उद्देश्य से प्रेरित हुवा और आज संसार उसकी उस छोटी पुस्तक से जो उसने परलोक-वाद के विषय को दी है, अधिक सम्पत्तिवान है। उसकी पुस्तक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी माध्यम 'मिसिज़ आसर्न ल्योनार्ड" द्वारा आत्मा से प्राप्त शिक्षा का यथार्थ दान है।

"तलाश करो और तुम्हें मिल जायगा" खट खटाओ और यह खुल जायगा। क्या ईसा मसीह ने मनुष्य के सम्बन्ध में सत्य नहीं कहा? "यद्यपि वह मर जाय फिर भी वह जीवित होगा।" यह समझ में नहीं आता कि ईसाई मज़हब विशेषतः कैथलिक धर्म वाले, परलोक-वाद के इतने ज़बरदस्त प्रमाण होते हुवे भी इसके विरुद्ध अपनी आवाज़ क्यों उठाते हैं। यह शुभ लक्षण है कि इङ्गलिस्तान में परलोक-वाद के विरुद्ध धर्म का विरोध दूर होता जा रहा है। परलोक-वाद के चक्र और आवेश युक्त व्याख्यान और भाषण गिरजा घरों के तत्वावधान में होते हैं परलोक-वाद पर अनेक पुस्तकें ईसाई पादरियों ने लिखी हैं। इससे पता लगता है कि किस प्रकार ईसाई धर्म की परलोक-वाद के प्रति विरोध की भावनाएँ दूर हो रही हैं। उन अनेक पुस्तकों में से पादरी सी० एल० ट्वीडल और पादरी चार्लस ड्रेटन टामस की लिखी पुस्तकें विशेष महत्व की हैं। प्रथम महानुभाव ने भिन्न भिन्न पारलौकिक घटनाओं का बड़ा व्यापक वर्णन किया है। और द्वितीय महानुभाव मरणोत्तर जीवन के रहस्यों में प्रवेश करता है और सारे पारलौकिक जगत् का बड़ा सुन्दर वर्णन करता

है। उन्होंने अपनी पुस्तक "मरणोत्तर जीवन सप्रमाण" में भिन्न २ लोकों का वर्णन किया है जैसा कि लेखक को अपने पिता और बहिन के सन्देशों से प्रमाणित हुवा है। उपरोक्त पुस्तक से निम्नलिखित उद्धरण परलोक-वाद के महत्व के सम्बन्ध में और उससे खतरों के सम्बन्ध में (यदि अच्छी प्रकार उसे समझा जावे) ज्ञान प्राप्त कराते हैं।

"परलोक-वाद यदि अच्छी प्रकार न समझा जावे तो बहुत खतरनाक हो सकता है। लोगों को बताना चाहिये कि वह इसे समझें। कुछ लोग जिनका विश्वास आत्मा के आने में होता है यह मालूम करके कि उन्हें माध्यम से अच्छी सलाह मिलती है बारबार सलाह लेने जाते हैं और सब प्रकार की स्थितियों में परामर्श और हिदायत मांगते हैं जिनमें कि उन्हें अपनी शक्तियाँ लगानी चाहियें। यह बात बहुत बुरी है। हमें इस संसार में अपने विकास के लिये भेजा गया है। ऐसे व्यक्तियों को सन्देश प्राप्ति के अधिकार को ठीक वर्तना सीखना चाहिये दूसरों पर ही अधिक निर्भर नहीं रहना चाहिये। इस प्रकार का सम्पर्क हरएक के लिये अच्छा नहीं हो सकता। कुछ व्यक्ति इसके लिये तैयार नहीं होते। जितना अधिक कोई व्यक्ति पृथ्वी पर पारलौकिक जीवन की यथार्थता को अनुभव करता है। वह उतना ही अच्छा जीवन बिताने योग्य होता है, और उतना ही अधिक इस प्रकार के सन्देशों से वह लाभ उठा सकता है।"

मेरी यह इच्छा नहीं है कि परलोक-वाद एक फैशनेबल

लोगों की सनक बन जाय किन्तु वर्तमान में जो उदासीनता आत्मा और मरणोत्तर जीवन से सम्बन्ध रखने वाली सब बातों की ओर से फैली हुई है उससे तो अच्छा है यदि परलोक-वाद सर्व साधारण में फैल जाय तो बहुत से लोग दूसरों के उदाहरण से ही प्रभावित होंगे, यदि वह स्वयं इस सम्बन्ध में बिचार नहीं करेंगे। वर्तमान अवस्था में जहां के तहां रहने से तो यह अच्छा है कि वह भेड़ों की तरह आवें किन्तु इसके सात्विक और उच्च प्रभावों से बंचित न रहें।"

परलोक-वाद संसार के लिये इसलिये भी महत्व की चीज़ है कि यह संसार को ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान में और आत्म संयम में सहायक होगा। मनुष्यों को जो कठिनाइयाँ होती हैं, और उन्हें आशा की जो ज़रूरत रहती है इसे हम देखते हैं। परलोक-वाद जो आशा देता है उससे बहुत अधिक लाभ होगा जितना कि सब मानसिक उधेड़ बुनों से नहीं जोकि चलती रहती हैं। लोग भविष्य जीवन में कल्पित अनुराग के प्रभाव से डर कर, भटक कर अनीश्वर वादी या इससे भी बुरे होगये हैं। हम उनकी निन्दा नहीं करते क्योंकि हम उनकी कठिनाइयों को जानते हैं किन्तु सत्य मालूम होने पर उन्हें बड़ी सहायता मिलेगी।"

कहते हैं ज्ञान से विश्वास अधिक अच्छा है। किन्तु जब कोई व्यक्ति जीवन की दुर्घटनाओं और आपत्तियों से विचलित, दुखी और दम घुटा सा हो जाता है तो परलोक-वाद का ज्ञान ही उसकी सहायता कर सकता है। यह अन्धकार

के काले पर्दे को हटा देता है। यह आत्मा को बलवान बनाता है यह नये प्रकाश का द्वार खोल देता है। हमें दैवी स्रोत से ऐसा प्रोत्साहन मिलता है जिसके प्रकम्पन को कोई शब्द चित्रित नहीं कर सकते।"

संसार की बुराइयाँ उसी समय दूर होंगी जब दोनों लोकों का परस्पर सहयोग होगा।

हमारा संसार इतना अधूरा है और हमारा ज्ञान वैज्ञानिक उन्नति की सब शाखाओं से इतना परिमित है कि यह बड़ा आवश्यक है कि पारलौकिक अनुसन्धानों पर विशेष ध्यान दिया जाय। संसार के सम्बन्ध में पुराने विचार नष्ट हो चुके हैं हमारे पूर्वजों का ज्योतिष और खगोल विद्या में बड़ा विश्वास था।" इन विद्याओं का अभ्यास परलोक के हमारे पथ प्रदर्शकों की सहायता से बहुत उन्नत होगा, और हमारे सांसारिक सुख से उसमें बड़े परिवर्तन होंगे जैसा कि ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड की सर्वाइबल-लीग के प्रेजीडेन्ट शाडेस्मंडेर जो बहुत परिवर्तन शील और उच्चकोटि के विद्वान हैं, और अन्तर्जातीय पारलौकिक अनुसन्धान संस्था संस्थापक हैं। इस बात की वकालत करते रहे हैं कि;हमें मनुष्यों और फरिश्तों की अपनी रसायनशालाओं में और व्याख्यान होलों में सम्मिलित कौंसिल बनानी चाहिये, जिससे कि यह ज्ञान बढ़े। हमारे स्वर्गीय पथ प्रदर्शक—रसायन विद्या (biology) चिकित्सा शास्त्र और अनेक ऐसी विद्याएँ जानते हैं कि उनके विस्तृत और एकत्रित अनुभवों और ज्ञान के

मुक़ाबले में हमारी इस संसार की बहुत प्रशंसित योग्यता भी तुच्छ है। हमारे सांसारिक वैज्ञानिक अपनी परिश्रम पूर्वक की गई खोजों के बावजूद नासूर (Cancer) कोटादिक असाध्य रोगों का निदान और चिकित्सा करने में प्रशंसनीय सफलता नहीं प्राप्त कर सकते हैं। हमें विश्वास द्वारा चिकित्सा की बात मालूम है। हम इस विषय का किसी दूसरे अध्याय में जिक्र करेंगे। जैसा कि हजारों लाखों मनुष्यों का अनुभव संसार भर में है, हम यह परिणाम निकाल सकते हैं कि परलोक हमारे पथ प्रदर्शकों के साथ अधिक और पूरक सम्पर्क का फल केवल यही न होगा कि मनुष्य की चारित्रिक अधिक उन्नति होगी। बल्कि इस लोक में भी अधिक सुख होगा कोई बात भी केवल इत्तफाक नहीं है। कोई बात भी जो मनुष्य करता है या न की हुई छोड़ देता है, उससे परमात्मा की तजवीज या इरादे में कोई रुकावट नहीं पड़ती।

हम दो संसारों में रहते हैं। यह जगत परलोक का छोटा नमूना है संसार की अशान्ति के सम्बन्ध के एक सन्देश में एक आत्मा ने कहा "मनुष्यों को इस लोक के सम्पर्क में लावेंगे तब भ्रातृ भाव की स्थापना होगी उस समय तक न गरीबी रुक सकती है न रोग शान्त हो सकता है न युद्ध बन्द हो सकते हैं संसार की बहुत सी बुराइयों का इलाज मिल जायगा जब कि दोनों संसार परस्पर सहयोग करेंगे।"

"जैकब" को एक स्वप्न आया था जिसमें उसने एक सीढ़ी

इस संसार से स्वर्ग तक फैली हुई देखी जिसके द्वारा आत्माएँ और फरिश्ते चढ़ते उतरते थे। सैंटपाल ने ईसामसीह के ५० वें वर्ष में लिखा है कि पारलौकिक वर मनुष्य को लाभ पहुँचाने को दिये गये थे। परलोकगत आत्माओं को सर विलियम क्रुक्स ने लाईन के दूसरे सिरे पर बुद्धिमान व्यक्ति कहा है जो ठीक ही है।

परलोक-वाद की उन्नति उस मनोवृत्ति पर निर्भर है जो इस प्रश्न पर हम लगाते हैं। यह सबसे उच्च विद्या है किन्तु जैसा कि मि० "सैन्टन मोसिस" कहते हैं कि "द्वार कुछ २ खुले हैं और रंग बरंगे लोग प्रवेश कर रहे हैं। हमें कुछ ज्ञान नहीं है और हममें से अनेक खोज की ठीक दशा की ओर से उदासीन हैं; और हम पहिले से ही पेचीदा विषय को अपनी लापरवाही और भूल से और कठिन बना देते हैं। परलोक-वाद में ख़तरा हमारी मूर्खता से होता है। अतः उचित है कि हम गुप्त और प्रकट दोनों प्रकार के चक्र करें। आन्दोलन ठीक रीति से आगे बढ़ना चाहिये और केवल वही व्यक्ति इसके अनुयायी होने के लिये चुने जावें जो योग्य हैं। "ऐसे व्यक्तियों से बहुत हानि पहुँच जाती है जो इसके ख़तरों को समझे बग़ैर परलोक-वादी बन बैठते हैं। यह बड़ा पेचीदा और रहस्यमय विज्ञान है जो रसायन शास्त्र या खगोल विद्या पर निर्धारित नहीं है। हमें ऐसी शक्तियों पर भरोसा करना पड़ता है जो हमारे काबू से बाहर हैं। पारलौकिक प्रदर्शन ऐसे निश्चित नहीं होते जैसे

कि प्रयोगशाला के रासायनिक अनुभव, किन्तु आन्तरिक विश्वास और शक्ति होने से जो कि भारी आध्यात्मिक शक्तियां हैं मनुष्य जाति की भलाई के लिये प्रकृति के बहुत से रहस्यों का उद्घाटन करना सम्भव है। पूर्ण ईमानदारी, पूर्ण संकल्प, प्रभु और उसकी दयालुता पर बहुत भरोसा, सत्य से प्रेम और दुखी मानवों की सेवा करने की इच्छा, इस विज्ञान के प्राप्त करने के लिये आवश्यक हैं। यह शैतानों के साथ खेलना नहीं है जैसा कि ख़याल किया जाता है।

एक दिन एक मित्र आये और मेरे पास पड़ी हुई एक किताब उठाली। यह परलोक-वाद की पुस्तक थी उन्होंने फ़ौरन ही इसे वापिस रख दिया। मानो कि उनका हाथ किसी दहकते हुवे अंगारे से जल गया हो। मुझे बड़ा आघात पहुँचा। किन्तु यह 'सर्व साधारण की मनोवृत्ति परलोक-वाद की ओर है, जो निन्दनीय है।

'अपने आपको जानो' यह बहुत बुद्धिमत्ता पूर्ण सिद्धान्त है मनुष्य अपनी आत्मा को और प्रभु के शाश्वत जगत् में दूसरी आत्माओं के साथ अपने सम्बन्ध को समझने का प्रयत्न क्यों न करें।

प्रकम्प दोनों संसारों के बीच ईथर का पुल है। सब वस्तुयें कम्पित होती हैं जीवित और निर्जीव। जो परलोक में चले गये हैं वह हमारी बात सुन सकते हैं और हमें देख सकते हैं क्योंकि उनकी सूक्ष्म प्रकृतियाँ इतनी तेज़ी से घूमती हैं कि हम मांस

पिंड के अन्दर क़ैद हुवे हुवे उन्हें देख नहीं सकते। फौलाद के स्प्रिङ्ग (Spring) को झुका कर छोड़ दो और जब वह बड़ी तेजी से कांपने लगेगा तो हम उसे देख नहीं सकते। जब हम बोलते हैं हमारे प्रकम्प सुनने वाले के कान पर लगते हैं और वह हमारी बात सुनता है। जब हम देखते हैं तो देखने के प्रकम्प देखने वाले मनुष्य द्वारा पकड़े जाते हैं किन्तु प्रकम्प अन्धे और बहरे मनुष्य तक नहीं पहुँचते और इसलिये बहिरे सुन नहीं सकते और अन्धे देख नहीं सकते। जो कुछ दिव्य जगत् में होता है हम उधर से बहिरे और अन्धे हैं। हमारे सुनने और देखने के औजार इस काम के लिये पर्याप्त मजबूत नहीं हैं किन्तु जिन्हें माध्यमिक शक्ति प्राप्त है जैसा कि दिव्य श्रवण की या दिव्य-दृष्टि की वह सुन और देख सकते हैं। प्रेम के प्रकम्पों का प्रभाव इतना अधिक पड़ता है कि हमारी अपनी प्रसन्नता के लिये हृदय के इस गुण की वृद्धि अधिकाधिक करनी चाहिये।

प्रेम से समझ पैदा होती है और जब उसके साथ युक्ति जोड़ दी जाती है तो वह संसार और प्रकृति के रहस्यों के उद्घाटन की बुनियाद क़ायम करती है।

सब संसार प्रकम्पों पर आश्रित है। यह हमारे जीवन का सार है यह सब जीवित और निर्जीव वस्तुओं को जोड़ने वाली कड़ी है सब पारलौकिक घटनाएँ प्रकम्पों पर अवलम्बित हैं।

मैं परलोक-वाद को एक नया धर्म समझता हूँ जो विरोधी मतो और सिद्धान्तों की शिक्षा नहीं देता, यह ऐसा धर्म है जो

प्रत्येक वस्तु को अनुकूल स्थिति देता, और निश्चित रूप से बताता है कि "जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटेंगे" और जो हमारे प्यारे दूसरे लोक में चले गये वह वहां हमारे स्वर्गीय घर में पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। केवल प्रेम प्रार्थना सेवा और कष्ट सहन द्वारा ही हम अपनी आत्मा के लिये शाश्वत मुक्ति प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। एक बड़े विचारक ने कहा है "परलोक-वाद आध्यात्मिकता के बगैर आत्मा के बगैर शरीर है। उसकी जरूरत नहीं क्योंकि वह अपने अनुयायियों को भौतिक मानसिक या धार्मिक अधोगति में पहुँचा देगा। उसे पूर्ण रूप से अनुचित समझा जाना चाहिये अब भी यह आन्दोलन इससे वञ्चित है। अञ्जील में हमें पर्याप्त प्रमाण मिलता है कि मनुष्य और फरिश्तों का मेल जोल प्राचीन काल से रहा है। कहा जाता है कि आत्माएँ किसी न किसी रूप में परमात्मा के सन्देशों की वाहक जब से समय आरम्भ हुआ तब से ही हैं। परलोक-वाद के "उच्च रूप" के कर्ता ने इतनी लम्बी सूची उन लोगों के नामों की दी है जिनका आत्माओं से सम्मिलन हुवा है कि वह सूची थकाने वाली मालूम होती है—आदम, ईव, केन, नोह, अब्राहम, नेकब, मूसा, जोशुआ, ईसामसीह आदि २। आध्यात्मिक सन्मान का केन्द्र परमात्मा है। हमने जितने भी चक्र करने का यत्न किया उनमें जिस बात का मुझ पर विशेष प्रभाव हुवा वह परमात्मा के प्रति छोटी और ऊँची सभी आत्माओं का अत्यन्त आदर भाव है। परमात्मा का नाम

बुरी आत्माओं को भगाने के लिये रसायन है संसार में सर्व व्यापक विचार एक परमात्मा ही है। वही संसार का सर्वात्मा सर्वज्ञ शासक है। एक बुद्धिमान लेखक के शब्दों में सृष्टि के सब जीवों की निरन्तर आराधना का विषय केवल परमात्मा है। कोई आत्मा भी (जो प्रेत लोक में चाहे कितने समय से हो) इस लोक का सन्देश देते समय यह बहाना नहीं करती कि उसने परमात्मा को देखा है, या उसके हजूर में पहुँच सकी है। उनको प्रभु के नियमों की बाबत अधिक मालूम है, और उसकी पूर्णता के भावों से बहुत अधिक ओत प्रोत हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में विचारों का जो ताना बाना हमने तन रखा है वह उसका अधिकांश दूर करके उसकी पूर्णता से ही सन्तुष्ट हैं। और उसके स्वभाव के सम्बन्ध में वह बहुत कम अटकल लगाते हैं वह नितान्त परमात्मा की पूजा, आराधना, स्तुति, ध्यान और प्रार्थना पर ही ज़ोर देते हैं। वह अपनी ओर से निरन्तर आराधन और स्तुति का ही वर्णन करते हैं। वह हमें भी ऐसा ही करने की शिक्षा देते हैं, और ध्यान के फल और प्रार्थना के अधिकार पर विशेष रूप से ज़ोर देते है।"

मैंने 'आत्मा की शिक्षा' की पुस्तक से उपरोक्त लम्बा उद्धरण जान बूझ कर दिया है क्योंकि इसका सबसे सम्बन्ध है। मैं एक और घटना का वर्णन करता हूँ।

मैं एक आराम कुर्सी पर लेटा हुवा था। और पढ़ने के लिये एक किताब खोलने की बात सोच रहा था, एक दम मेरा शरीर

भारी होगया। किताब नीचे गिर गई। मेरे दोनों हाथ जो कुर्सी की बाँहों पर टिके हुवे थे मिल गये, वह ऐसे मिल गये जैसे हम प्रार्थना के समय करते हैं। मेरा मन शान्ति की गहराई में चला गया। मेरे होठों से लगातार प्रभुकी स्तुति और आराधना के शब्द निकल रहे थे। यह परमानन्द का समय था। जैसा मैंने पहिले कभी अपने जीवन में अनुभव नहीं किया था। प्रार्थना के हाथ नीचे ऊपर उठते थे। कभी वह माथे तक जाते थे और तब नीचे आते थे। धीरे २ बड़े आराम से जरा सी भी शक्ति लगाने के बगैर मुझे कुर्सी से उठाया गया, मैंने अपनी टांगें नीचे को रखीं और तब आखरी दृश्य आया। मैं बहुत भावपूर्ण मुद्रा में हाथ जोड़े हुवे परमात्मा की प्रार्थना में नीचे झुका। यह हरकतें मेरी किसी चेष्टा के बगैर हो रही थीं। प्रार्थना समाप्त हुई मैंने एक पेन्सिल उठाई और अपने पथ प्रदर्शक से पूछा कि यह घटना कैसे हुई? उत्तर मिला "मैं चाहता हूँ कि तुम हर समय प्रभु की भक्ति से भरे रहो।" बहुत से अवसरों पर जब कभी बेख़बरी में भी किसी आत्मा की भक्ति के रूप में कुछ कहा जाता था तो पथ-प्रदर्शक आत्मा कह देती थी। "पहले परमात्मा और केवल परमात्मा। प्रभु की ही पूजा करो।"

आत्मोन्नति की अकथनीय सम्भावनाएँ।

यह तथ्य ही कि परमात्मा ने हमें स्वतंत्र इच्छा और व्यक्तित्व दिया है प्रमाणित करता है कि उस प्रभु का उद्देश्य महान्

है यह जीवन तो तैय्यारी मात्र है। वह हमारे प्रयत्नों में कोई बन्धन नहीं लगाता। हम उन सम्भावनाओं को अनुभव नहीं करते जो कि प्रवृति में हैं। यह आत्मा का सन्देश ही लो:—

"जितनी अधिक बेबसी हृदय को अकेले काम करने में अनुभव होती है। उतना ही अधिक वह प्रार्थना में, विकास को प्राप्त होता है और अपनी ओर शक्तियों को आकर्षित करता है जो इसे घेरे रहती हैं। और इसलिये एक व्यक्ति अपने में अनेकताओं का समूह होता है अर्थात् वह अनेक अदृश्य शक्तियों के कार्य करने का केन्द्र होता है। परिमित मन के लिये अद्भुत सङ्गठनों के अन्तर्गत अद्भुत सङ्गठनों की क़दर करना कठिन है। वास्तव में क़दर करने का पूर्ण अभाव होता है इसलिये नहीं कि क़दर करने की नीयत नहीं है। बल्कि इसलिये कि जन्जीरों के अन्दर जन्जीरें मालुम करने की शक्ति का अभाव है उदाहरण के लिये विचार को लीजिये। एक विचार करने के लिये कितने थोड़े प्रयास की जरूरत है। किन्तु देखो कि कितने हजारों परिणाम एक विचार उत्पन्न करता है। और कितनी अगणित तारें मानो प्रकम्पन में आती हैं। पहिले आप एक तार बेखबरी में धार्मिक विचार की फैंकते हैं। वह किसी निश्चित रूप के बगैर अज्ञात में रूप ग्रहण करती है यह अपरिमित ज्ञान या बिना रूप का विचार उन परमाणुओं की शक्ति से टकराता है जो तुम्हारे चारों ओर हैं और इस प्रकार सघनता प्राप्त करता है। तब वह अन्दर प्रतिघात करता है और आपके दिमाग़ अर्थात् विचारों को बनाने वाली शक्ति

को छूता है। इससे पहिले प्रत्येक परमाणु पर वह अपना प्रभाव छोड़ता है जिस को वह आपके उत्तम व्यक्तित्व से अधम व्यक्तित्व तक पहुँचने में छूता है। जब विचार आपके मन या दिमाग़ में रूप ग्रहण कर लेता है, तब वह आपके चारों ओर फैली हुई जगह में फैंका जाता है और तुम्हारे तेज मण्डल पर उसका चित्र बन जाता है, और तब किसी दूसरे तेज मण्डल पर उसका प्रतिबिम्ब पड़ता है जो उससे संयुक्त हो जाता है।

किसी छोटी सी घटना को लो कि वह पूर्ण होने से पूर्व, सैंकड़ों भवितव्यताओं में से हो कर गुज़रती है वास्तव में दृढ़ विचार और कमज़ोर विचार के मनुष्य में अन्तर इतना ही है कि एक बने हुवे विचार को दूसरे की अपेक्षा अधिक वेग से ऊंची आत्मा से नीचे की आत्मा तक पहुँचाता है। दृढ़ संकल्प व्यक्ति की दोनों आत्माओं के बीच का ज्ञान बड़ी पूर्ण अवस्था में रहता है। और विचार की तारक्रिया या विचारों की लहरें सब एक साथ काम करती हैं। किन्तु निर्बल हृदय या अनिश्चित विचारके व्यक्ति में यह अन्तर रहता है कि वह आपस में इतने सीधे सम्पर्क में नहीं रहतीं। उन की विचार तरंगें ढीली होती हैं और इसलिये विचार को प्रेषित करने में देर लगती है। और प्रायः जब वह पहुँच जाता है तो उसका वास्तविक वेग नष्ट हो जाता है।

यदि तुम इस विचार का अनुकरण करोगे तो तुम देखोगे कि यह सब दशाओं को कैसे प्रभावित करता है, उदाहरण के लिये तुम कहते हो कि एक पुरुष बेसुध है या स्वप्नावस्था में है। वास्तव

में इसका कारण है आध्यात्मिक शरीर या वास्तविक शरीर थोड़ी देर के लिये स्वतन्त्र कार्य कर रहा है और तारें ढीली कर दी गईं और इससे तुम्हें विचार का कुछ परिणाम मालूम हो सकेगा।

अब इसी प्रकार फ़रिश्तों के दृश्य को देखो और तुम्हें मालूम होगा कि वहाँ विचार उत्पन्न होता है। अर्थात् प्रत्येक विचार जो उस से उत्पन्न होता है बराबर बढ़ता जाता है, और एक शक्ति के रूप में केन्द्रित हो जाता है जो सब ओर के तारों पर आघात पहुँचाती है, और जो मनुष्यों के प्रभामण्डल को सम्पर्क कर उन्हें विचित्र अकथनीय विचार देती है।

इनसे भी ऊँचे देखो कि स्वर्ग के देवताओं के विचार क्या कुछ कर सकते हैं? वह इतने दृढ़ और सघन होते हैं और इतने अगणित होते हैं; कि वह इतनी शक्तियाँ बना लेते हैं जो ऊपर नीचे ओतप्रोत रहती हैं। ऊपर वह उन उच्च शक्तियों से मिश्रित होते हैं। जिन को हम छू नहीं सकते। या सब विचारों से उच्च विचार, जो विचारों का केन्द्र परमात्मा जिस से विचार कार्य रूप में निकलता है और जिस की विचार शक्ति सृष्टि की शक्ति है।

हमें ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन का संतुलन भगवान् की महान् शक्ति द्वारा बड़ी अद्भुत रीति से सञ्चालित किया जाता है। उसे एक कण तक मालूम है कि दुखका पलड़ा कब सुख के पलड़े के बराबर हो गया है और वह कभी भी एक को दूसरे से अतिक्रमण नहीं करने देता। प्रत्युत इस अद्भुत न्याय से वह

उन्नति को अग्रसर करता है। जिससे कि एक दूसरे के लिये प्रक्रिया शील होकर आत्मा को ऊपर उठाती है जैसे बीज उस समय तक परिपक्व अवस्था को नहीं प्राप्त होता जब तक उसे पृथ्वी के अन्धकार में दबाया न जाय, इसी प्रकार आत्मा भी अपने भिन्न २ शरीरों के बगैर पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकती। क्यों कि जैसे भूमि मानों रुकावट करती है और यही रुकावट बीज को अपना प्रयत्न केन्द्रित करने में कारण होती है। इसी प्रकार संसार की कठिनाइयाँ आत्मा को केन्द्रित करने और परिपक्व होने में कारण होती हैं। और तब भी हम इन विचारों की परवाह नहीं करते। और जिसे हम आपत्ति समझ कर गुन गुनाने लगते हैं वह, वह भूमि है जो हमारे जीवनों को पूर्णता के हल्के रंग में रंग देती है। यदि किसी बीज को पृथ्वी में दबाये बगैर उजाले में बो दिया जाय तो तुम देखोगे कि वह प्रायः बिना रंग का ठूंठसा छोटा पेड़ रह जायगा। ठीक यही दशा मनुष्य जाति की है जो गढ़े में नहीं जाते—अर्थात् जिन्हें आपत्ति से वास्ता नहीं पड़ा वह कभी परिपक्व नहीं होते, उनके दिमाग़ पीले अविकसित ठूंठ रह जाते हैं। सिर्फ इसलिये कि उन्हें किसी के साथ रगड़ नहीं खानी पड़ी, और इसलिये उनकी शक्तियाँ रुकी रह जाती हैं। ख्याति और नाम, धन और बड़ाई हमें आकर्षित करती हैं हम सांसारिक सफलता के लिये भटकते हैं, परन्तु ईश्वर की दृष्टि में (जैसा कि आत्माओं के सन्देशों से हमें मालूम हुवा है) भले काम का ही मूल्य है—तुम जो उपकार

अपने पड़ोसी का कर सको, दुखी व्यक्ति के प्रति आश्वासन का शब्द, भला काम, सच्चा हृदय, निस्स्वार्थ विचार, पवित्र जीवन, तुम्हारी सादगी, सचाई, शान्ति प्रार्थना, निष्कपट आचरण, विनय, परिश्रम और कर्तव्य परायणता, इन्हीं का मूल्य है, नकि सांसारिक बड़ी सम्पत्ति का, चाहे वह बादशाह की, या वैज्ञानिक की या विद्वान् ब्रह्म ज्ञानी की हो।

परमात्मा को इससे कोई मतलब नहीं है कि कोई मनुष्य नास्तिक है या ज्ञानी, प्रकृतिवादी है या परलोक-वादी। उसका जीवन, उसका प्रेम, उसकी सहानुभूति, उसका परिश्रम, उसकी ईमानदारी, उसकी निस्स्वार्थता, उसकी पवित्रता ही वास्तविक जीवन है, जो कुछ वह उपदेश करता है और सोचता है वह नहीं। क्योंकि प्रत्येक पुरुष उस दृष्टि से देखता है जो उसे मिली है और परमात्मा यथार्थताओं और विरुद्धताओं के द्वारा चमत्कार दिखाता है।

सब शक्तियों में से केवल प्रेम की शक्ति ही जीवन की पूर्णता देती है यह सचाई से भी बढ़कर है। ईश्वर, प्रेम है।

इस पृथ्वी पर हम सबके लिये जीवन बिताने की दशाएँ बहुत अधिक अच्छी होतीं, यदि हम आध्यात्मिक दर्शन का आत्मा के विकास की अपार सम्भावनाओं के लिये गहरा, अध्ययन करते। नीचे का उद्धरण हम लैडबीटर (Laid Bitter) की पुस्तक 'वस्तुओं का अदृश्यरूप' के पृष्ठ ३५१-३५३ भाग-२ से दे रहे हैं और वह उससे जो हमने परलोक-वाद की

उपयोगिता के बारे में कहा है बड़ी सुन्दरता से मिलान खाता है।

एक ऐसी परिस्थिति की कल्पना करो जिस में सब धोखा और फ़रेब असम्भव हो जिसमें भ्रम पैदा ही न हो सके क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के विचारों को पढ़ सकता है। इससे किसी को भी वह काम नहीं दिया जायगा जिसे वह करने के अयोग्य है, क्योंकि आरम्भ से ही पिता, माता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों की योग्यता देख सकेंगे जो उनके आधीन की जावेंगी। डाक्टर भी कोई ग़लती नहीं करेगा क्योंकि वह देख सकेगा कि उसके बीमार की क्या दशा है और वह अपनी औषधियों की प्रतिक्रिया भी विस्तार से देख सकेगा। सोचिये कि उस समय कितना अन्तर पड़ेगा जब मृत्यु हमें उनसे अलग नहीं कर सकेगी जिन्हें हम प्रेम करते हैं।

क्यों कि सूक्ष्मजगत, स्थूल जगत की तरह हमारे सामने खुला होगा। मनुष्यों के लिये दैवी व्यवस्था में सन्देह करने की गुञ्जाईश नहीं रहेगी। क्योंकि उसके नीचे के स्तर उन के नेत्रों के सामने होंगे। गाना और कला कौशल अधिक उन्नत होंगे क्यों कि सूक्ष्म रंग और समानताएं हमारे आधीन होंगी और जो कुछ अब हम जानते हैं वह भी हमें मालूम होगा। विज्ञान के रहस्य हल हो जावेंगे, क्यों कि मनुष्य ज्ञान की अपार वृद्धियाँ अपनी सब शाखाओं को एक पूर्ण व्यवस्था में एकत्रित कर देंगी। हिसाब और ज्यौमेटरी बहुत अधिक सन्तोषप्रद होंगी क्यों कि हम तब देख सकेंगे कि उन का क्या मतलब है और वह संसार के उन्नत

क्रम में क्या कुछ कार्य कर सकते हैं।

जीवन का प्रत्येक विभाग, अधिक विस्तीर्ण और पूर्ण होगा क्यों कि हम उस सुन्दर और अद्भुत संसार को (जिसके साथ हमारा भाग्य बंधा है) इतना अधिक देख सकेंगे और अधिक जान कर हम उसकी प्रशंसा करने और उससे प्रेम करनेके बगैर नहीं रह सकेंगे। इसलिये हम अपार सुखी होंगे जैसे २ हम उस अन्तिम पूर्णता को प्राप्त होंगे जो आनन्द की पराकाष्ठा है क्यों कि वह शाश्वत आनन्द के साथ सम्मिलित है।

अध्याय ११

उच्च संज्ञा प्राप्ति का साधनः—

मनुष्य का मन एक पेचीदा और रहस्यमय अङ्ग है। मन विज्ञान विशारदों का मत है कि मनुष्यों के दो मन हैं एक साधारण मन जिस से वह देखता है, अनुभव करता है और दृश्य इन्द्रियों द्वारा काम करता है और दूसरा मन जो भूतकाल की सब घटनाओं को संग्रह करता रहता है। वह केवल निद्रित अवस्था में या बेहोशी में अथवा मैस्मिरज्म द्वारा लाई निद्रामें काम करता है। यह बड़ा तीव्र होता है यह बड़े २ चमत्कार दिखा सकता है। यह बिना आँखों के देखता है। यह शरीर को छोड़ कर दूर २ यात्रा कर आता है। यह दूसरे मन की बातें किताब की

तरह पढ़ सकता है। यह बन्द लिफ़ाफे के अन्दर की चीज़ या बन्द किताब के मेज़मून को बता सकता है।

इस दूसरे दिमाग़ी साधन द्वारा मन की बातों का संग्रह बिल्कुल ठीक २ और स्थायी रूप से बराबर होता रहता है। यह हमारे सम्पूर्ण रहस्यमय जीवन को चिपटाये हुवे है। यह प्रत्येक विचार को जो मन में आता है लिये हुवे है। प्रत्येक मानसिक चित्र या छाप को लिये हुवे है। प्रत्येक शब्द जो बोला गया है और प्रत्येक आवाज़ जो सुनी गई है। प्रत्येक बात जो चेतन अथवा अचेतन मन के अन्तर्गत आई है। इस प्रकार इस निर्दय स्वयं रजिस्टरी द्वारा हमारे पूर्वजन्म के सब काम, शब्द और विचार ठीक २ स्थायी रूप से एकत्र हो जाते हैं।

सब बातें जो हमने सुनी हैं या हमें मालूम हैं वह सब संग्रह रहती हैं। हमारा रहस्यमय मानसिक, धार्मिक और बोधिक इतिहास सदा उपस्थित और स्थायी अस्तित्व धारण किये रहता है। (मार्डनस्पिरिच्युलिज़म—जे० गाडफरी रौपर्ट द्वारा पृष्ठ ८७-८८)

'फ्रेडिरिक, डब्ल्यू मायर्स ने आध्यात्मिक घटनाओं को उच्च मन की क्रियाओं का फल प्रमाणित करने का प्रयत्न किया था। किन्तु अनेक वैज्ञानिक परिश्रम पूर्वक अनुसन्धान कर इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि इस बयान में कोई तथ्य नहीं है। और आत्माओं के पृथक अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।

आत्माओं का प्रकट होना कल्पना नहीं है—प्रत्युत एक सत्यता है जो हज़ारों रीतियों से प्रमाणित होती है। यह ठीक

है कि मनुष्य का एक अन्तर्मन भी होता है किन्तु यह भी इसी प्रकार सत्य है कि सूक्ष्म आत्माएँ पृथक अस्तित्व रखती हैं और शरीर धारी मनुष्यों से सम्पर्क रख सकती हैं। मनुष्य के अन्तर्मन के विचार के प्रकाश में आत्मवाद को यह कह कर समाप्त नहीं किया जा सकता कि यह अवैज्ञानिक है और खाली वहम है। ऐसा कहना सच्चाई का हनन करना है। Sir Edward Marshell-Hall K. C. सर एडवर्ड मार्शल हाल के० सी० Guidance from Beymd (परलोक से हिदायत) नाम की पुस्तक की भूमिका में एक अपने निजी अनुभव की बात लिखते हैं। यह पुस्तक एक स्वयं लेखक माध्यम मिस 'के० विंग फील्ड' के द्वारा आत्माओं से प्राप्त सन्देशों का संग्रह है। वह मार्शल साहिब की बहिन के पास मेहमान के तौर से रह रही थी, और उन्हें मजबूर किया गया कि वह मिस 'विंग फील्ड' की माध्यम शक्तियों की परीक्षा करें। उन्होंने दूसरे ही वातावरण में शिक्षा पाई थी और उन्हें आत्माओं की चक्रों में और ऐसी बेहूदगीयों में कुछ विश्वास नहीं था। उन्होंने थोड़ी देर सोचा और अपनी जेब को टटोला। साऊथ अफ्रीका से उनके भाई का एक पत्र आया था। उन्हों ने वह निकाला उसे एक लिफ़ाफे में रखा और उस पर मोहर लगा दी माध्यम से कहा गया कि चिट्ठी के लेखक का नाम बताओ। नीचे लिखा सन्देश प्राप्त हुवा:—

'इस चिट्ठी का लेखक मर चुका है।' उसका अविश्वास

और भी बढ़ा, उसने एक और प्रश्न पूछा 'वह कब और कहाँ मरा' ? उत्तर आया कि "वह कल दक्षिण अफ्रीका में मर गया।"

इस बात की सत्यता ३ सप्ताह पीछे प्रमाणित हुई जब सर एडवर्ड के पास दक्षिणी अफ्रीका से उस के भाई के एक मित्र का पत्र आया जिसमें उसकी मृत्यु उसी दिन लिखी हुई थी जिस दिन आत्मा के सन्देश में बताई गई थी।

एक और घटना लीजिये जो पादरी ट्वीडेल (Reod C. L. Tweedale) ने अपनी पुस्तक Man's Surviral after death में दी है और जो एस.पी.आर. की रिपोर्टों से ली गई है।

"एक किसान जिसका नाम 'मिकाईल कोन ले' था जो आई-ओवा नगर में रहता था, नौकरों के मकान में मरा हुवा पाया गया। उसके कपड़ों में गन्दगी लगी हुई थी। अप-मृत्यु का कारण जानने वाले अफ़सर ने आज्ञा दी कि लाश को नये कपड़े पहिनाये जावें और उसे उसके घर भेज दिया जाय। पुराने कपड़े एक कौने में फेंक दिये गये। जब लड़का अपने पिता की लाश को घर ले गया एक लड़की बेहोश होगई जब वह होश में आई तो बोली "पिताजी के पुराने कपड़े कहाँ हैं ? वह अभी सफेद कमीज़, काले कपड़े और साटन की स्लीपर पहिने हुवे मुझे दिखाई दिये थे और बोले थे कि घर से जाने के बाद उन्होंने बहुत से बिल अपनी ख़ाकी कमीज़ के अन्दर की तरफ़ सीये हुये थे और उन पर एक लाल कपड़ा लिपटा था, और रुपया अभी वहीं है।"

रिश्तेदारों ने इसे दिमाग़ की ख़राबी समझा किन्तु जब उस

लड़की ने हठ किया कि पुराने कपड़े मुर्दा घर से लाये जावें ताकि उसकी तसल्ली हो जाय, तो उसका भाई फिर मुर्दा घर गया और सब मुआमला बयान किया 'उस मरे हुवे व्यक्ति के कपड़ों का वर्णन ठीक था। घर पर किसी ने भी मुर्दा अवस्था के कपड़े नहीं देखे थे क्योंकि क़फ़न में उसका मुँह ही दिखाई दे रहा था। मुर्दा घर से जो कपड़े लाये गये उनमें खाकी कमीज़ में नीचे की ओर लाल कपड़े से बिलों का दत्था (Bund.e) सिला हुवा था।

लेखक ने इस घटना पर निम्नलिखित टिप्पणी की है:—'यहाँ हमें मालूम होता है कि प्रेतात्मा दो बातें बताता है जिनमें से एक का ज्ञान उसे जीवित अवस्था में नहीं था (जिस पोशाक में उसे दबाया गया) दूसरी बात का ज्ञान उसे था अर्थात् (अन्दर की जेब का और उसके अन्दर रुपये का) किन्तु उस लड़की को कुछ भी मालूम न था जिसने प्रेत को देखा 'इस प्रकार के मुआमले उच्च मन की कल्पनाओं का सर्वथा खण्डन करते हैं।

श्री डब्ल्यू०टी०स्टैड स्वयं लेखक थे और उन्होंने इस देन का अभ्यास १५ वर्ष तक किया। सन्देश जिनका नाम 'जूलियाँ की चिट्ठियाँ' हैं उस आत्मा के पृथक अस्तित्व का पर्याप्त प्रमाण देती हैं जिसने यह चिट्ठियाँ लिखवाई हैं यह बात उस भविष्य वाणियों से भी प्रकट है जो उस आत्मा ने की थीं और जो स्टैड साहिब कहते हैं अपूर्व सत्य निकलती हैं। यह बात कि लिखते २ क़लम बीच में गिर पड़ती है और कुछ देर के बाद जब चक्र फिर आरम्भ होता है तो वह वहीं से आरम्भ करती है जहाँ से कि छोड़ा

था, इससे एक पृथक व्यक्ति के अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण मिलता है जो किसी भी मनुष्य के ज्ञान से बाहर है।

कोयम्बतूर के आध्यात्मिक चिकित्सा केन्द्र के निम्नलिखित अनुभव बड़े महत्व के हैं जो एक सदस्य के हाथ से प्राप्त हुवे हैं। जिसके हाथ से श्री राम राम का जीवन चरित्र लिखा गया है जो उस संस्था के संरक्षक आत्मा गुरू हैं।

यह कहानी बराबर जारी रही, किन्तु प्रायः उसमें किसी न किसी कारण से अन्तर पड़ जाता था और कभी २ अधूरे वाक्य रह जाते थे जो अगले चक्र में पूरे किये जाते थे जो एक या दो सप्ताह बाद होते थे। लेखक को कोई थकावट नहीं मालूम होती थी जैसी कि ग्रन्थकर्ता को होती है जबकि वह एक कहानी को क्रमशः बनाता है। और लेखक की ओर से ज्ञात या अज्ञात में कोई भी परिश्रम नहीं हुवा और वह निस्सङ्कोच कह सकता है कि श्री राम राम के जीवन चरित्र का वह कर्ता नहीं है। लेखक को भी उस कहानी से उतना ही आनन्द प्राप्त हुवा जितना कि उन चक्र में बैठने वालों को जो चक्र में सहायक थे। यह कथानक हमारे आधुनिक मन के सामने उन घटनाओं को रखता है जो प्राचीनकाल में उत्तर भारत के एक नगर में घटी थी और उस समय बौद्ध धर्म का प्रभाव लोगों के मनों को प्राचीन संस्कृति से डाँवांडोल कर रहा था।

इस बात का और भी प्रमाण कि यह कथा अन्तर्मन की क्रिया का फल नहीं है यह है कि हमें मालूम हुवा है कि चक्र

में बैठने वालों की प्रकट इच्छा पर एक माध्यम (जिसने पहिले कभी ब्रुश नहीं चलाया था) राम राम द्वारा आवेशित होगया और उसने कैनवास पर राम राम का ठीक चित्र बना दिया जैसा कि वह २००० वर्ष से ज्यादा हुवे मनुष्याकृति में थे। यह चित्र उस बयान से मिलता है जो राम राम ने कहानी में अपने अङ्गों का किया है विशेष कर स्त्री की तरह की आकृति और बड़ी २ चमकती हुई आँखें। L. M, Bezett एल० एम० बेजट ने अपनी पुस्तक "Some thoughts-on Mediums" (माध्यमों पर कुछ विचार) में दोनों प्रकार की घटनाओं का बड़ा युक्ति-संगत वर्णन किया है—अर्थात् अन्तर्मन के सञ्चालन से होने वाली घटनाएँ तथा परलोक-गत आत्माओं के सन्देशों की वास्तविकता।

हमारे में कभी कभी ऐसी शक्ति होती है जो साधारण इन्द्रियों से परे रहती हैं। ऐसे ही समयों में हमारी उच्च आध्यात्मिक शक्ति के अभ्यास, और परलोक-गत आत्माओं से प्राप्त विचारों में भेद करना कठिन हो जाता है। यह ग्रन्थकर्ता लिखते हैं कि 'यह सम्भव है कि बहुत से आत्माओं द्वारा प्राप्त कहलाने वाले सन्देश माध्यम के अन्तर्मन की हद में आते हैं या पृथ्वी पर दूसरे जीवित पुरुषों के मनोभाव के सम्पर्क से पैदा हुवे सन्देश होते हैं। माध्यम से सम्बन्धित बहुत सी कठिनाइयां उन्हीं स्रोतों से होती हैं।" और तब ग्रन्थकर्ता लिखता है 'इन कठिनाइयों के और बहुत सी और कठिनाइयों के होते

हुवे भी कई दशाओं में परलोक-गत आत्माओं के मनों से सम्पर्क प्राप्त करना सम्भव है।

हमारा निष्कर्ष यह है कि सन्देशों को अन्तर्मन या मानसिक प्रभाव का एकमात्र फल बनाना हास्यास्पद है। यह आसानी से प्रकट हो जाता है कि बहुत से सन्देश परलोक-गत व्यक्तियों की क्रिया का फल होते हैं। निम्नलिखित आत्मा के सन्देश को लीजिये:—"हज़ारों मनुष्य विश्वास करते हैं कि एक आत्मा का सन्देश दूसरी आत्मा को केवल हमारे ही विचार हैं। यह सब ठीक है। परन्तु हमारे विचार बहुत ऊँची उन्नति की प्रति-क्रिया होने चाहियें और यह विचार जैसे कि आप उन्हें कहते हैं आध्यात्मिक वाणी का तरीका हैं। यह तुम्हारे ऊपर उतरते हैं, तुम उसे जानते हो, तुम्हारे पास शब्द नहीं हैं, तुम्हें उनका अस्तित्व अनुभव होता है।"

याद रखो जब शरीर नष्ट हो जाता है तो तुम आत्मा हो और इसलिये आत्मा शरीर के साथ सम्पर्क नहीं रख सकती वह आत्मा से सम्पर्क रख सकती है। यह असन्तोष जनक है, मैं जानता हूँ क्योंकि दशाएं विषम हैं। तुम्हें आत्मा का सन्देश शरीर की घणता के द्वारा सुनना होता है, किन्तु यह बिल्कुल सम्भव है।

यह ग़लत राय है कि अन्तर्मन के ज्ञान के द्वारा यह घटना पैदा की जा सकती है। Leadbeater (लैडबीटर) ने अपनी पुस्तक "अदृश्य सहायक" (Invisible Helpers) में ऐसी सहायता की अनेक घटनाएं दी हैं जो अदृश्य आत्माओं ने

शरीरधारी या अशरीरी आत्माओं को दी हैं। अपने विषय को समझाने के लिये हम १-२ घटनाएँ वर्णन करेंगे।

'लंडन' के हाल्वार्न मुहल्ले के पास एक गली में आग लगी जिस में २ मकान सर्वथा नष्ट हो गये। एक बच्चे के सिवाय घरों के सब निवासी बचा लिये गये। बच्चा मकान की मालिकन के पास उसकी माता छोड़ गई थी और इस दुर्घटना से जो घबराहट पैदा हुई उस में उसे बिल्कुल भुला दिया गया। जब तमाम मकान अग्नि की लपटों में घिर चुका था और घर में रहने वाले बचा लिये गये थे तब याद आया कि बच्चा जलते हुवे घर में पीछे रह गया है। आग बुझाने वाले आदमी ने जलते हुए मकान में से उसे बचाने के लिये अपनी जान की बाजी लगाई। वह कमरे में घुसा जहां बच्चा एक कोने में पड़ा था। उसने देखा कि सारे घर में अग्नि की ज्वाला पहुँच चुकी है सिवाय कोने के जहाँ पर बच्चा अछूता पड़ा है। यद्यपि चारों ओर बढ़ती हुई अग्नि से डरा हुवा है और वह चकित रह गया उसने एक फ़रिश्ते को देखा जो सुन्दर श्वेत वर्ण का है और चाँदी के रंग का है वह खाट पर झुका हुवा है और खिड़की के शीशे को ठंडा कर रहा है, बच्चा बच गया। किन्तु अभी कहानी का अन्त नहीं हुवा। जिस दिन आग लगी थी उसी दिन लड़के की माता को भविष्य वाणी हुई कि उसके बच्चे को बड़ा खतरा है। उसके मन पर ऐसा भय छागया कि वह परमात्मा से बड़ी व्यग्रता से प्रार्थना करने लगी कि उसके बच्चे को आने वाली आपत्ति से बचावें। सच्ची प्रार्थना कभी

व्यर्थ नहीं जाती। लैड बीटर (Leadbeater) साहिब इस घटना को इस प्रकार समझाते हैं कि 'उस के अत्यन्त प्रेम के प्रवाह से एक शक्ति उत्पन्न हुई जिसे हमारे एक अदृश्य सहायक ने उसके बच्चे को भयानक मृत्यु के मुख से बचाने के लिये काम में लिया।

कभीर बच्चे दिव्य दृष्टि द्वारा देख सकते हैं क्योंकि उनके हृदय पवित्र होते हैं। लैड बीटर (Leadbeater) नीचे की घटना देते हैं जो लंदन के प्रधान पादरी ने बयान की है।

'पाँच लड़कियों का एक पिता बीमार हुआ और वह पलंग पर लेट गया। सब से छोटी लड़की चिल्लाई कि "दो फरिश्ते सीढ़ियों पर उतर चढ़ रहे हैं" किसी को कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। वह लड़की फिर थोड़ी देर बाद पुकारी "आवो! फरिश्ते अब सीढ़ियों से नीचे उतर रहे हैं और पिता जी उनके बीच में चल रहे हैं।" और लड़कियाँ अपने कमरों में से बाहर आईं और पाँचों ने एक ही चीज़ देखी। जब वह अपने पिता के पलंग के पास गईं तो उसे मरा हुआ पाया।

पुस्तक परीक्षा! पुस्तक परीक्षा, अखबारों की परीक्षा जो हमें आत्माओं के सन्देशों से मिलती है वह सूक्ष्म देहधारी आत्माओं के अस्तित्व को प्रमाणित करती है। 'सर चार्लस ड्रेटन थामस' की पुस्तक 'मनुष्य का मरणोत्तर जीवन' के कुछ नये प्रमाण में जो १६२२ में प्रकाशित हुई थी, किताबों और समाचार पत्रों को परीक्षा के बहुत प्रमाण हैं। इस छोटी पुस्तक में उनमें से किसी

का लिखना सम्भव नहीं है किन्तु निम्नलिखित कहानी "मैडम बैलवटस्की (Balvatsky) नामक पुस्तक से पादरी लैडबीटर ने अपनी पुस्तक "मृत्यु के दूसरी ओर" के पृष्ठ ६४७ और ६४८ में दी है जो उच्च आत्माओं के अस्तित्व का आकाट्य प्रमाण है।

१८८५ ई० की शरद ऋतु में 'वाट मीस्टर' की बेगम साहिबा (Comtess) ने अपने स्वीडन के घर को छोड़कर इटली में अपने मित्रों के साथ जाड़ा बिताने की तय्यारी की। जब वह अपना सामान बाँध रही थीं; अचानक उन्होंने एक आवाज़ को कहते सुना 'यह किताब लेती जावो यात्रा में बड़ी काम आवेगी'। बेगम को दिव्य दर्शन तथा श्रवण शक्ति प्राप्त थी। वह उस किताब को ले जाना नहीं चाहती थीं क्योंकि वह एक मित्र द्वारा तैरोत (Tarot) और कबाला(Kabbalah) के कुछ अंशों पर लिखे हुवे दस्ती नोट थे, जो यात्रा में कुछ भी दिलचस्पी की चीज़ नहीं हो सकते थे। किन्तु उस आज्ञा के पालन रूप से उसने वह पुस्तक लेली और यात्रा के किसी ट्रंक की तह में उसे रख लिया।

इटली जाने के बजाय वह 'बर्ज बर्ग' चली गई जहाँ 'मेडम ब्लैवटस्की 'Madum Blavatsky ठहरी हुई थीं। जैसे ही उनकी आंखें मिलीं मेडमब्लैवस्टकी एक दम बोल उठीं। "मेरे गुरुदेव कहते हैं कि तुम्हारे पास एक किताब है जिसकी मुझे जरूरत है 'बेगम को याद नहीं आया कि उसके पास कोई ऐसी किताब है और अपने घर पर अदृश्य व्यक्ति की आवाज़ की बात वह बिल्कुल भूल गई थी। उसे कहा गया कि फिर सोचो। बल्कि मैडम 'ब्ले-

वटस्की' को यक़ीन था कि उन के पास तैरोट और कवाला पर किताब है, क्यों कि गुरुदेव ने कहा था कि वह किताब वह स्वीडन से लावेगी। बिजली की तरह उसको घर की घटना का स्मरण हुवा वह जल्दी अपने कमरे में गई। अपनी ट्रंक की चीजों को टटोला और वह किताब ले आई। वह खाना खाने के कमरे में वापिस आई जहाँ उन्होंने चाय पीनी थी और वह किताब 'मैडम ब्लैवटस्की' को देने लगी उन्होंने उसे रोकते हुवे कहा कि पहिले किताब को खोलो और देखो (उन्होंने एक वाक्य उद्धृत किया) कि यह वाक्य १०वें पृष्ठ पर छठी पंक्ति के बाद है क्या ? वह बड़ी चकित हुई जब उस ने 'मैडमब्लैवटस्की' का बताया हुवा वाक्य किताब के उसी पृष्ठ पर पाया जैसा कि कहा गया था। जब बेगम ने पूछा कि आप को इस किताब की क्या आवश्यक्ता थी तो उन्होंने उत्तर दिया गुप्त सिद्धान्त (Secret Doctrine) के लिये।

नीचे लिखा वाक्य लैड बीटर साहिब की पुस्तक "मृत्यु की दूसरी ओर" से पृष्ठ ६३३ पर बहुत सी घटनाओं के कारण समझता है। यह इस अध्यायमें वर्णित हमारी सम्मति से मिलता है।

"पहिली बड़ी ग़लती जो बहुत से लोग करते हैं वह यह है कि वह समझते हैं, सब घटनाओं का एक ही कारण है। और इसलिये सब का कारण परलोक गत व्यक्ति हैं या किसी मानसिक भावना के कारण ऐसा होता है। पारलौकिक घटनाओं के अनेक कारण हैं। कुछ माध्यम के मानसिक विचारों के कारण से या बैठने वालों के मानसिक विचारों के कारण से होता है, और

दूसरी पारलौकिक व्यक्तियों के कारण से या कुछ विचार चित्रों के कारण से जो कभी मौजूद होने से आकर्षित हो जाते हैं। या पास की वस्तुओं के प्रभाव से घटित होती हैं।"

अध्याय १२

भविष्य वाणियाँ

क्या आत्माएँ भविष्य बता सकती हैं ? यह प्रश्न स्वाभाविक है। कुछ वर्षों पूर्व जब मैं यूनिवर्सिटी से निकला हुवा, उमंगों से भरा हुवा, नवयुवक था, मैंने एक रहस्यात्मक मनुष्य का विज्ञापन पढ़ा जो लिखित प्रश्नों को पढ़े बिना उनका उत्तर दे सकता था। मैंने कागज़ के एक टुकड़े पर ५ प्रश्न लिखकर उसे एक लिफाफे में बन्द कर दिया। उस लिफ़ाफे को सुरक्षित अपने कोटकी भीतरी जेब में रख मैं उस रहस्यात्मक मनुष्य के दफ़्तर में गया। वहाँ वह बंगाली युवक, ज्ञानका बहुत आडम्बर किये बिना बैठा था। उस शून्य कमरे में केवल एक मेज़ और दो कुर्सियां थीं जैसे ही आपने मुझे देखा अपने सामने बैठने के लिये कहा। कुछ मिनटों की निस्तब्धता के पश्चात् उसने मुझसे बाहर जाने और २-३ मिनट के उपरान्त पुकारने पर लौट आने के लिये कहा। मेरी अनुपस्थिति में शीघ्रता से मेरे प्रश्न और उनका उत्तर लिखा— मैं यह देख कर दङ्ग रह गया कि वे प्रश्न मेरे लिखे हुवे प्रश्नों से अक्षरशः मिलते थे। मैंने उन्हें अपने लिखे हुवे प्रश्नों से

मिला कर देखा। और उनमें से मेरा एक प्रश्न था, कि क्या मेरे अन्दर किसी प्रकार की शक्ति है ? जिसका उत्तर था कि तुम्हारे अन्दर आध्यात्मिक शक्ति है।' इस पर मैं घृणा पूर्वक उस पर हँसा कि मैं इस "आध्यात्मिक" शब्द का अर्थ भी नहीं जानता हूँ और यह मनुष्य मुझे मूर्ख बना रहा है। परन्तु कुछ वर्षोंपरान्त उपरोक्त भविष्यवाणी सत्य हुई ।

तब उसने मुझे बतलाया कि वह केवल एक माध्यम है और जो कुछ आत्माओं ने पढ़ा और वर्णन किया उसे लिखने के अतिरिक्त और उसने कुछ नहीं किया है । उस समय मेरे लिये यह व्याख्या अस्पष्ट थी परन्तु अब मैं जानता हूँ कि उपरोक्त व्याख्या वैज्ञानिक है ।

आत्माएँ भविष्य बतलाती हैं परन्तु ईश्वरकी आज्ञा प्राप्त होने पर ही वे ऐसा करती हैं। जैसा कि नियम है, केवल उच्च आत्माएँ ही सत्य भविष्य वाणियाँ कर सकती हैं । साधारणतः वे इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना नहीं चाहती हैं, ऐसा ही होना भी चाहिये। यह ईश्वर की इच्छा नहीं है कि मनुष्य सब प्रकार की भावी घटनाओं से परिचित हों केवल कुछ दशाओं को छोड़कर। निम्न लिखित सन्देश महत्वपूर्ण है।

"आत्माएँ सब कुछ नहीं जानती हैं, और ऐसा भी नहीं है कि वे भूल न कर सकें, और अगर वे ऐसी होतीं तब भी उन्हें मनुष्य से उन सभी बातों को कहने की आज्ञा नहीं दी जाती जिन्हें वह जानना चाहता है। अगर उस पर कोई बात

प्रगट करनी होगी तो वह पहले ही प्रकट करदी जायेंगी, **अगर ईश्वर उसे उचित समझेगा तो** (रेखांकित वाक्य हमारा है) इस कारण भावी घटनाओं को सूचित करने वाले सभी दृश्य और वचन सगर्भित होते हैं; परन्तु ईश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य सब कुछ पहले से जान जाय। वह किस प्रकार जीता और अपना सब कार्य कर सकता, यदि उसके सर पर सदा बम्, अचानक दुर्घटनाएँ या मृत्यु मंडराती होतीं ?"

यह अवश्य स्मरण रखना चाहिये कि केवल उच्च कोटि की आत्माएँ ही सत्य भविष्य वाणियाँ कर सकती हैं क्योंकि उन के लिये हमारा भविष्य जानना वर्तमान जानने के ही सदृश है; परन्तु उनकी अपेक्षा निम्न कोटि की आत्माएँ ही भविष्य बतलाने के लिये अधिक उत्सुक रहती हैं, और उन की भविष्य-वाणी असत्य होती हैं। यही वास्तव में उनकी निम्न कोटि के होने का लक्षण भी है। मुझे स्मरण है कि किस प्रकार मैं एक निम्न कोटि की सम्बन्धी आत्मा द्वारा मूर्ख बनाया गया था जिस की भविष्यवाणियाँ पद २ पर असत्य उतरी। जब मैं अपने पथ प्रदर्शक आत्मा के सम्पर्क में आया तभी इन निम्न कोटि की अपनी मित्र या सम्बन्धी आत्माओं से वार्तालप करने की उपरोक्त हानि मुझ पर प्रकट हुई। और मैं इन से दूर रहने के लिये सावधान किया गया।

डब्ल्यू० टी० स्टेड (W.T. Stead) (जो स्वयं, लेखक माध्यम थे) ने अपनी पुस्तक 'जुलियाँ के पत्र' के आरंभ में एक कहानी वर्णन

की है जो दो कारणों से महत्व पूर्ण है। एक तो यह 'टेलीपैथी (telepatby) की इस थ्योरी को काटती है, कि यही सभी मानसिक आध्यात्मिक दृश्यों का कारण है। दूसरे यह सावधान करने का बहुत सुन्दर उदाहरण है।

मि०स्टैड कहते हैं कि "उन्होंने एक बार एक ऐसी स्त्री को नौकर रक्खा जो बहुत बुद्धिमान् परन्तु अस्वस्थ शरीर की और विचित्र स्वभाव की थी। उसके उस अनस्थिर विचित्र स्वभाव से तंग आकर के उसे नौकरी से हटाने की सोच रहे थे कि उन्हें जुलिया की आत्मा द्वारा १५ या १६ जनवरी को संदेश मिला।

"ई०एम०के साथ बहुत धैर्य रक्खो, वह यह वर्ष समाप्त होने के पूर्व ही हमारी ओर आ रही है।"

यही संदेश फ़रवरी, मार्च, अप्रैल, मई और जून में दुहराया गया। जुलाई में ई० एम० किसी वस्तु के निगल जाने से बहुत बीमार पड़ी, जो उसकी आँतों में अटक गई थी। यह सोचागया कि अब वह अच्छी नहीं हो सकेगी।

स्टेड ने जुलिया से पूछा "मैं समझता हूँ कि यही वह है जिसको पहले से देखकर तुमने उसके मृत्यु की भविष्यवाणी की थी।" परन्तु उत्तर मिला, 'नहीं, वह इससे अच्छी हो जायेगी परन्तु वर्ष पूरा होने के पूर्व ही मर जायगी।'

प्रत्येक मनुष्य को यह देखकर आश्चर्य हुवा कि ई०एम० अच्छी हो कर अपने कार्यों में फिर लग गई। वही सूचना उस की मृत्यु की पूर्व घोषणा, अगस्त, सितम्बर, अक्टबर और नवम्बर

में दुहराई गई। दिसम्बर में वह इन्फ्ल्यूंजा से फिर बीमार पड़ी। फिर स्टेड ने पूछा, "तो यह वही है, जिसको तुमने पहले से देखा है ?" परन्तु फिर उत्तर आया, नहीं। वह यहाँ अपनी स्वाभाविक मृत्यु से नहीं आवेगी परन्तु वर्ष समाप्त होने के पूर्व ही वह यहाँ आवेगी।" उसकी बीमारी बढ़ती गई परन्तु वर्ष समाप्त हो जाने पर भी वह जीवित रहीं। स्टेड ने कहा–"ई० एम० अब भी जीवित है। देखो, तुम भूल कर रही थीं।' इस पर जुलिया ने उत्तर दिया, मुझसे कुछ दिनों की भूल हो सकती है परन्तु जो कुछ मैंने कहा है, सत्य है।

स्टेड कहते हैं कि १० जववरी को मुझे निम्नलिखित संदेश मिला, "तुम कल ई० एम० को देखने जा रहे हो। उसे विदाई देना, सब आवश्यक प्रबन्ध कर लेना अब फिर तुम उसे इस पृथ्वी पर नहीं देख सकोगे।"

स्टेड उसे देखने गये। वह ज्वर ग्रस्त थी और खाँस रही थी अच्छे उपचार के लिये वह किसी सेवा-गृह (Nursing home) में ले जाई जाने वाली थी। उसकी मानसिक स्थिति उत्तेजित थी और वह अपने अच्छे हो जाने पर किये जाने वाले कार्य के सम्बन्ध में बातें करती थी। स्टैड कहते हैं कि उन्हें जुलिया की भविष्यवाणी सत्य होने में बड़ा ही सन्देह था क्योंकि ई० एम० में तत्काल मृत्यु के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे।

दो दिनों के पश्चात् उन्हें यह तार मिला कि ई० एम०

ने मूर्छा की दशा में अपने को चौ मंजिले पर की खिड़की से गिरा दिया और गली में गिरकर मर गई। उसकी अस्वाभाविक मृत्यु के विषय में कितनी सत्य भविष्यवाणी की गई थी।

यह कहा जाता है कि उच्च लोगों की आत्माएं इस पृथ्वी के मानवों के सुधार के लिये बराबर प्रबन्ध किया करती हैं और उपाय सोचा करती हैं। जब वे उन उपायों को कार्यान्वित करने के लिये भौतिक जगत्के मनुष्योंसे वार्तालाप करना चाहती हैं तो वे किसी माध्यम या व्यक्ति विशेष को चुनती हैं। इस प्रकार की हुई भविष्यवाणी बड़ी ही लाभ-प्रद होती है।

जब किसी नगर पर या उस के किसी भाग के मनुष्यों पर भयानक आपत्ति आने वाली होती है। उदाहरणार्थ अकाल पड़ना, अग्नि लगना, प्लेग या युद्ध; तो उच्च कोटि की आत्माएँ कष्टों को कम करने के लिये अपने बेतार के समाचार भेजती हैं और पृथ्वी पर के वे मनुष्य जो सदैव दूसरों के कल्याण की बात सोचा करते हैं, उनसे मानसिक भाव ग्रहण करते हैं। इस प्रकार की पूर्व सूचनाएँ उनको उस आपद्काल में उपस्थित हो अपने दुखी भाइयों की सेवा करने का कारण होती हैं।

मैं एक मित्र को जानता हूँ जो इस प्रकार से एक दुर्घटना की सूचना पाकर उस खतरे के स्थान को दौड़ा। यह एक विस्मयकारी बात है कि किस प्रकार घटनाओं के संयोग से वह उस स्थान पर तात्कालिक सहायता के लिये पहुँच जाता है।

यदि हम केवल यह जानलें कि किस प्रकार हमारी रक्षक एवं

पथ-प्रदर्शक आत्माएँ सदैव हमारी रक्षा और सहायता करने के लिये प्रयत्नशील रहती हैं और यह भी जानलें कि उत्कट अभिलाषा द्वारा हमारे उनके बीच का पर्दा (अन्तर) दूर किया जा सकता है, तो अन्तर ज्ञान (Intuition) हमारे लिये तर्क की अपेक्षा अधिक उपयोगी और रक्षक हो सकता है। "जब कोई मनुष्य लगातार अभ्यास द्वारा अपने आध्यात्मिक अनुभव (अन्तरात्मा की आज्ञा को इतना तीव्र कर लेता है कि वह अपने अदृश्य सहायकों द्वारा सजीव संकेत ज्ञान प्राप्त कर सके, तो उसे कभी परामर्श दाताओं का अभाव नहीं रह जाता है (A guide to medimsbip) अर्थात् माध्यम बनने के लिये पथ-प्रदर्शक नामक पुस्तक पृष्ठ ३०२)

"विश्वास भी निछावर,
उस दिव्य गान पर हो।
है गूंजती कभी जो
अन्तर में देवता की।

अध्याय १३

स्वास्थ्य-प्रद चक्र अर्थात् Spiritual Healing Centre नियम

अरे ! जब मैंने अपने को देखा तो मैंने जाना कि मैं वह नहीं हूँ जो अपने को समझता था क्योंकि देखो ! इस मेरे एक शरीर

में अनेकों शरीर हैं और उनमें से एक ईश्वर का है।

इसका तात्पर्य यह है कि ज्ञान हो जाने पर अपनी व्यक्तिगत सत्ता का अन्त हो जाता है और हमें विश्व के समस्त प्राणी अपने में ईश्वर का अंश होने के कारण दिखाई पड़ने लगते हैं।

मनुष्य का सब से अधिक परोपकारी कार्य है आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा स्वस्थ्यता-प्रदान करना। जब हमारे शरीर के परमाणु या प्रकोष्ठ वायु प्रकोप से अनुचित और अस्वस्थ ढंग से कार्य करने लगते हैं तभी हम बीमार पड़ जाते हैं। उस समय पृथ्वी पर के अर्थात् साधारण डाक्टर अर्थात् आत्माएँ परमाणुओं के उन अप्राकृतिक कार्यों को ही रोक देते हैं जो शारीरिक बीमारी के वास्तविक कारण हैं।

इसी पुस्तक के पिछले अध्याय में हमने वर्णन किया है कि मनुष्य इस स्थूल शरीर के अतिरिक्त अन्य कई सूक्ष्म शरीरों का बना है। पहले अर्थात् स्थूल शरीर की अपेक्षा ये सूक्ष्म शरीर विशेष महत्व पूर्ण है और स्वास्थ्य-प्रद चक्र के लिये इसको भली भाँति समझ लेना आवश्यक है। हमारा स्थूल शरीर प्रायः आत्मा का निवास स्थान या मन्दिर कहा जाता है वास्तव में यह भौतिक शरीर ईश्वर की एक विचित्र रचना है। जरा इसकी रचना पर ध्यान दो। एक लेखक कहता है 'यदि मनुष्य द्वारा निर्मित सभी इञ्जन और सभी वैज्ञानिक यंत्र एकत्र कर दिये जाँय और उसकी विलक्षण बुद्धि द्वारा उन सबको एक में समन्वित कर दिया जाय तो भी मनुष्य रचित वह सर्वोत्तम यंत्र प्रभु निर्मित इस मानव

शरीर की तुलना में इतनाही तुच्छ होगा जितना कि जाज्वल्यमान सूर्य के सन्मुख एक दीपक।"

आओ! हम इस आत्मा के निवास स्थान विचित्र अद्भुत मानव शरीर के कुछ भागों और कार्यों का विश्लेषण करें। यह शरीर २०० हड्डियों और ५०० पट्ठों से मिलकर बना है। हृदय जो ६ इञ्च लम्बा और ४ इञ्च चौड़ा है प्रति मिनिट अनेकों बार धड़कता है। यह एक मिनिट में 2½ औंस, १ घंटे में ६५६ पौण्ड और एक दिन में 7¾ टन रक्त बाहर फैंकता है। कहते हैं कि केवल ३ मिनिटों में ही शरीर का सारा रक्त हृदय में चक्कर लगा जाता है। अब फेफड़ों के प्रकोष्ठों की ओर ध्यान दीजिये। इन फेफड़ों का धरातल औसतन् २,००,००० वर्ग इञ्चों से भी अधिक है अर्थात् ४०फ़ीट लम्बे और इतने ही चौड़े कमरे की फ़र्श के बराबर। धमनियों और शिराओं को मिलाकर लगभग १०,००,००,००० के नाड़ियाँ हैं। शरीर की खाल ⅛ इंच से लेकर ¼ इंच तक मोटी और तीन तहों की है। प्रत्येक वर्ग इञ्च खाल में ३५०० छिद्र हैं जिनसे पसीना बाहर निकलता है। अगर पसीने की इन सब नालियों को एक लाइन में रखा जाय तो वे २००१६६ फ़ीट या ४० मील से भी अधिक लंबी होंगी। नेत्रों के स्नायुयों की संख्या लगभग ३००,०००,००० है और वह भूरा पदार्थ जिस से मस्तिष्क बना है कम से कम ६००,०००,००० प्रकोष्ठों का बना है। यह शरीर आक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन, नाइट्रोजन, फासफ़ोरस, कैल्शियम, सल्फ़र, क्लोराइन, सोडियम, आयरन, पुटैशियम,

मग्नेशियम और सिलिका(Cilica) से बना है। परन्तु यह सारा शरीर केवल मस्तिष्क द्वारा कार्य करता है। यह बड़ा ही विचित्र यन्त्र है, परन्तु सारा शरीर एक व्यर्थ पदार्थ में बदल जाता है जब सीधे आघात द्वारा मस्तिष्क व्यर्थ हो जाता है। मस्तिष्क एक पदार्थ है। मस्तिष्क के चोट खाने या निष्क्रिय हो जाने पर शरीर के सभी साधारण कार्य क्यों रुक जाते हैं ? इस का कारण यह है कि उस पदार्थ का (जिससे मस्तिष्क बनता है) सम्बन्ध किसी और से है। मस्तिष्क वास्तव में उच्चतम शरीर अर्थात् अहं-मनुष्य का जीव—का घर है। अथवा यह कहना अधिक उचित होगा कि यह स्थूल शरीर सूक्ष्म अदृश्य शरीर की सत्ता जताने का एक साधन मात्र है।

बीमारियाँ कैसे होती हैं ? जब कभी मानव शरीर का कोई भाग अपनी स्वाभाविक क्रिया बन्द कर देता है। तभी अस्वस्थता उत्पन्न हो जाती है। क्रियाओं की इस अनियमता का कारण या तो किसी प्रकार की शारीरिक दुर्घटना या उससे सम्बन्धित अन्य घटना होती है। जब यह कारण होता है तो डाक्टर उसका निराकरण कर रोग दूर कर देते हैं। परन्तु इनके अतिरिक्त बहुतसे ऐसे रोग होते हैं जिनके कीटाणु या कारण इस स्थूल शरीर में गहरे घुसे रहते हैं। विचार सब से बड़ी शक्ति है फिर चाहे वह विचार अच्छे हों चाहे बुरे। धर्म विचारों के आधार पर निर्मित किये गये और हम विचारों का ही कुप्रभाव वर्तमान विनाशकारी युद्ध के रूप में देखते हैं, जो युद्ध मानवता को धूल में मिलाए दे

रहा है एवं त्रास और सर्वनाश की भयङ्कर आँधी की तरह चल रहा है। राजनैतिक जगत् में विचारों का यह प्रभाव है। हिटलर की 'हमारी कथा (Meinkampf)ने संसारकी शान्ति को किसी भी कहे गये या विचारे गये शब्दों की अपेक्षा अधिक हानि पहुँचाई है।

मनुष्य के मानसिक और सूक्ष्म शरीर के रोगों को भौतिक डाक्टर नहीं दूर कर सकते हैं। बुरा और चिड़चिड़ा फल लाने वाला शब्द विचार सारे मानसिक शरीर में अस्वस्थता उत्पन्न कर देता है। यह वायुमण्डल में व्याप्त हो सूक्ष्म शरीर को निर्बल कर देता है और प्राण जीवनी-शक्ति को स्थूल शरीर के पोषण करने के लिये उसमें घुसने से रोक देता है। मानसिक रोगों की उत्पत्ति के दो कारण होते हैं। प्रथम तो विकारों के समूह क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, अवहेलना, आदि की लहरें मानसिक जगत् में हलचल मचा उसे अशान्त कर देती हैं,और यही अशान्ति अपना कुप्रभाव स्थूल शरीर पर डालती है। परन्तु यदि कोई मनुष्य पवित्र जीवन और उच्च पवित्र मानसिक विचारों के होते हुवे भी बीमार है तो उसकी बीमारी का कारण कर्मफल समझना चाहिये और पिछले जन्म के संस्कारों या कर्मों के अनुसार होने वाले कष्ट आत्मा को पूर्णता प्रदान करते हैं।

भारतीयों द्वारा प्रतिपादित 'योग' का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। योग की अनेकों क्रियाएँ हैं जिन का सब का उद्देश्य अदृश्य सूक्ष्म शरीर की उन्नति कर उसे बलवान बनाना है। यहाँ

पर हम उन क्रियाओं का विस्तृत वर्णन नहीं दे सकेंगे। पाठकों को हिमालय-योग सम्बन्धी साहित्य(Himalayan Yoga Serise) और बहुत से दूसरे ग्रन्थ इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये देखने चाहियें।

आध्यात्मिक चिकित्सा का स्वरूप और नियम

ऊपर मनुष्य के स्थूल शरीर की बीमारियों का कारण बताया गया है। ये रोग शारीरिक, मानसिक कर्मानुसार अनेकों प्रकार के होते हैं। अब आध्यात्मिक चिकित्सा पर विचार करना है। इसी सम्बन्ध में हम दक्षिण भारत के कोयम्बटूर नामक स्थान के आध्यात्मिक चिकित्सा केन्द्र के नियमों का अनुसरण करेंगे। वास्तव में हमें संसार के प्रत्येक भागों में ऐसे कितने ही केन्द्रों की आवश्यक्ता है जो मनुष्य के कष्टों को कम करने के अतिरिक्त परलोक-वाद का संदेश भी घर २ पहुँचाएँगे।

ऐसे केन्द्रों की स्थापना के लिये दो बातों की आवश्यक्ता होती है। एक तो उच्च कोटि की उन आत्माओं के आशीर्वाद की जो इन स्वास्थ्यवर्धक शक्तियों को हम तक पहुँचाने में समर्थ हैं, दूसरे जो माध्यम या मनुष्य इस चिकित्सा का प्रचार करना चाहते हों उनके अन्दर वास्तविक आकर्षण शक्ति हो क्यों कि चिकित्सा कार्य आत्माएँ ऐसे मनुष्यों के द्वारा करती हैं जिन्होंने अपनी स्वास्थ्य-वर्द्धिनी शक्तियों को उन्नत कर लिया हो। ये शक्तियाँ मनुष्य में बीज रूप से निहित रहती हैं और हमारी सच्ची प्रार्थना, भक्ति,

प्रेम, और पवित्र जीवन द्वारा जागृत की जाती है। दूसरों के दुखों और कष्टों का वास्तविक ज्ञान—और सहानुभूति ही मनुष्य को इन गुप्त शक्तियों को जागृत करने के लिये प्रेरित करते हैं। प्रार्थना और ध्यान इस आध्यात्मिक चिकित्सा के लिये अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक हैं। हमारी प्रार्थनाएँ आत्माओं की प्रार्थना से मिलकर इस कार्य में सहायक होती हैं। वास्तव में स्वस्थ बनाने वाली शक्ति प्रत्येक नरनारी में निहित होती है, परन्तु जो स्वयं स्वस्थ हैं, संसारी पदार्थों और विषयों के प्रति उदासीन हैं और भक्त एवं ईश्वर की प्रार्थना करने वाले हैं वही अपनी इस शक्ति की वृद्धि करने में सफल होते हैं। अत्यन्त पवित्र जीवन, दुखी संतापित मानव जगत् के कल्याण की तीव्र इच्छा, सच्चे अर्थ में निस्स्वार्थ-भाव और इन सबसे अधिक, सृष्टि के कर्त्ता, जगदाधार के प्रति असीम प्रेम ही मनुष्य की इस स्वास्थ्य वर्द्धिनी शक्ति की उत्पत्ति और वृद्धि करते हैं। प्रार्थना ईश्वर और उसकी सृष्टि का अपरिमित अदृश्य सौन्दर्य हमारे सन्मुख रख देती है। विशिष्ट शब्दों का दुहराना अर्थात् जप और "ओ३म्" 'हुमुंज," 'अल्लाह' "ईश्वर" (God). 'क्राइस्ट' अर्थात 'ईसामसीह,' 'जोरास्टर,' 'बुद्ध' मन को उच्च आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचा देता है।

वेदी या यज्ञ कुण्ड, झण्डे के इन शब्दों के साथ "ईश्वर ही स्वास्थ्य, प्रकाश, बुद्धिमता सब का केन्द्र स्थल है।" इस चिकित्सा मन्दिर का मुख्य भाग होता है। इसको पैगम्बरों, संतों और

स्वस्थता प्रदान करने वाली महान् विभूतियों जैसे ईसामसीह, ज़ोरोस्टर, बुद्ध, भगवान् कृष्ण आदि के चित्रों से सुशोभित करना चाहिये। केवल प्रार्थना द्वारा ही हम उस दिव्य शक्ति से जीवनी शक्ति प्राप्त करते हैं। और इसके लिये अत्यन्त शांतिमय, पवित्र वातावरण की आवश्यकता होती है। फूल और सुगंधी का प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वाद्य और गायन, जब तक कि किसी विशेष रोग की चिकित्सा के लिये आवश्यक न हों, नहीं होना चाहिये कारण यह चिकित्सकों को अशांत कर देता है।

उस महान् शक्ति का इन शब्दों से आह्वान करना चाहिये, हे प्रभु! आप प्रेम और दया के खानि हो! आप हमें चिकित्सा करने की शक्ति और उस शक्ति के उपयोग की बुद्धि प्रदान कीजिये।' यह प्रार्थना लगभग १५ मिनट करनी चाहिये और तब साधारण प्रार्थना होनी चाहिये। जब चिकित्सक अपने हाथों में एक प्रकार की लहर या सनसनाहट का अनुभव करे तब रोगी के पास देना आरम्भ करे। इन पासों का यह प्रभाव होता है कि उस महान् एक मात्र केन्द्र द्वारा आकर्षित शक्ति रोगियों को शरीर में प्रवेश करती है। रोगी अपने में शक्ति का अनुभव करता है। रोगों का सामना करने की शक्ति बढ़ती है और शक्ति के पुनर्जीवन के साथ बीमारी दूर होती है। पास धीरे धीरे करना चाहिये जिससे शरीर में शक्ति पूर्णतः और स्थायी रूप से प्रवेश कर सके।

यदि कारबंकल या कैंसर जैसे कष्ट-प्रद बुरे रोगों का रोगी हो तो 'शोषक पासों' का प्रयोग करना चाहिये अर्थात् चिकित्सक पहले अपने हाथों को झुकी हुई दशा में रोगी पर से लाता है। पहले रोग की शक्ति नष्ट कर तब शक्ति बढ़ाने के लिये साधारण पास देने चाहियें।

कभी २ रोगी के अनुपस्थित रहने पर भी चिकित्सा की जाती है। इसके लिये साधारण सुगंधित पुष्प, शुद्ध जल, गेहूँ, चावल, दाल जैसे अन्न, मिठाई, शहद, गीली मिट्टी, राख, तेल और बालू आदि वस्तुएँ शक्ति को प्रवेश करने के लिये वेदी के निकट रक्खी जाती हैं और पूर्ण शक्ति संचार करने के पश्चात् इन वस्तुओं को रोगी के पास भेज दिया जाता है। दिव्य शक्ति द्वारा प्रवाहित स्वस्थ किरणें इन वस्तुओं में निहित हो जाती हैं जिनका प्रभाव एक सप्ताह तक रहता है। इस विषय में सबसे मुख्य बात यह है कि चिकित्सा तब तक अपूर्ण रहती है जब तक ये वस्तुएँ अत्यन्त प्रार्थना भक्ति पूर्वक न भेजी जाएँ और रोगी इन वस्तुओं को विश्वास श्रद्धा पूर्वक न काम में लावे। 'कोयटूम्बर चिकित्सा केन्द्र' कितने ही ऐसे असाध्य रोगों की सफलता पूर्वक चिकित्सा कर चुका है।

यह बात स्पष्ट कर देनी आवश्यक है कि आध्यात्मिक चिकित्सा केवल विश्वास पर ही नहीं अवलम्बित होती है। यह सत्य है कि प्रार्थना इसका मुख्य अस्त्र है। परन्तु यह केवल वह साधन है जिससे आध्यात्मिक डाक्टर स्वास्थ्य-वर्द्धक किरणें

आकर्षित कर उन्हें रोगी के शरीर में प्रवेश करते हैं। निम्न-लिखित सन्देश एक आत्मा द्वारा प्राप्त और "आध्यात्मिक चिकित्सा' (Spirit Healing) नामक पुस्तक के पृष्ठ ४४ में वर्णित इस सम्बन्ध में महत्व पूर्ण है:—

"पथप्रदर्शक आत्माएँ कष्टों और रोगों को ऐसे व्यक्तियों की सहायता से दूर करती हैं जो श्रद्धापूर्वक अपने को इस सेवा के लिये अर्पित करते। सभी अच्छी और उच्च आत्माएँ चिकित्सा कर सकती हैं उनका इस भौतिक जीवन में डाक्टर होना ही आवश्यक नहीं है आध्यात्मिक डाक्टर द्वारा स्वास्थ्य वर्द्धक किरणें शरीर में प्रवेश करा कर आध्यात्मिक चिकित्सा की जाती है यह विशेष रूप से आध्यात्मिक और मानसिक चिकित्सा है और शारीरिक स्वास्थ्य उचित समय पर प्राप्त होता है।

ये किरणें वायुमंडल में व्याप्त रहती हैं और उनको केन्द्रित या एकत्र करने का साधन प्रार्थना है।

पारसियों की पुस्तक (Aridibehest Yasht) के अनुसार ५ प्रकार के चिकित्सक होते हैं। परन्तु उनमें से मुख्य वह चिकित्सक माना जाता है जो शल्य विद्या या औषधि द्वारा रोगों का निवारण न कर मंत्रों द्वारा करता है।

आध्यात्मिक चिकित्सा (Spiritul Healing) नामक पुस्तक के पृष्ठ १ में लहरों (कंपन) पर एक महत्व पूर्ण संदर्भ है, यह "सम्पूर्ण जगत् ही कम्पन से बना है और उसको उसी कम्पन में लाना ही वास्तविक रचना या सुलझाव है। उपस्थित या अनु-

पस्थित दोनों प्रकार के रोगियों की आध्यात्मिक चिकित्सा के लिये मेम्बरों की सम्मिलित प्रार्थना द्वारा रोगी के कम्पन को सम्पूर्ण सृष्टि के कम्पन तक लाकर उसमें मिला देना है, जो रोगी को कष्ट देने वाले उस विशेष रोग के लिये अनुपयुक्त न हो।"

'विचारों की लहरें देखी जा सकती हैं और वह उसी पदार्थ की होती हैं जिसकी सम्पूर्ण सृष्टि।' वर्तमान युग का यह सबसे अधिक आश्चर्य जनक अनुसंधान है। ११ अक्टूबर १६४१ के 'ब्लिज़ (Blitz) का निम्नलिखित संदर्भ महत्वपूर्ण है:—

"संत टामस हास्पिटल, लंदन के एक अनुसन्धान कर्ता ने यह घोषणा की है कि उसने विचारों की लहरोंको प्रत्यक्ष देखा है उन्होंने एक नवीन वस्तु की खोज की है जिसके द्वारा उन्होंने १ मिलीमीटर लम्बी ३००००००० लहरें देखी हैं उनका विश्वास है कि यह लहरें एक प्रकार से मस्तिष्क की सृष्टि हैं। और वे कहते हैं कि, जब मैं भली भाँति इन लहरों के अस्तित्व और गुण की परीक्षा कर उन्हें सिद्ध कर लूँगा तो वैज्ञानिक रीति से उनका एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना भी सुगम हो जायगा।

"इसमें सबसे अधिक विश्वसनीय बात यह है कि इन लहरों की लम्बाई उतनी ही बताई गई है जितनी सूर्य से आने वाली छोटी से छोटी किरण विचारों की लहरें कितनी अथाह और सृष्टि से उनका सम्बन्ध कितना गूढ़ है।"

"आत्माओं द्वारा चिकित्सा के परिणाम (Healing Results Through Spirit Agency) नामक एक बहुत

सुन्दर पुस्तक आर० एच० सांडर्ज द्वारा सङ्कलित की गई है जिन्होंने भिन्न २ मूर्छित माध्यमों द्वारा प्राप्त हुवे अपने अनुभूत सन्देश बयान किये हैं। उनमें प्रसिद्ध परलोक-गत डाक्टर अब्दुल-लतीफ़ भी हैं 'जिन्हें आमतौर से बग़दाद का आदमी कहा जाता है। और जो क़रीब ८०० वर्ष पूर्व हो चुके हैं। वह बड़े भारी विद्वान् और हकीम थे और चीर फाड़ भी जानते थे जबकि यह विज्ञान आरम्भिक अवस्था में था उनकी एक किताब 'अल-मुख़्तसिर' (सार पुस्तक) 'आक्स फोर्ड' के बोडलीन पुस्तकालय में रखी हुई है। उनकी परम पुस्तक पुस्तक 'मनुष्य शरीर' कई शताब्दियों तक पूर्व के विद्यालयों में पढ़ाई जाती थीं।

आध्यात्मिक चिकित्सा को विश्वास चिकित्सा के साथ नहीं मिलाना चाहिये। वास्तवमें आध्यात्मिक चिकित्सा और विश्वास-चिकित्सा में कोई सम्बन्ध नहीं, चाहे 'विश्वास चिकित्सा जीवन कितना ही महत्व की शक्ति है। ग्रंथ कर्ता ने कुछ खास व्यक्तियों के इलाज की बात और अन्य आध्यात्मिक चिकित्साओं द्वारा अच्छे होनेकी मिसालें दी हैं जो आध्यात्मिक माध्यमों द्वारा अच्छे तो हो गये। हम यहाँ उन्हें बयान करते हैं:—

(१) एक लड़के का एपेंडिसाइटिस (Appadicitis) के लिये हाली स्ट्रीट के विशेषज्ञ ने आप्रेशन किया था। आप्रेशन असफल रहा और वह लड़का जल्दी जल्दी नीचे को जा रहा था। उसका पिता ग्रंथकर्ता के चक्र के एक सदस्य के पास आया और उसके बच्चे को बचाने के लिये बार २ प्रार्थना की। उसे अपना लड़का

दिखाने के लिये कहा गया। तब माध्यम द्वारा अब्दुल लतीफ़ का आवाहन किया गया। पिता जब अगले दिन आया तो लड़के की अवस्थामें अद्भुत परिवर्तन का वर्णन बड़ी उत्तेजनापूर्वक किया जो माध्यम से मिलने के बाद उसमें हुवा था। 'अब्दुल लतीफ़' ने बीमार का जिक्र करते हुवे कहा कि आज से २ दिन पीछे ११ बजे प्रातःकाल डाक्टर ज़ख्म की सीवनों को देखेंगे जो आप्रेशनके बाद रह गई हैं और वह बहुतसी राध के साथ १ गेंद की शकल में निकल जावेगी। ठीक समय पर जो कुछ आत्माओं ने कहा था वैसा ही हुआ और लड़का अच्छा हो गया।

(२) एक व्यक्ति घातक इनीमिया से कष्ट उठा रहा था। और डाक्टर ने उससे निराशा प्रकट करदी थी। माध्यम को इसकी पूर्व सूचना मिल गई थी। और वह उच्च आत्माओं से प्रेरित हुआ उसे देखने गया। उसने देखा कि वह नाजुक अवस्था में था। उसने अपना हाथ रगड़ा और हृदय और फेफड़ों पर फेरा। उस का आश्चर्यजनक प्रभाव हुवा, उस डूबते हुए व्यक्ति में नई प्राण शक्ति का सञ्चार हुआ। वह सीधा खड़ा हो गया और खाने को मंगाने लगा। थोड़े दिनों में वह बिल्कुल अच्छा हो गया। माध्यम पर भी बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ा। १२ घंटे तक वह अत्यन्त क्षीण अवस्था में रहा। मानों उसका रक्त ही चूसा जा चुका है।

बढ़ता हुआ दिमाग़—वह एक विचित्र बच्चा था, जिसकी बीमारी कोई भी डाक्टर निदान नहीं कर सका था। वह

ख़याल किया जाता था कि यदि वह जीवित रहा तो वह बहरा, गूंगा और अन्धा होगा। अब्दुल ने जिसको कि उसका मुआमला पेश किया गया कहा 'इस बच्चे के बहता हुवा दिमाग़ है—हम ३ आपरेशन करेंगे, पहिला सोमवार को, दूसरा बुधवार को और तीसरा शनिवार को प्रतिरात्रि को रात के ६ बजे। माध्यम से प्रति दिन नियत समय पर तय्यार होने को कह दिया जाता था। तीन स्पष्ट आपरेशन (Opration) किये गये। राध निकाली गई और बच्चा अच्छा हो गया। सांसारिक डाक्टर भी यदि बीमारी का निदान कर देते तो भी उनके लिये वह आपरेशन करने असम्भव थे जो आत्मा डाक्टरों ने बच्चे पर किये।

ज़हर फैलने का इलाज—एक आदमी डाक्टर के इलाज में था डाक्टर उसकी बीमारी का निदान नहीं कर सका, और उसे सलाह दी कि तुम आध्यात्मिक चिकित्सा कराओ। जब अब्दुल प्रकट हुवा तो उसने प्रयोग में कहा "तुम्हारे नाक के पीछे तुम्हारे सारे शरीर में जहर दौड़ गया है। हम इसकी चिकित्सा कर सकते हैं "वह वास्तव में अच्छा हो गया और उसका वज़न पूरा हो गया।

दोष युक्त मसाने—(Bladders) रोगी का दो बार आप्रेशन हो चुका था। तीन डाक्टरों से मशवरा किया जा रहा था, वह ६ दिन से बेहोश था और उसके जीवन से निराशा हो चुकी थी। अब्दुल से परामर्श किया गया और वह अच्छा हो गया।

पक्षाघात—कैनाडा (Canada) की एक स्त्री ने ग्रन्थकर्ता को लिखा कि वह १० वर्ष से पक्षाघात से बीमार है। वह चिट्ठी प्रयोग में रखी गई। अब्दुल प्रकट हुवा उसने चिट्ठी पढ़ी' समुद्र एक लम्बा रेत का मैदान खयाल किया गया, अब्दुल वहाँ पहुँच गया और वह रोगिनी अच्छी हो गई।

मसाने में पथरी। रोगी तड़प रहा था। सांसारिक डाक्टरों ने कहा अपैंडीसाईटिस (Appendicitis) है। अब्दुल ने निदान किया कि मसाने में पत्थरी है। उसने माध्यम से किरण निकाली और पत्थर को तोड़ दिया। रोगी बिल्कुल अच्छा हो गया।

राज-यक्ष्मा। (Consumption) एक महिला को हार्टलीस्ट्रीट के विशेषज्ञों से परामर्श लेने के बाद सलाह दी गई कि वह घर चली जाय क्योंकि उसके अच्छा होने की कोई आशा न थी। वह राज-यक्ष्मा से पीड़ित थी। और जर्मनी और स्विटजरलैंड में भी चिकित्सा करा चुकी थी। अब्दुल ने एक प्रयोग में कहा 'बाँया फेफड़ा खराब हो चुका है, और दायें में असर पहुँच चुका है। किन्तु हम अच्छा कर देंगे। जो कुछ हम प्रतिज्ञा करते हैं उसे पूरा करते हैं। हर दूसरी रात को किरण भेजो। वह बिल्कुल अच्छी हो गई डाक्टर हैरान रह गये उन्होंने उसे असाध्य कह दिया था।

पेट में फोड़े। एक महिला के पेट में फोड़े थे उसे डाक्टरों ने ६ सप्ताह तक कृत्रिम रीति से भोजन दिया। उसका मुआमला

चक्र में रक्खा गया और अब्दुल ने उसे एक सप्ताह में इच्छा कर दिया। वह कोई भी भोजन खा, और हज़म कर सकती थी।

कैन्सर (नासूर) का ग़लत निदान। एक महिला की चिट्ठी मिली कि उसकी माता के नासूर का डाक्टर इलाज कर रहे थे उसने सहायता की प्रार्थना की। वह चिट्ठी चक्र में रक्खी गई और अब्दुल ने निदान किया कि यह नासूर नहीं है बल्कि कुछ मांस वृद्धि है जो सड़ गई है आत्मा डाक्टरों के निदान के बाद में संसारी डाक्टरों ने समर्थन किया जिन्हें अपनी भूल मालूम हुई और वह महिला अन्त में अच्छी हो गई।

नासूर—नासूर की बीमारी को आत्मा-डाक्टर अच्छा कर सकते हैं किन्तु पहिली अवस्था में ही, पर जब रोग बढ़ जाता है तो वह रोगी की पीड़ा और कष्ट को कम ही कर सकते हैं।

मिसिज़ लेनार्ड के अनुभव—मिसिज़ लेनार्ड ने अपनी "दो लोकों में मेरा जीवन" नाम की पुस्तक में अध्यात्म चिकित्सा के सम्बन्ध में अपने अनुभव बयान किये हैं, कि "मेरी रगों में पीड़ा थी। एक लम्बी छुट्टी मनाने के बाद यह बीमारी हुई थी, और इससे मुझे बड़ी बेचैनी थी। मेरे शरीर में सूजन थी, ज्वर था और पीड़ा इतनी अधिक थी कि मैं कुछ मिनट के लिये भी लेट नहीं सकती थी। मैं अपना मुँह नहीं खोल सकती थी और एक आँख सूजन के कारण बन्द हो गई थी। मैंने अपनी एक मित्र मिस 'मैक ग्रेगर' को जो आध्यात्मिक चिकित्सा के

लिये प्रसिद्ध थी, बुला भेजा। उसने पहिले मेरी चोटों का इलाज किया था जब कि एक मोटर घटना में मुझे चोट लगी थी। उसने आधे घण्टे तक पास दिये और पीड़ा बन्द हो गई। सूजन जाती रही और 'मिसिज़ लेनार्ड' चकवे की तरह प्रसन्न थी। किन्तु उसकी तकलीफ़ दूर नहीं हुई। माध्यम ने अपने मित्र से कहा, 'ग्लैडीस! मुझे यह अनुभव हो रहा है कि तुम्हारे मुख के अन्दर कुछ है जो तुम्हें कष्ट पहुँचा रहा है। तुम्हारे मसूढ़ों की जड़ों में कोई पुरानी जड़ें हैं जो तुम्हें विषासक्त कर रही हैं। उन्हें जल्दी से जल्दी निकलवादो" चूंकि उसे दांत निकलवाने का पहिला बड़ा बुरा अनुभव था। इसलिये वह और दाँत निकलवाने के लिये गम्भीरता पूर्वक तय्यार न थी। उसने अपने दो आत्मा-मित्रों के लिये प्रार्थना की जो कि जीवित अवस्था में डाक्टर थे। यह तय हुवा कि उसी के घर पर एक दाँतों का विशेषज्ञ आप्रेशन करेगा। वह अपने साथ एक डाक्टर लाया जो उसे बेहोश करेगा। एक मित्र ने नर्स का काम करना स्वीकार किया। वह गम्भीर आप्रेशन था। १६ दाँत एक ही बैठक में निकाले जाने थे और उनमें से अधिक छिपे हुवे ठूंठ थे।

आप्रैशन आरम्भ होने से पूर्व मिसिज़ लेनार्ड (वह बेहोश होने वाली तथा दिव्य द्रष्टा माध्यम थी) कहती है कि उसने २ मित्र डाक्टर आत्माओं को देखा जो परलोक सिधार चुके थे और अब उसके पास बैठे थे। वह धीरे २ बातें कर रहे थे। किन्तु उसने उन्हें स्पष्ट कहते हुवे सुना कि 'ओह यह अच्छी हो

जायगी"।

डाक्टर ने उसे क्लोराफार्म देना आरम्भ किया। किन्तु वह साधारण रोगी की अपेक्षा अधिक क्लोराफार्म लेने पर भी बेहोश नहीं हुई। डाक्टर को बड़ा आश्चर्य हुवा। वह अधिक क्लोराफार्म देने से हिचकने लगा। इस समय एक आत्मा डाक्टर ने मिसिज़ लेनार्ड में प्रवेश किया और डाक्टरों से कहने लगी कि और क्लोराफ़ार्म दो। ऐसा किया गया वास्तव में उसे उससे तिगुना दिया गया जितना कि एक साधारण रोगी को पर्याप्त होता।

दाँत का डाक्टर बिना किसी कठिनाई के छिपे हुवे दाँतों को भी निकालने लगा उस पर अदृश्य आत्माओं का प्रभाव पड़ता था और कोई आत्मा छिपे हुवे दाँतों का पता देती जाती थी। सब काम बच्चोंका सा खेल था। बहुत अद्भुत बात यह थी कि जब कि सारे घर में क्लोराफार्म की गन्ध आ रही थी उस कमरे में जिसमें आप्रेशन हो रहा था उसका निशान भी न था। निकाले गये करीब प्रत्येक दाँत पर नासूर का निशान था।

मिस "मैकग्रेगर" ने फिर पास दिये और वह दिन बिना दर्द के बीत गया किन्तु जैसे ही रात्रि आई, आप्रेशन का प्रभाव एकायक बड़ी कष्टदायक पीड़ा द्वारा अनुभव हुआ। यह गुजरती हुई घटना थी। वह केवल अच्छी ही नहीं हुई, उसकी सब पीड़ा भी जाती रही।

आत्म चिकित्सा की एक और अद्भुत घटना है। निम्न-लिखित घटना आत्मा के पथप्रदर्शन और चिकित्सा की 'जेम्स-

राबर्टसन' ने अपनी किताब "परलोक-वाद—अदृश्य जगत् का खुला मार्ग" (Spirituatism the open door to the unseen universe) में वर्णन की है।

क्राम बैल वार्ले प्रथम श्रेणी का बिजली का विशेषज्ञ था और अटलांटिक महासागर में तार बिछाने में लार्ड केल्बिन का समकालीन था। उसका मैस्मिरज़म द्वारा चिकित्सा में विश्वास था। उसकी स्त्री प्रायः बीमार रहती थी वह उस पर मैस्मिरिज़म का अभ्यास किया करता था जिससे उसका कष्ट कम हो जावे। उसकी दशा निराशाजनक होगई यहाँ तक कि डाक्टरों ने कह दिया कि वह ३ मास से अधिक जीवित नहीं रहेगी। उसकी छाती में तकलीफ़ थी। एक दिन जब उसने सोचा कि उसने उसको मैसमराइज़ कर दिया है, एक विचित्र आवाज़ उसके द्वारा बोलने लगी। उसने पूछा "तुम कौन हो" तत्काल उत्तर मिला 'हम आत्माएँ हैं, एक नहीं अनेक। हम इसको अच्छा कर सकती हैं यदि तुम जो कुछ हम कहें वह करो।

आत्माओं ने पूरे तौर से रोग की छान बीन की और पति को सावधान किया गया कि वह अपनी स्त्री से इस सम्बन्ध में एक शब्द भी न कहे, और कुछ औषधियाँ काम में लावे। उसे बताया गया कि तीन फोड़े छाती पर होंगे और पहिला १० दिन पीछे फूट जायगा, ठीक ५ बज कर ३६ मिनट पर। उसे कहा गया कि औषधियाँ ज़रूरत के समय इस्तेमाल करने को तय्यार रक्खे।

और वह ठीक ऐसा ही हुआ जैसा कि पहिले बताया गया था। वह स्त्री ५ बजकर ३६ मिनिट पर पीड़ा से चिल्लाने लगी। पति फ़ौरन खड़ा हो गया। उसने दवाई लगाई और उसकी पीड़ा शांत होगई। दूसरा दौरा जिसके लिये ३ सप्ताह की सूचना दी गई थी, फिर हुवा और तीसरा १५ दिन के बाद। तीसरे दौरे के समय ऐसा हुआ कि उसकी स्त्री, जो आत्माओं के सन्देश से बिल्कुल अनभिज्ञ थी अपने मुँह से 'पीटर बोरो जाने और चन्द्र ग्रहण को देखने की इच्छा प्रकट करने लगी।' पति बहुत चक्कर में पड़ा क्योंकि बतलाये हुवे समय के अनुसार वह उस समय रेल में होगी। आत्माओं ने कहा कि वह अपनी स्त्री को निराश न करे। क्योंकि यदि वह औषधियाँ साथ ले जायगा और जब दौरा हो तब उन्हें लगा देगा तो यात्रा सुख पूर्वक हो जायगी।

और ऐसा ही हुवा कि वह दौरा आने से पूर्व आध घण्टे के लिये बीमार हुई। और जब वह कष्ट से चिल्ला रही थी तो दवाई लगाई गई। वह बिल्कुल अच्छी ही नहीं हो गई बल्कि इसके बाद उसके बच्चे भी हुवे।

सर डब्ल्यू ई कूपर के अनुभव। सर डब्ल्यू० ई० कूपर जिसने "जहां दो संसार मिलते हैं" (Where two worlds meet)' नाम की पुस्तक लिखी है। वह अपनी किताब में आत्मा चिकित्सकों के बारे में मिसिज लेनार्ड की तरह अपने अनुभव लिखता है। वह मन्दाग्नि का रोगी था। भोजन में बहुत साव-

धानी और परहेज़ रखते हुवे भी उसे बदहज़मी की शिकायत रहती थी। जो बहुत दुखदायी और कष्टप्रद होगई। एक बैठक में जिसमें वह मौजूद था, निम्नलिखित आत्मा का सन्देश एक आत्मा से प्रश्न करने पर उत्तर में मिला जो रोग और उसकी चिकित्सा के बारे में था। "तुम्हारी संग्रहणीय शक्ति बहुत है, इसी कारण से तुम्हारी शारीरिक शक्ति और बल मन्दाग्नि के होते हुवे भी बना हुवा है। तुम जितना पचा सकते हो उससे अधिक खाते हो। अनन्नास की गिरि खाओ, वह तुम्हारे लिये अच्छी खूराक है और उसे पचाओ। किन्तु कुछ समय तक थोड़ा खाओ और कुछ न खाओ।" ग्रंथकार लिखता है कि ऐसे रोगी को जो बहुत समय से बहुत बुरी तरह से बदहज़मी के रोग में पीड़ित है। गिरि के सिवाय कुछ भी खाने को न बताना, जबकि बहुत सावधानी से पसंद की हुई हल्की खुराक से भी पेट में गड़बड़ हो जाती हो, खाने के सम्बन्ध में ऐसी भारी अव्यवस्था करना है जिसे कोई भी डाक्टर स्वप्न में नहीं ला सकता किन्तु अनन्नास की गिरियों से वह अच्छा हो गया यद्यपि सांसारिक डाक्टरों की राय थी कि इनका विपरीत प्रभाव होगा।

ग्रन्थकर्ता ने और भी अनेक उदाहरण ऐसे व्यक्तियों के दिये हैं जो आत्माओं के नुस्खों का अनुकरण करके अच्छे हो गये। इन्हें अकस्मात् घटनाएँ नहीं समझना चाहिये। आत्माएं उन नियमों का इस्तेमाल जानती हैं जो हमारे लिये अदृश्य हैं और हमारी बुद्धि से बाहर हैं। डाक्टरों को यह मान लेना चाहिये कि

ऐसी शक्तियाँ भी हैं जो स्थूल पदार्थ आत्मा के लोकों में ओत प्रोत हैं। ऐसी अनेक रीतियों से वह मनुष्य के काम में आने की शक्ति के अन्तर्गत है कि यदि वह हाथ फैलाये तो वह उस वस्तु को हस्तगत कर लेता है जो पारलौकिक कार्यकर्ताओं द्वारा उसे पेश की जाती है, सैंकड़ों हज़ारों असाध्य रोगों की नित्य भिन्न २ आध्यात्मिक चिकित्सा केन्द्रों में चिकित्सा की जाती है जो कि प्रभु का कार्य है और जिसे वह केन्द्र बिना किसी प्रदर्शन के दुखी मनुष्य जाति के सेवा भाव से पूर्ण करते रहते हैं।

लंदन की सैकंच्यूरी, क्राईस्ट चर्च रोड ईस्टशीन में डाक्टर डब्ल्यू० टी० पेरिश नाम के एक बहुत बड़े चिकित्सक रहते हैं❀ जिनके पास वर्ष भर में १५००० पत्र पहुँचते हैं वह अद्भुत व्यक्ति ईसामसीह की तरह नम्रतापूर्वक जीवन शक्तियों को जो परलोक से उसे प्राप्त होती हैं, दुखी व्यक्तियों तक पहुँचाता है और उन्हें चमकीले स्वास्थ्य की नई मियाद देता है।

ईसामसीह और सैंटपीटर की बाबत कहा जाता है कि वह बीमारों की चिकित्सा करते थे। इसामसीह कोढ़ियों को छूता था और कहता था कि "मैं चाहता हूँ कि तुम पवित्र हो जावो" और कोढ़ी अच्छे हो जाते थे। यह कोई अचम्भा नहीं था। क्यों कि ईसामसीह माध्यम था। और जो कुछ वह करता था प्रत्येक मनुष्य कर सकता है यदि उसकी गुप्त शक्तियाँ जागृत हो जावें जैसी कि ईसामसीह की थीं। "जो काम मैं करता हूँ, तुम भी कर

❀ खेद है कि अब वह परलोक सिधार चुके हैं 'अनुवादक'

सकोगे। और इनसे भी बड़े काम कर सकोगे क्यों कि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ जो कि स्वर्ग में है"। कितना ऊँचा और सच्चा जीवन का विचार है! जिसे ईसाई धर्म के प्रवर्तक ने प्रकट किया है। और कितने नम्र भाव में। आह! वास्तव में यदि जीवन के वृक्ष को परलोक-वाद की जीवन शक्तियों से सींचा जाय तो वह फले फूलेगा ही नहीं बल्कि उस फ़जूल घास पात को भी उखाड़ फैंकेगा जो उसकी उपयोगिता को नष्ट करता है। उच्च आत्माओं का प्रार्थना द्वारा सहयोग लाखों मनुष्यों तक पहुँचाने का मार्ग है।

और जब हमने सुना तो अदृश्य जगत् से विचित्र गूँजें आईं, मानों वह कह रही थीं कि 'देखो! तुम्हारे पास फ़रिश्तों को भेजा जा रहा है जिनके छूने मात्र से तुम्हारी निर्बलताएँ दूर हो जावेंगी और तुम स्वच्छ हो जाओगे।

उच्च कोटि का परलोक-वाद

दार्शनिक कान्ट (Kant) ने कहा था कि "समय आयेगा जब यह प्रमाणित हो जायगा कि इस पृथ्वी पर रहते हुवे भी मनुष्य-आत्मा आत्माओं के संसार से अति निकट अकाट्य-सम्बन्ध रखती है"।

हमने पहिले के अध्यायों में यह दिखाया है और अनेक प्रकार से आत्मा के अस्तित्त्व का प्रमाण दिया है। जो प्रमाण एकत्र किये गये हैं चाहे वह आत्माओं के फ़ोटो हैं, चाहे आध्या-

त्मिक चिकित्सा के हैं, चाहे दिव्यदृष्टि के हैं, चाहे दिव्यशब्द-श्रवण के हैं और चाहे स्वयं लेखन के हैं, या प्लेन्चेट द्वारा संदेश हैं, सब ही प्रमाणित करते हैं कि आत्माएँ प्रकृति का एक वास्तविक अङ्ग हैं। हमने परलोक-वाद के विरुद्ध पादरियों के विरोध का भी ज़िक्र किया है और उस भयङ्कर युद्ध का जो वैज्ञानिकों द्वारा इस नये खतरे को दबाने को उठाया गया है कि प्रकृति में 'मादा' ही सर्वोपरि शक्ति है। पादरी 'स्टेन्टन मोजिज़' माध्यम होने से पूर्व कट्टर पादरी था। उसका अञ्जील के लिये प्रेम और ईसामसीह की शिक्षाओं में उसकी अगाध श्रद्धा (जैसा कि पवित्र अञ्जील में लिखा है) बहुत अगाध थी। उसे स्वयं लेखन द्वारा जो संदेश प्राप्त हुवे वह बहुत उच्च कोटि के और दैवी शक्तियों द्वारा प्रेषित थे। वह पवित्र थे किन्तु ईसाई धर्म के नहीं थे क्यों कि वह ईसाई धर्म की कुछ शिक्षाओं का खण्डन करते थे जिनमें वह पैदा हुआ और पला था। "मुर्दे नहीं जागते" वह कब्र में पड़े रहेंगे जब तक उन्हें बुलाया न जाय"। "हम उसे परमात्मा के हाथ में छोड़ते हैं क़यामत के दिन तक के लिये जब कि आत्मा और शरीर फिर मिलेंगे"। ईसाई सिद्धान्त न्याय के दिन का प्रचार करता है, और उस समय तक आत्माएँ कब्र में सोती रहेंगी, शायद शताब्दियों तक। अञ्जील प्रचार करती है कि ईसा-मसीह ही एक मुक्तिदाता हैं और उसी के द्वारा मनुष्य अपने पाप के दण्ड से बच सकता है। "ईसामसीह के द्वारा ही मनुष्य शाश्वत जीवन पा सकता है"। "जो मुझ में विश्वास करता है वह

कभी नहीं मरेगा।" "किन्तु उसके यह अन्ध विश्वास अन्त में दूर हो गये। उसने वास्तविक प्रकाश देखा और स्वीकार किया कि ईसाई धर्म एक छोटा सम्प्रदाय हो सकता है जो कुछ समय रह कर बन्द हो जाता है। हम नहीं कहते कि धर्म एक बड़ी शक्ति नहीं है। भूत काल में पादरियों की नृशंसता, जंगलीपन के किये जाने के बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि यह लाखों मनुष्यों के आराम का कारण हुवा है। इस के झण्डे के पीछे जनता चल रही है और आने वाले अगणित वर्षों में लोग इसके पीछे चलेंगे किन्तु पुराने सिद्धान्त बदलने होंगे। हमें भूत काल को भुला देना चाहिये और अपने धर्म को परलोक-वाद के नये प्रकाश में ढालना चाहिये। चाहे वह धर्म ईसाई धर्म है, जोरास्टर का धर्म है, वह हिन्दू धर्म है या इस्लाम धर्म है। जैसा कि एक लेखक ने बहुत सुन्दर कहा है? केवल (Residun) ही मकान के पुराने मसाले की तरह मुफ़ीद हो सकता है।

उच्च आत्माओं से मेरे सम्भाषणों में उन्होंने बराबर यही सन्देश दिया कि "परलोक वाद सब से ऊँची सच्चाई है" यदि मैं हृदय को खुला रक्खूँ तो आत्माओं के सन्देश नवीन भविष्य के बनाने के लिये साधन होंगे। हमारे पुराने देवताओं को बिदा होना होगा। धर्मों के सिद्धान्तों की पूजा होगी उनके रीति रिवाजों की नहीं, हमें एक ऐसा धर्म चाहिये जो हृदय की भूख को दूर करे। जो पुरानी परम्पराओं से मुक्त हो और मनुष्यों के सदा विकसित होने वाले विचारों से मेल खावें। हमें ऐसा धर्म चाहिये

जो युक्ति और प्रकृति से मेल खावे। जीवन का अन्त नहीं। प्रत्येक धर्म परमात्मा की सर्व व्यापकता की शिक्षा देता है—वह यहाँ, वहाँ सर्वत्र है। वह प्रकृति में है, वह हमारे अन्दर है। मनुष्य को अपने स्वर्गीय पिता ईश्वर के रूप के अनुसार बनाया गया है, वह शाश्वत है। अपने स्वर्गीय पिता के महल तक पहुँचने के लिये उसे क्रम विकास की सीढ़ी पर चढ़ना होगा।

वह पैदा नहीं हुवा, न वह मरता है, न वह कभी हुवा, न कभी नाश होता है। अजन्मा, शाश्वत और प्राचीन है वह शरीर के क़त्ल किये जाने पर क़त्ल भी नहीं होता (भ० गीता अ० २ श्लो० २०) अनेक धर्म एक वृक्ष की अनेक शाखाएँ हैं, वह पहाड़ पर चढ़ने की अनेक पगडंडियाँ हैं जो परमात्मा रूप एक ही चोटी तक पहुँचती हैं।

थीयासोफी (Theasophy) ने भिन्न २ धर्मों का तुलनात्मक अनुशीलन कर और उनकी आवश्यक शिक्षाओंमें समानता दिखला कर मनुष्य जाति की बड़ी सेवा की है। प्रथम सिद्धान्त, परम दयालु, सर्वज्ञ, न्यायकारी, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक जगत् के कर्ता में विश्वास है जो सारी सृष्टि से बड़ा है। दूसरा सिद्धान्त पहिले से सम्बन्ध रखता है। एक ही जीवन शक्ति है, एक ही चेतनता है, यदि हम सृष्टि में ईश्वर की सर्व व्यापकता की सत्यता को स्वीकार करते हैं। इसका अर्थ है कि सृष्टि एक है। इसका आशय है कि हमें मनुष्यजाति का भ्रातृभाव स्वीकार करना होगा—प्रत्युत सब लोकों में भ्रातृभाव।

अब परलोक-वाद का वास्तविक मूल्य और महत्व आता है। इसका कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई सङ्गठन नहीं, यह किन्हीं मतों और सिद्धान्तों पर टिका हुआ नहीं है। इसका एक ही सर्वव्यापक क़ानून है कि परमात्मा, मनुष्य, आत्माएँ और फ़रिश्ते सब मिला कर एक समष्टी है। इसकी शिक्षा के अनुसार सब धर्मों के सिद्धान्त एक हैं मनुष्य की वास्तविक उन्नति को रोकने वाली रुकावटें फ़जूल हैं।

हमें समस्त जगत् की चेतनता को स्वीकार करना चाहिये। प्रभु के मार्ग इतने हैं जितने कि मनुष्यों के श्वास। और उसकी महान् बुद्धि, और उद्देश्यों को समझने के लिये मृत्यु के पर्दे को उठाना उचित है। आज कल का धर्म हमें प्रभु के रहस्यों को जानने से निषेध करता है। मैंने ईसाई पादरियों के कई व्याख्यान सुने हैं। और मैंने यह बात नोट की है कि वह कितने जोश से उन सच्चाइयों का प्रतिपादन करते हैं जिनकी शिक्षा अञ्जील में दी गई है। उनकी राय में अञ्जील ही एक सच्चाई की पुस्तक है। क्या वास्तव में ऐसा है? यह बात सर्वथा ऐसी नहीं है। यह मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है कि वह गुप्त विद्या की प्रयोगशाला में कार्य करे और सच्चाइयों का पता लगावे, और मनुष्य की उन्नति के नियमों का पता लगावे। मनुष्य की जिज्ञासा बुद्धि को दबाना ठीक नहीं है। हमें यह जानना चाहिये कि हम स्वर्ग के निवासी हैं। हम परमात्मा के ऊपर के प्रदेश में जन्म लेते हैं वह हमारी जन्म भूमि है। इस संसार में हमारा जन्म केवल

अनुभव प्राप्त करने के लिये है कि इस पार्थिव शरीर द्वारा यहाँ के सुखों और दुखों का अनुभव प्राप्त करें।

जन्म और पुनर्जन्म का चक्र उचित ही है—

मनुष्य शरीर में दो गुप्त अङ्ग हैं जिनको उन्नत करने पर उन के द्वारा हम परमात्मा के जगत् की वास्तविकताओं के संसार में आ सकते हैं। (Pineal Gland) तीसरा नेत्र है जिसके द्वारा विचार एक दिमाग़ से दूसरे दिमाग़ तक पहुँचाया जाता है। विचार प्रेषण के चमत्कारों की अनेक घटनाएँ मौजूद हैं।

सूक्ष्म शरीर (Pituitorry Body) की उन्नति ध्यान और प्रार्थना करके दैवी तथा मानसिक जगत् के साथ सम्पर्क स्थापित करना सम्भव है।

जैसे तीन शरीर भौतिक, दैविक, और मानसिक हैं ऐसे ही तीन लोक हैं। भौतिक शरीर में मनुष्य केवल स्थूल जगत् को देख सकता है। किन्तु तीनों लोक एक दूसरे से इतने मिले हुवे हैं कि अपनी अन्तरीय शक्तियों का विकास कर मनुष्य दैविक, और स्वर्गीय लोकों में प्रवेश कर सकता है। जब हम सो जाते हैं तो आत्मा ऊपर के लोकों में भ्रमण करती है। किन्तु जागने पर उन दृश्यों का ज्ञान नहीं रहता। हम नहीं जानते कि निद्रित अवस्था में क्या हुआ यद्यपि आत्मा घूमने में व्यग्र थी। दैविक और मानसिक जगत् का ज्ञान हमारी आन्तरिक शक्तियों की उन्नति द्वारा हमारी पहुँच के अन्दर आ सकता है। पैग़म्बर और ऋषि ऊँचे दर्जे के माध्यम थे।

जीवन का मुख्य उद्देश्य तीनों शरीरों की उन्नति कर स्थिति पर काबू पाना है। इस उन्नति की कुञ्जी अत्यन्त प्रगति शीलता, पवित्रता, निस्स्वार्थ, कर्तव्यपरायणता, प्रार्थना और ध्यान में है। जैसे हम ऊँचे ऊँचे चढ़ते जाते हैं मोटा पदार्थ नीचे गिरता जाता है। हम बारीक प्रकम्पों के साथ सम्पर्क में आते जाते हैं। वासनाएँ समाप्त होती जाती हैं। काम शरीर कामनाओं की पूर्ति न होने से मर जाता है। अन्तर दृष्टि और अन्तर्श्रवण की शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं। और प्रभु की विशाल सुन्दरता हमारी आत्मा में प्रवेश कर जाती है, और वह उसे आनन्द और आश्चर्य के सब से ऊँचे प्रदेश में स्थापित कर देती है। प्रकृति के अज्ञात और ना मालूम नियम मालूम करने के लिये और मनुष्य की गुप्त शक्तियों को जाग्रत करने के लिये, तथा मनुष्य की क्रम संसार में उच्च स्थिति और परमात्मा के साथ मनुष्य का सम्बन्ध, विकास के जीवन में जानना बहुत विचारणीय विषय है।

मिसिज़ बेसन्ट ने थीयासोफी पर अपने एक व्याख्यान में कैसा सुन्दर वर्णन किया है।

"पत्थर की मूर्ति बनाने वाले से पूछो कि वह क्या कर रहा है जब कि वह बिना कहे संगमरमर के अन्दर बनाई जाने वाली मूर्ति को देख रहा है, उसका काम फ़ालतू संगमरमर को काटकर फेंक देना है जो मनुष्यों की आँखों से उस सुन्दर मूर्ति को छिपाये हुवे है।

मित्रो! उस प्रभु का तुम्हारे अन्दर यही काम है कि वह अनादि

कारीगर जो सुन्दरता है तुम्हारे शरीर रूपी मूर्ति के अन्दर महात्माओं की अपेक्षा कम दृष्टि वाले मनुष्यों की दृष्टि से परे उन्नति करता रहता है।

आपकी अन्तरात्मा ही शिल्पकार है जो अन्दर विराजमान भगवान् शुद्ध मूर्ति से खुरदरे पत्थर को काटकर फेंक देता है।

प्रयोग शालाओं का परलोक-वाद अत्यन्त निम्न दर्जे का है। मनुष्य की आन्तरिक इच्छा है कि वह सब पार्थिव विचारों से ऊपर उठ जाय और महान् आत्मा के साथ मिल जाय। उच्च परलोक-वाद का यही दावा है। माया की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उसके साथ भी निबटना है। मेहर बाबा ने एक लेख "युद्ध का पारलौकिक महत्व" में बड़ी सुन्दरता से बयान किया है कि उसे समझे और उससे बचे। उन्नति का मार्ग न समाप्त होने वाला मार्ग है। संसार मन रूप है और सृष्टि मन का विस्तार है। जब हम यह जान लेते हैं कि "आत्मा तेजी से बढ़ती है। शरीर को लाभ नहीं होता" तभी मन और चरित्र के उन्नत बनाने में हम लगते हैं। जीवन का यही एक मात्र उद्देश्य है यह बहुत सत्य कहा गया है कि "दो मनुष्य कारागार के सीखचों में से देख रहे थे—एक ने मिट्टी देखी और दूसरे ने सितारे।

मृत्यु के पश्चात् एक शानदार प्रदेश हमारे लिये तय्यार है मृत्यु के साथ सांसारिक ग़रीबी और अमीरी समाप्त हो जाती है। केवल मनुष्य के चरित्र का ही मूल्य है। आओ प्रभु से प्रार्थना करें।

प्रार्थना

हमारे स्वर्गीय पिता! हम तुम्हारे चरणों में प्रार्थना करते हैं आप दयालु, ज्ञान स्वरूप और सर्वशक्तिमान् हैं। आपने इस पृथ्वी को, तारों और लोकों को बनाया। समूचा विश्व आप का एक लबादा है। आकाश और सूर्य आप के अनादित्व के प्रत्यक्ष चिन्ह हैं। आप थे, आप हैं, और सदैव रहेंगे। ओ अदृश्य पिता, सर्व शक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ। हमें पाप, दुख पीड़ा और कष्ट के बन्धनों से बचाओ। हमें मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायता दो। विकास की सीढ़ियाँ बेशुमार और जीवन का मार्ग दुख और दुर्भाग्य के तीरों से चाहे अटा हुवा हो, आप हमारे सहायक हों, हमारा पथ प्रदर्शन करो, हमें शक्ति दो, हे परम पिता! कि हम कर्तव्य और सच्चाई के मार्ग को विनय पूर्वक और सत्यतापूर्वक तय करने का नित्य इरादा करें।

हम अपने हृदय का दैवी प्रेमरूपी अमृत सब मनुष्यों, पक्षियों और पशुओं पर बरसा सकें।

सर्वशक्तिमान् पिता! आप चिड़िया के गिरने को भी देखते हो और कीड़े को भी ऊपर उठाते हो। हमारे पापों को क्षमा करो हमें हमारा नित्य का भोजन दो। हमारे मन और आत्मा को शुद्ध कर हमें स्वर्गीय ऊँचाई पर पहुँचावो। हम अपनी आत्माओं की खिड़कियों को खोलें और उस तेज से जो आप के स्वर्गीय सिंहासन से आ रहा है, आलोकित करें। हम भले काम करें!

हजारों गुणा भले कार्य और इस प्रकार प्रकृति को विकास में उच्च आसन के लिये पवित्र और योग्य बनावें।

हम जानते हैं कि यह सांसारिक यात्रा दृष्टि से परे लोकों में निवास की तय्यारी मात्र है। जैसा हम बोयेंगे वैसा काटेंगे। यह आप का अकाट्य नियम है, हम आपका अस्तित्व गुलाब की हर पत्ती में, वायु के झोंके में, तारे की चमक में अनुभव करते हैं।

प्रकृति में आपकी सर्वव्यापकता में कौन सन्देह कर सकता है, हम आपकी आवाज़ अपने हृदय, मन और आत्मा में सुनते हैं। हे प्रभु! हमें संसार भरके पुरुष स्त्रियों को अपने भाई वहिनों की तरह प्यार करना और पृथ्वी के सब प्राणियों को प्रेम करना सिखाओ। हम अपने चारों ओर उत्तम विचार, उत्तम शब्द, उत्तम कर्मों का घेरा बनालें। इन पवित्र शस्त्रों से हम घृणा, ईर्षा, क्रोध और भय को जो सब शैतान की सन्तान हैं जीत सकते हैं।

हे परम पिता! हमें आत्मिक बल दो कि आपके चरणों की दिन रात, अन्धेरे में और उजाले में, धूप में और वर्षा में पूजा करें। प्रभु! आप हमारे मनों को अपनी ईश्वरीय दृष्टि से भर दो और हमारे हृदयोंमें अपनी दया और प्रेम की नदी बहा दो।

परलोक-विद्या का एक मात्र हिन्दी मासिक

"परलोक"

गत १४ वर्ष से प्रति मास निकल रहा है । परलोक-वाद के प्रेमियों को इसका ग्राहक तथा सहायक बनकर अपनाना चाहिये । "परलोक" ने सैंकड़ों भाई बहिनों को दुख और निराशा के गढ़े से निकाल कर आशा और धैर्य का मार्ग दिखाया है । परलोक-वाद अब वैज्ञानिक सत्य है जिसकी जांच योरुप और अमेरिका के बड़े बड़े वैज्ञानिक कर चुके हैं । भारतवर्ष में अभी ऐसे लोगों की कमी है जो अपने अनुभवों को सर्वसाधारण के सामने रख सकें । 'परलोक' द्वारा अनेक सज्जनों ने अपने २ अनुभव जनता के सामने रखे हैं । सर्व साधारण में प्रचार के उद्देश्य से 'परलोक' का वार्षिक मूल्य २॥) रखा गया है । नमूने की प्रति का मूल्य ।) मात्र है । सब प्रकार का पत्रालाप और मनीआर्डर आदि नीचे लिखे पते पर भेजना चाहिये ।

(१) केदारनाथ शर्मा

सम्पादक 'परलोक'

६३, निरञ्जनी अखाड़ा, हरद्वार ।

अथवा

(२) मैनेजर 'परलोक' भिवानी (जि० हिसार)